॥ श्रीः ॥

भारतभ्रमण.

(पाँचों खण्डोंमेंसे)

पञ्चम खण्ड ।

बाबू साधुचरणप्रसाद विरचित ।

जिसमें

श्रीकेदारनाथ और बद्रीनाथजीकी यात्रा, मार्गके तीर्थ ग्राम शहर आदिका विस्तृत वर्णन है.

वही

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बम्बई

खेतवाड़ी ७ वीं गली खम्बाटा लैन,

निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् मुद्रणयन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९६९, शक १८३४.

भारत-भ्रमणके पञ्चम खण्डका सूचीपत्र।

इति भारत-भ्रमण पञ्चम खण्ड सूचीपत्र।

॥ श्रीः ॥

॥ ऋद्धिसिद्धीश्वराय नमः ॥

भारतभ्रमण.

पञ्चम खण्ड.

पहला अध्याय।

हृषीकेश, गंगोत्तरी और मानसरोवर।

हृषीकेश।

सोरठा—शम्भु चरन सिर नाय, साधुचरन परसाद अब।
पंचम खण्ड सुहाय, बरनत है भारत भ्रमण ॥

मेरी पंचम यात्रा सन् १८९६ ई० (संवत् १९५३) के अप्रैल (वैशाख) में मेरी जन्मभूमि " चरजपुरा" से आरम्भ हुई।

चरजपुरासे १२ मील दक्षिण गङ्गाके उस पार शाहाबाद जिलेके बिहियामें ईष्टइण्डियन रेलवेका स्टेशन है। मैं वहाँ रेल गाड़ीमें बैठ केदारनाथ और बदरीनाथके दर्शनके अर्थ चला और बनारस तथा बरेली होते हुए हरिद्वार पहुँचा। बिहियासे पश्चिमोत्तर २९ मील बक्सर, ८७ मील मुगलसराय जंक्शन, ९४ मील बनारस, १३३ मील जौनपुर, २१३ मील अयोध्या, २१७ मील फैजाबाद, २९६ मील लखनऊ, ४४२ मील बरेली जंक्शन, ४८६ मील चन्दौसी जंक्शन, ४९८ मील मुरादाबाद, ५८५ मील लक्सर जंक्शन और ६०१ मीलपर हरिद्वारका रेलवे स्टेशन है।

रेलवे—हरिद्वारके निकटके लक्सर जंक्शनसे अवध रुहेलखण्ड रेलवेकी लाइन ३ ओर गई है। इसके तीसरे दर्जेका महसूल प्रति मील $2\frac{1}{2}$ पाई है।

(१) लक्सरसे पूर्व-दक्षिण—
मील, प्रसिद्ध स्टेशन।
२५ नजीबाबाद।
३९ नगीना।
४९ धामपुर।
८७ मुरादाबाद।
९९ चन्दौसी जंक्शन।
१४३ बरेली जंक्शन।
१८७ शाहजहाँपुर।
२२५ हरदोई।
२५८ संडीला।
२८९ लखनऊ जंक्शन।
३०६ बाराबंकी जंक्शन।
३६८ फैजाबाद जंक्शन।
३७२ अयोध्या।
४५२ जौनपुर।
४८८ बनारस छावनी।
४९१ बनारस राजघाट।
४९८ मुगलसराय जंक्शन।

चंदौसी जंक्शनसे दक्षिण-पश्चिम ३१ मील राजघाट और ६१ मील अलीगढ़ जंक्शन।

बरेली जंक्शनसे उत्तर १२ मील भोजपुरा जंक्शन, ६२ मील हलद्वानी और ६६ मील काठ गोदाम।

लखनऊ जंक्शनसे दक्षिण-पूर्व ४९ मील रायबरेली, उत्तर कुछ पश्चिम रुहेलखण्ड, कमाऊँ रेलवेपरसे ५५ मील सीतापुर, ८० मील खेरी, १६३ मील पीलीभीत, १८७ मील भोजपुरा जंक्शन और २४१ मील काठगोदाम और लखनऊसे दक्षिण-पश्चिम ३४ मील उन्नाव और ४६ मील कानपुर जंक्शन।

बाराबंकी जंक्शनसे २१ मील पूर्वोत्तर बहरामघाट। फैजाबाद जंक्शनसे ६ मील पूर्वोत्तर अयोध्याका रामघाट स्टेशन।

(२) लक्सरसे पश्चिमोत्तर—
मील, प्रसिद्ध स्टेशन।
७ लंधौरा।
१२ रुड़की।
२३ सहारनपुर अवध रुहेलखण्ड और नार्थ वेस्टर्न रेलवेका जंक्शन।
८३ अम्बाला जंक्शन।
८८ अम्बाला शहर।
१०० राजपुर जंक्शन।
१५४ लुधियाना।
१६२ फिल्लौर।
१८६ जलन्धर छावनी।
१८९ जलंधर शहर।
२१२ व्यास।
२३८ अमृतसर जंक्शन।
२७० लाहौर जंक्शन।
३१२ गुजरावाला।
३३२ वजीराबाद जंक्शन।
३४० गुजरात।
३४५ लालामूसा जंक्शन
३७३ झेलम।
४४८ रावलपिण्डी।
४५७ गुलरा जंक्शन।
५२६ नवशहरा।
५५० पेशावर शहर।
५५३ पेशावर छावनी।

सहारनपुर जंक्शनसे दक्षिण १६ मील मुजफ्फर नगर, ६८ मील मेरठ छावनी,

७१ मील मेरठ शहर और ९९ मील गाजियाबाद जंक्शन।

अम्बाला जंक्शनसे दक्षिण कुछ पूर्व २६ मील थानेसर, ४७ मील कर्नाल, ६८ मील पानीपत और १२३ मील दिल्ली जंक्शन और ३९ मील पूर्वोत्तर कालका।

राजपुर जंक्शनसे पश्चिम थोड़ा दक्षिण १६ मील पटियाला; ३३ मील नामा; ६८ मील बर्नाला और १०८ मील भतिण्डा जंक्शन।

अमृतसर जंक्शनसे पूर्वोत्तर २४ मील बटाला, ४४ मील गुरदासपुर, ५१ मील दीनानगर और ६६ मील पठानकोट।

लाहौर जंक्शनसे दक्षिण-पश्चिम ३४ मील रायवन्द जंक्शन, ३०७ मील मुलतान शहर, ३२० मील शेरशाह जंक्शन, ३७३ मील महाबलपुर, ५५० मील रूक जंक्शन, ३११ मील हैदराबाद और ८१९ मील करांची शहर।

वजीराबाद जंक्शनसे पूर्वोत्तर २६ मील स्यालकोट और ५१ मील जम्बूके पास तावी।

लालामूसा जंक्शनसे पश्चिम कुछ दक्षिण ५२ मील मलिकवाल जंक्शन, ६४ मील पिण्डदादनखाँ और १६४ मील कुण्डियान जंक्शन।

गुलरा जंक्शनसे ७० मील पश्चिम खुशालगढ़।

(३) लक्सर जंक्शनसे पूर्वोत्तर—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन।

१४ ज्वालापुर।

१६ हरिद्वार।

हरिद्वार—पश्चिमोत्तर देशके सहारनपुर जिलेमें शिवालिक पहाड़के सिलसिलेके दक्षिणकी नेवके पास (२९ अंश, ५७ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ७८ अंश, १२ कला, ५२ विकला पूर्व देशान्तरमें) गङ्गाके दहिने किनारेपर हरिद्वार तीर्थ है। इसका वृत्तांत भारतभ्रमणके दूसरे खण्डके आठवें अध्यायमें देखो।

मैं रेलवे स्टेशनसे ¾ मील दूर हरिद्वारमें जाकर सूर्यमलकी धर्मशालामें टिका। मेरा बदरीनाथका पण्डा, जिसका गृह देवप्रयागमें था, वह हरिद्वारहीमें मिल गया। मैंने कई दिनोंतक हरिद्वारमें स्नान और देवदर्शन करके हृषीकेशका राह लिया।

गढ़वाल जिला—केदारनाथ और बदरीनाथके मन्दिर हिमालय पर्वतपर पश्चिमोत्तर देशके कमाऊँ विभागके गढ़वाल जिलेमें हैं, इस लिये गढ़वाल जिलेका विवरण पहलेसे जान लेना आवश्यक है। कमाऊँ विभागके पश्चिमोत्तरमें गढ़वाल जिला है, जिसका क्षेत्रफल प्रायः ५५०० वर्गमील है, इसके उत्तर तिब्बत देश, पूर्व कमाऊँ जिला, दक्षिण बिजनौर जिला और पश्चिम टिहरीका राज्य और देहरादून जिला है। इस जिलेका सदर स्थान श्रीनगरसे ८ मील दूर पौड़ी है, किन्तु श्रीनगर तो जिलेका प्रधान कसबा है। गढ़वाल जिलेमें हिमालयके बहुतेरे शृङ्ग हैं। इनके बीचमें कई एक घाटियां, जो एक शृङ्गसे दूसरेको पृथक करती हैं, देखनेमें आती हैं

इनमेंसे श्रीनगरका सिलसिला जो सबसे चौड़ा और समुद्रके जलसे १८३० फीट ऊपर है, लगभग ¾ मील चौड़ा है। इस जिलेमें पहाड़ियोंकी दक्षिणी नेवसे रुहेल खण्डकी नीची भूमिके बीच लगभग दो या तीन मील चौड़ी केवल इतनीही समतल भूमि है। जिलेके भीतरकी प्रधान चोटियोंकी उँचाई यह हैं;—२५६६१ फीट नन्दादेवी, १५४१३ कामेंट, २३३८२ फीट त्रिशूल; २३१८१ फीट दूनागिरि, २२९०१ फीट बदरीनाथ और २२८५३ फीट केदारनाथ है। सरस्वती और धवलीकी घाटियोंसे चीनके राज्यमें जानेकी राह है। सरस्वतीकी घाटीको नानापास और धवली घाटीको नीतिपास कहते हैं। अलकनन्दा नदी, जो गङ्गाकी प्रधान सहायक नदियोंमेंसे एक है, नीची घाटियोंमें बहती है। सम्पूर्ण जिलेका पानी झरने और नदियोंके द्वारा उसीमें गिरता है। अलकनन्दा और दूसरी नदियोंके सङ्गमके पवित्र स्थानोंमें देवप्रयाग, रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग, नन्दप्रयाग और विष्णुप्रयाग ये पांच मुख्य हैं। देवप्रयागके समीप अलकनन्दा गङ्गाजीमें मिल गई है। केवल रामगङ्गा नदी, जो लोहबाके समीप निकली है, गढ़वाल जिलेमें गङ्गासे नहीं मिली है। वह कमाऊँ जिले और रुहेल-खण्डके मैदानमें बहनेके पश्चात् फर्रुखाबाद जिलेमें गङ्गासे मिलती है। गढ़वाल जिलेकी सम्पूर्ण नदियोंमें तेज धारा होनेके कारण नाव नहीं चल सकती है। जिलेमें प्रतिवर्ष जङ्गली भूमिमें खेती बढ़ती जाती है।

इस जिलेमें सन् १८९१ की जन-संख्याके समय ४०६६३५ जन थे; अर्थात् १९९७४३ पुरुष और २०६८९२ स्त्री और सन् १८८१ में ३४५६२९ जन थे; अर्थात् ३४३१८६ हिन्दू, २०७७ मुसलमान, २४२ कृस्तान, ६९ जैन और ५५ बौद्ध थे। जाति-योंके खानेमें २०४'११९ राजपूत, ७७९६० ब्राह्मण, ५२०६० डोम, ३६५७ बनिया और २६१० गोसाईं थे। बर्फदार सिलसिलेके भीतर एक दूसरे प्रकारकी जातिके मुड़िया, जिनकी संख्या कम है बसते हैं। इनका स्वभाव बड़ा मैला है। गढ़वालके निवासियोंमें एकसे अधिक विवाह करनेकी चाल है। प्रत्येक मनुष्य अपने सामर्थ्यके अनुसार स्त्री रख सकता है। जिलेमें ५००० से अधिक मनुष्योंकी कोई बस्ती नहीं है। सबसे बड़ा गांव श्रीनगर है। जिसमें सन् १८८१ में केवल २१०० मनुष्य थे। दूसरे केवल ९ गांवोंमें ५०० से अधिक और १००० से कम मनुष्य वसते हैं।

सन् १८८१ में जिलेके ५५०० वर्गमील क्षेत्रफलमें केवल १७३ वर्गमीलमें खेती होती थी। इस जिलेमें बड़े परिश्रमसे खेतीका काम होता है। कई एक खेतोंकी चौड़ाई केवल ३ ही गज होती है। गेहूँ, धान और मडुआ यहाँकी प्रधान फसिल है। नीचे दरजेके लोगोंका मुख्य भोजन मडुआ है। जिलेके खर्चसे पैदावार अधिक होती है।

सन् १४०० ई० से पहिले अलकनन्दाकी घाटीमें अनेक छोटे २ प्रधान लोग अपना २ स्वाधीन गढ़ रखते थे, इसी लिये इस देशका नाम गढ़वाल पड़ा। उसके पश्चात् चाँदपुरकी हुकूमत करनेवाला अजयपाल सब छोटे राजाओंको अपने अधीन लाया और वही गढ़वाल राज्यको नियत करनेवाला हुआ। उसने श्रीनगरको राजधानी बनाकर उसमें एक महल बनवाया, जिसकी निशानियाँ अबतक विद्यमान हैं। अजयपालके वंशके राजा गण चाँद घरानेके नामसे प्रसिद्ध हैं, उन्नीसवीं सदीके आरम्भ तक गढ़वाल और पासके टिहरी राज्यमें राज्य करते रहे। गोरखा लोग सन् १८०३ ई० में चाँद घरानेके राजा मानशाहको

भगा कर अन्यायसे आप हुकूमत करने लगे। उस समय गाँव उजेड़ने लगे और वहाँके निवासी वनोंमें भाग गये। जब वे लोग हिमालयके कदमके पास आक्रमण करने लगे तब तो सन् १८१४ में अङ्गरेजी सरकारसे उनकी लड़ाई हुई। सरकारने सन् १८१५ में गोरखोंको परास्त करके मानशाहके पुत्र सुदर्शन शाहको राजा बनाया, जिनके पौत्र महाराज कीर्तिशाह टिहरीके वर्त्तमान नरेश हैं, किन्तु अलकनन्दाकी घाटी गढवालका १ अङ्गरेजी जिला बनाया गया। अङ्गरेजी अधिकारमें होने पर अङ्गरेजी गढ़वाल जिलेकी बड़ी उन्नति हुई है। अन्न और चाह दोनोंकी खेती शीघ्र बहुत बढ़ गई है।

हरिद्वारसे काठगोदाम तकके पहाड़ी देशोंका, जो केदारनाथ और बदरीनाथकी यात्रामें मिलते हैं, संक्षिप्त वृत्तान्त;—हरिद्वार तक रेल है। हरिद्वारसे केदारनाथ और बदरीनाथकी यात्रा आरम्भ होती है। कुछ लोग नजीबाबादसे भी जाते हैं। हरिद्वारसे हृषीकेश तक १२ मील बैलगाड़ी और एक्केकी सड़क है। हृषीकेशसे ४०३ मील काठगोदामके पासके रानीबाग तक हिमालय पहाड़की चढ़ाई उतराई है। सवारीके झंपान या कण्डी और असबाब ले जानेके लिये कण्डी या कुलीका बन्दोबस्त हरिद्वारसे करना चाहिये। जो हरिद्वारमें बन्दोबस्त नहीं करता उसको हृषीकेशमें भी उपरोक्त चीजें मिलती हैं। यात्रियोंको अङ्गरखा, कम्बल, लोई या दोलाई, छतरी, जूता, पायजामा, चढ़ाई उतराईके समय सहारेके लिये लाठी या छड़ी, पूजा चढ़ानेके लिये मेवोंकी पुड़िया और चनेकी दाल, रोगसे बचनेके लिये पाचक, कुनैन आदि औषधि अपने साथ लेजाना चाहिये। ये सब सामान हरिद्वारमें तैयार रहते हैं। खानेके लिये कोई जिन्स साथ लेजानेकी आवश्यकता नहीं है; क्योंकि रास्तेकी सम्पूर्ण चट्टियोंपर सब सामान मिलते हैं मामूली वर्तन भी दूकानदार देते हैं।

हरिद्वारसे केदारनाथ और बदरीनाथ होकर रेलवेका स्टेशन काठगोदाम ४१७ मील पर मिलता है। लक्ष्मण झूलासे मीलचौरी तक गढ़वाल जिला और मीलचौरीसे आगे कमाऊँ जिला है। गढ़वाल जिलेके डिपुटी कमिश्नर श्रीनगरसे ८ मील पौड़ोमें और कमाऊँ जिलेके अल्मोड़ेमें रहते हैं। पहाड़में जंगल और मालके दो महकमे अलग अलग हैं। जंगलका प्रबन्ध और फौजदारीका विचार खुद डिपुटीकमिश्नर करते हैं और मालके बन्दोबस्तके वास्ते पटवारी लोग मुकरर हैं। यही लोग मालगुजारी तहसील और बकायातोंकी रिपोर्ट भी करते हैं। बड़ी बड़ी बस्तियोंमें पुलिसकी चौकी है।

पहाड़ी मनुष्य—पहाड़ी मनुष्योंमें क्षत्री और ब्राह्मण ही अधिक हैं। इनका निर्वाह एक पेशेसे नहीं हो सकता, इस कारणसे इनमेंसे बहुत लोग कुलीके काम भी करते हैं। इस देशमें लोहार-बढ़ई, कुम्हार, तेली, दरजी और नट बहुत नीच समझे जाते हैं। लोहार बदरीनाथ और केदारनाथके कंकण, अंगूठी और बदरीनाथका पट, और बढ़ई—कठौते, कठारी, कलसी और प्याले बनाकर यात्रियोंके हाथ बेचते हैं। नट लोग यात्रियोंके आगे नटीको नचाकर पैसे मँगाते हैं, और ये पहाड़ी लोगोंके विवाहादि उत्सवमें जाते हैं। चमार ढोल बजाते, कपड़ा सीते, जूता बनाते और चौकीदारके काम करते हैं। लोहार आदि कई जाति मुर्गा पालते हैं। डोमके अतिरिक्त कोई आदमी जूठा नहीं खाता। अहीर, गण्डेरी और कुर्मी भी कुछकुछ होते हैं। पहाड़में मुसलमान बहुत कम हैं। मजखली चट्टीसे इधर व्यापारी मुसलमान देख पड़ते हैं। पहाड़ी लोग छोटी जातिके आदमीसे साधारण काम करवाना अनुचित

मझते हैं और बड़ी जातिके आदमी छोटे काम करनेमें लज्जा नहीं मानते । झम्पान और कण्डी ढोनेवालोंमें क्षत्रीही अधिक हैं। अब तो ब्राह्मण झम्पान ढोते नहीं देख पड़ते; परन्तु कण्डी तो ढोते हैं। मोदीका काम ब्राह्मग, क्षत्री तथा पण्डे लोग अधिक करते हैं। स्त्री दूकानोंपर नहीं बैठतीं, परन्तु श्रीनगर आदि बड़ी बड़ी चट्टियोंपर देख पड़ती हैं। और पशु पालनका काम छोटे बड़े सब जातिके लोग करते हैं पर अधिकांश राजपूतही खेती करते हैं । पहाड़ी लोग जोते बोये हुए खेतोंमें किसीको मल त्याग नहीं करने देते।

(मनुस्मृतिके चौथे अध्याय और गौतम स्मृतिके नवें अध्यायमें लिखा है कि खेतमें मल मूत्रका त्याग न करो) किसीकिसी स्थानपर एक जगह कई बिगहे खेत नीची ऊँची जमीनपर देख पड़ते हैं। नहीं तो सर्वत्र पर्वतोंके कमरपर, जहाँ मट्टी है, सीढ़ियोंके समान नाचेसे ऊपर तक पहाड़ी लोग खेत बनाये हैं। पहाड़ी मवेशियाँ जिनमें काले रङ्गकी बहुत हैं; छोटीछोटी और मोटी ताजी होती हैं। भेड़ और बकरे बड़ेबड़े और मजबूत भी होते हैं। पहाड़ी लोग अपना चौका किसीको छूने नहीं देते पर इनमें शौच आचार बहुत कम है। यहाँ ब्राह्मण अशक्त होनेपर क्षत्रीकी बनाई हुई कच्ची रसोई खालेते हैं। ठण्ढा मुल्क होनेसे नित्य स्नान करनेकी रीति यहाँ नहीं है। पहाड़ी लोग बड़े सच्चे होते हैं। वे किसी जिन्समें नकली चीजें नहीं मिलाते, एक बोली और एक भावसे जिन्स आदि सामान बेचते हैं और चोरी नहीं करते। किसीका असबाब किसी जगह पड़ा रहे, कोई नहीं उठाता। इस देशके पहाड़ी लोग दूसरे देशोंके पहाड़ियोंके सामन गँवार और कुरूप नहीं । इनका स्वभाव, नम्र और दीन है। ये बड़े साहसी होते हैं और झगड़ेके समय किसीसे नहीं दबते पर किसी यात्रीसे एक टोपी दो चार हाथ तागा या एक सुईके लिये दुकानदार, खेतिहर तथा भिक्षुक सब लोग हाथ पसार कर दौड़ते हैं। बहुतेरे यात्री टोपी, बटुए, सूई, तागा और बिन्दी हरिद्वारसे ले आते हैं और उनको बाँटते हैं । पहाड़ी लोगोंने हिन्दुस्तानको दो हिस्सोंमें विभक्त किया है, अर्थात् एक देश और दूसरा पहाड़। हिमालय पहाड़से दक्षिणके देशोंको वे देश; और इनके निवासियोंको देशी कहते हैं। कोई पहाड़ी आदमी पश्चिमोत्तर पञ्जाब, बङ्गाल, राजपूताना आदि हिमलायसे नीचेके देशोंमें गया हो, तो वे उसको कहते हैं कि वह देश गया है। उपरोक्त प्रदेशोंके यात्रियोंको ये लोग कहते हैं कि देशी हैं और देशसे आये हैं। इससे अनुमान हो सकता है कि इन लोगोंका देश किसी समय हिमालयसे दक्षिणही होगा। पहाड़ी लोग अपने घरसे उत्तरके देशको ऊपर और दक्षिणको नीचे कहते हैं। पहाड़ी पुरुषोंका पहिरावा लुङ्गी, कम्बलका कोट, अंगा; चोगा, गोल टोपी और पायजामा है और कम्बल ओढ़ते हैं । जिस जगह अधिक जाड़ा है वहाँके लोग दिन रात पायजामा पहिने रहते हैं। एक प्रकारका महीन और चिकना कम्बल पहाड़में बनता है। इसीका अंगा पायजामा आदि बनता है । देवप्रयाग, श्रीनगर आदि प्रसिद्ध बस्तियोंके लोग कपड़ेका अंगा कुर्ता और पगड़ी पहिनते हैं। उनमें टोपी पहिननेकी बड़ी रीति है। शिर खुला कोई नहीं देख पड़ता। कोई कोई अपने हाथोंमें चाँदीके कड़े पहिनते हैं। पहाड़में संक्रांति मास और हिन्दी अक्षर प्रचलित हैं। सरकारी काम देवनागरीमें होता है। पहाड़ी भाषा एक दूसरीही है, पर जैसे पञ्जाब, पश्चिमोत्तर देश, बङ्गाल, राजपूताना और बम्बेके लोग एक दूसरे देशवालोंसे बातचीत करलेते हैं वैसेही पहाड़ी लोगोंके साथ भी

देशीलोगोंकी बातचीत होती है। पहाड़ी लोग नदीको गाड़, गाँवको सौड, पुलको सांगा, पौसराको प्याऊ कहते हैं और वे लोग केवल २००० गजको १ कोस मानते हैं, जैसा कि पुराणोंमें १००० धनुष याने ४००० हाथका १ कोस लिखा है। पहाड़ी स्त्रियाँ कम्बलकी सारी, कपड़ेके कोट या चोली पहिनती हैं; समय समय पर शिर पर अङ्गोछा बांध लेती हैं और गलेमें चाँदीकी कई किस्मकी अनेक सिकड़ियाँ और नाकमें छोटी नथ पहनती हैं। बहुतेरी स्त्रियोंमें विशेषकर पहाड़के दक्षिण हिस्सेकी रहने वालियोंमें कपड़ेकी सारी पहिननेकी चाल है। पञ्जाबी स्त्रियोंके समान ये पर्देमें नहीं रहतीं। पहाड़ी लोग गाय, बैल, भैंस, घोड़े; भेड़ और बकरे आदि पालते हैं। इन पशुओंको जन्महीसे दौड़ने फाँदनेको समतल भूमि नहीं मिलती, इससे सबका स्वभाव शुद्ध होता है, परन्तु जिन्ससे लदे हुए भेड़, बकरे तेजीसे पांव उठाकर पहाड़ोंपर चलते हैं। साधारण भेड़ बकरोंपर १० सेर, १२ सेर किसी किसी पर १५ सेर, किसी पर तो २० सेर जिन्स लादी जाती है। पहाड़ी दुलहोंके चढ़नेको झम्पानहीके समान पालकी होती है। मीलचौरीसे दक्षिणके पर्वतीय मनुष्योंकी चाल कुछ बदली है। इधर कम्बलके कपडे पहिने हुए कोई नहीं देख पड़ते।

पहाड़–लक्ष्मण झूलासे काठगोदामके पास रानीबाग तक सर्वत्र पहाड़ मिलता है। दो चार मीलकी लम्बी चौढ़ी समतल भूमि किसी जगह नहीं देख पड़ती। पर्वतके ऊँचे शिखर पर चढ़नेसे ढेरियोंके समान चारोंओर छोटी बड़ी हिमालयकी चोटियाँ देख पड़ती हैं। केदारनाथ और बद्रीनाथ ऊंचे पहाड़ पर हैं। वहाँसेभी चारोंओरके ऊंचे ऊंचे शिखर दिखलाई देते हैं। रुद्रप्रयागसे केदारनाथ तक और केदारनाथसे लौटने पर चमोली तक, तथा गुलाब कोटिसे बदरीनाथ तक छोटी बड़ी गुफा और बड़े बड़े पत्थरोंके ढोंके देख पडते हैं। किसी किसी गुफामें दोही एक आदमी और किसीमें पचीसों आदमी वर्षाके पानीसे बच सकते हैं। विरही और अलकनन्दाके सङ्गमसे कर्णप्रयाग तक अलकनन्दाके किनारोंके पहाड़ोंमें पत्थरके गोलाकार टुकड़े और मिट्टी बहुत हैं। चमोलीसे कर्णप्रयाग तक कई जगह हवासे किनारेके पर्वतके हिस्से गिरे हुए और गिरते हुए देख पड़े। नदियोंमें जगह जगह नील, पीत, शुक्ल, रक्त, हरित, सबही रङ्गके पत्थरके टुकड़े पड़े हैं, पर शुद्ध रंगवाले कामिल नहीं हैं।

जङ्गल–पहाड़ी जङ्गलके चीड़, रासूला (जो चीड़से भी ऊँचे हैं), तून, सिरिस, सीसो, गङ्गड, हल्दु, गेट्ठी, सानन, धवड़ा, साल, कण्डार, जामुन आदि वृक्षोंकी लकड़ियाँ मकानोंके काममें आती हैं। चीड़ और रासूलके पेड़ बहुत ऊँचे और सीधे ताड़के समान होते हैं। पपिल, वट आम, गूलर, सहिजन, कचनार, निम्ब, अखरोट, हड़ा; तेजबल, पदुम काठ, करौनाके वृक्ष भी कहीं कहीं मिलते हैं। मन्दाकिनी नदीके दोनों किनारे पहाड़ी पौधोंकी झाड़ियोंसे हरे भरे हैं। वृक्षोंपर तरह तरहके पौधों और फूलोंके बेल विचित्र तरहसे लपटे हैं। जंगलका मनोहर दृश्य देखकर मनुष्य चकित होजाते हैं। कर्णप्रयागसे इधर रानीबाग तक जगह जगहपर हरित और घने जङ्गल हैं। मन्दाकिनीके किनारेपर और चमोलीसे उत्तर आमके वृक्ष नहीं देख पड़े। जङ्गली वृक्षोंमें कायफल, महोल और तोतल आदि कई वृक्षोंमें खानेके योग्य मीठे फल होते हैं, पर ये ऐसे फल नहीं हैं कि इनको मनुष्य खाकर सन्तुष्ट होजाय। पर्वती और जङ्गली वृक्ष अगर आम, कटहल, अमरूत, महुएं आदि फलवाले वृक्षोंके

समान फल देते, तो हिन्दुस्तानके लोगोंके आहारका यह एक बड़ा वसीला होजाता। जंगल-में बुरांश, गुलचीनी आदि बहुत फूल फूलते हैं, पर इनमें सुगन्ध नहीं होता। अवश्य गरना अर्थात् करौनेका जङ्गल जहाँ है वहाँ समय समय बड़ा सुगन्ध फैलता है। बदरीनाथ और केदारनाथके अतिरिक्त सर्वत्र लकड़ी सस्ती है। भागीरथीके किनारेपर जंगलमें सूखी लकड़ी, बहुत मिलती है पहाड़ी लोग जब चाहते हैं, पर्वतके जङ्गलोंमें आग लगा देते हैं। कई दिनों तक वह जला करता है। रातको दूरसे देखनेमें अच्छा मालूम पड़ता है। आग लगनेसे जगह साफ होजाती है। या पुराने सूखे हुए वृक्ष जलकर नये हरित वृक्ष उत्पन्न होते हैं। कमाऊँ जिलेके रानी खेत और नैनीतालके आसपासके जङ्गलमें बनबाढ़ा लगानेकी रोकावट है। कण्डाली नामक एक किस्मका पौधा जंगलमें और जगह जगह सड़कोंके पास होता है; जिसके छू जानेसे बिच्छू काटनेके समान एक दिन तक आदमीके शरीरमें छनछनाहट रहती है।

नदी—पहाडी नदियोंका पानी घाटियोंकी पत्थरीली भूमिपर वेगसे गिरता है। ऊँचे पर्वतके बीचमें संकीर्ण प्रवाहसे नदी बहती है। हारिद्वारसे काठगोदामके पास रानीबाग तक नदियोंमें किसी जगह नाव नहीं चलती है और न पुलोंके नीचे नदियोंके बीचमें पाये बने हैं। सर्वत्र दोनों किनारों पर पाया बनाकर लोहा या रस्से और लकड़ोंके लटकाऊ पुल, जिनको झूला कहते हैं, छोटी नदियोंपर इस किनारेसे उस किनारे तक लकड़ीके शहतीर डालकर लकड़ीके पुल बने हैं। थोड़े पानीमें हिलकर भी कोई नदीके पार नहीं जा सकता। यात्रियोंके जाने वाली सड़कके पासकी नदियोंपर काठ और लोहेके लटकाऊ पुल बनाये गये हैं। बस्ती वालोंने किसी किसी जगह अपनी बस्तीके पास नदी उतरनेके लिये लकड़ी और रस्सोंसे झूले बनाये हैं। छोटी नदियोंमें बड़े झरनेके समान पानीकी धार जो वर्षा कालमें चौडी होजाती है, देखनेमें आती है। अनेक स्थानोंमें बड़े बड़े ढोकोंपर नदियोंका पानी ठोकर खाकर आगे जाता है। वर्फमय पहाड़के पासका पानी मट्ठाके समान श्वेत और दूसरी जगहोंका हरित देख पड़ता है।

झरना—वर्षाका पानी पहाड़के दरारोंमें या किसी निम्न जगहमें रुक कर पहाड़के भीतरसे या उसके ऊपरसे निकलकर किसी नदी अथवा घाटीमें गिरता है। जान नहीं पड़ता कि किस रास्तेसे पानी आता है। दिन रात एक तरहसे पानी गिरा करता है। किसी जगह सींकके समान पतली और किसी जगह मनुष्यके बहा ले जानेके योग्य झरनेकी मोटी धार गिरती है। झरनेहीके पानीसे नदी बन जाती है।

पहाड़ी सड़क—प्रायः सब सड़क अङ्गरेजी राज्यमें नदी अथवा पहाड़की घाटीके किनारे हैं। किसी जगह नदीके पानीसे बहुत ऊपर और किसी जगह थोड़ेही ऊपर दो फीटसे दश बारह फीट तक चौड़ी चढ़ाई उतराईकी सड़क बनी है। सड़कोंके एक ओर पहाड़ और दूसरी ओर नीचे नदीका पानी या घाटी है। बीचमें पर्वतके कमरपर सड़क निकाली गई है। जिस जगह केवल पत्थरका पहाड़ है उस जगहकी सड़क साँकरी होती है। यात्रियोंको गिरनेका भय नहीं है; केवल चढ़ाई उतराईका क्लेशही है। रुद्रप्रयागसे केदारनाथ तक और केदारनाथसे बदरीनाथ तक अधिकांश स्थलोंकी सड़क ठोकर वाली है। सर्वत्रकी सड़क बायें दहिने चौरस और आगे पीछे नीची ऊँची है। बिजनी, त्रियुगी नारायण, केदारनाथ,

तुङ्गनाथ आदि जगहोंकी चढ़ाई कठिन है। पहाड़ी बस्तियोंकी पगडण्डी राहें पर्वतके शिरोभागसे नीचेकी ओर बनी हैं। सुगम राह और उतराईकी सड़क पर एक घण्टेमें करीब $1\frac{1}{2}$ मील और कड़ी चढ़ाईकी सड़क पर एक घण्टेमें $\frac{3}{4}$ मीलके हिसाबसे यात्री लोग चलते हैं।

चट्टी और बस्ती—पहाड़में लम्बे चौड़े और सीधे छप्पर वाले मकान होते हैं। यहाँ पत्थर और लकड़ीके लिये बहुत खर्च करना या इनको दूरसे ले आना नहीं पडता। चीड़ आदि कई तरहके वृक्ष गढी हुई लरहीके समान सीधे होते हैं। पहाड़ी लोग पत्थरकी शुद्ध दीवार बना कर दोनों पालाओं पर लरहीके समान दश बारह लकड़ी देकर तख्तोंसे पाटते हैं और तख्तोंके ऊपर पटियोंसे या पहाड़ी खरसे छा लेते हैं। पटिया तो १ हाथ या इससे कम बेशी लम्बी तथा चौड़ी और एक अंगुल मोटी होती है। सरकारी धर्मशाला आदि कितने मकान केवल लरहीके समान लकड़ियोंसे पाटकर छाये गये हैं। चट्टियोंके कितने मकान दश बारह हाथ चौड़े और बड़े बड़े लम्बे और कितने दो मञ्जिले हैं। बस्तियोंके छोटे बड़े मकानभी इसी तरहसे बनते हैं। इनके अतिरिक्त बनलकड़ीकी डाल पात और नरकट तथा रिंगाल पर खरसेभी मकान छाये जाते हैं और पत्थरके अनगढ़े टुकड़ोंसेभी दीवार बनाई जाती है। छोटी छोटी कई चट्टियों पर जङ्गली लकड़ीके खम्भे और डाल पात और खरोंसे बने हुए मकान बने हैं। प्रायः सब पहाड़ी मकानोंमें आंगन नहीं होता, क्योंकि वे पहाड़के कमरपर बनते हैं। साधारण खरचेसे इस देशके मकान बङ्गलोंके समान हो जाते हैं। पहाड़ पर जिस बस्तीमें ३० या ४० मकान हैं, वह बड़ी बस्ती कहलाती है। पहाड़ोंकी कमरपर और उनके ऊपर जगह जगह २-४ १०-१५ घरकी बस्तियां देख पड़ती हैं। पहले कई चट्टियोंपर अहल्याबाईकी धर्मशालायें थीं। अब बड़ी बड़ी प्रायः सब चट्टियोंपर सरकार अङ्गरेजने एक एक धर्मशाला बनवा दी है।

जिन्स—आटा, नया और मोटा चावल, उड़दकी दाल, नमक, घी, चनेका चबैना और गुड़ सब चट्टियों पर, महीन और पुराना चावल, अरहर, मसूर और मूँगकी दाल और तम्बाकू, बहुतेरी चट्टियों पर चनेकी दाल, बेसन, पूरी, पेड़े, गरी, छोहारा, बादाम, किसमिश, सौंफ आदि मसाले, चीनी, तेल, दूध, विरली चट्टियोंपर आलू, कच्चे केले, कोंहड़ा, पिण्डालू (अरुई), अदबरी, किसी किसी चट्टी पर कोटू, कांदल्या, लिंगड़े और मरसेके साग ऊंचे पहाड़ोंकी किसी किसी चट्टी पर आम, नीचेके पहाड़ोंपर; कपड़े, बरतन, कागज, पेन्सिल, दियासलाई आदि देवप्रयाग, श्रीनगर, रुद्रप्रयाग, ऊखीमठ, चमोली, पीपलकोटी, कुम्हारचट्टी, जोशीमठ, बदरीनाथ, नन्दप्रयाग और कर्णप्रयागमें नासपाती, आडू, अनार धोबीघाट चट्टीसे नीचे मिलते हैं।

सूचना—केदारनाथ और बदरीनाथके मार्ग पहलेसे अब बहुत सुगम होगये हैं प्रति दिन सैकड़ों आदमी स्त्री, पुरुष, बूढ़े, जवान, लड़के और लड़कियां झम्पान और कण्डियोंमें तथा पैदल जाती हैं। ६ मासके लड़केभी अपनी माकी गोदीमें झम्पान पर और दो चार वर्षके लड़के और लड़कियां कण्डियोंमें और कुलियोंके कन्धेपर जाते हुए देख पड़ते हैं। झम्पान और कण्डीका भाड़ा हरिद्वार और हृषीकेशमें होता है। इनके अतिरिक्त रास्तेमें किसी जगह झम्पान और बहुतेरी जगह कण्डी मिल जाती हैं। जो आदमी रास्तेमें थक

जाता है, अथवा बीमार पड़ जाता है, वह रास्तेमें कण्डीका भाड़ा करके उस पर चढ़ लेता है, पर मोटे ताजे आदमीको कण्डी नहीं मिलती। पर्दामें रहने वाली स्त्री झम्पानपर पर्दा लगा सकती हैं। एक या कई आदमी मिलकर कण्डीका भाड़ा करके उसमें अपना असबाब लेजाते हैं। मिलचौरीसे उत्तर सवारीके लिये टट्टू मिलते हैं। श्रीनगरमें धोबी और देवप्रयाग और श्रीनगरमें नाई मिलते हैं। जो आदमी मोदीकी जिन्स लेता है उसको वह टिकनेका मकान और यथा साध्य बरतन देता है। सब चट्टियोंपर और सब मोदियोंकी दूकानोंमें एक बोली, एक दरसे जिन्स बिकती है। केदारनाथ जानेवाला यात्री नाला चट्टीसे आगे और बदरीनाथ जाने वाला चमोलीसे आगे किसी चट्टीपर किसी दूकानदारके पास अपने जरूरी कामसे अधिक असबाब रख देते और लौटनेपर ले लेते हैं। पहाड़में पान नहीं होता और अच्छी तम्बाकू नहीं मिलती। सब चट्टियोंपर भाजी नहीं बिकती। तेल कम होता है और किसी किसी जगह बहुत महँगा मिलता है। यात्री लोग लकड़ी जलाकर अथवा घीसे रोशनी करलेते हैं। रास्तेमें कई जगह चमार जूते बेचते हैं। थोड़ी थोड़ी दूरपर चट्टी बनी हैं, जिनमें टिकनेका सुबीता है। श्रीनगर आदि बड़ी बड़ी चट्टियोंकी दूकानोंपर नोट बिक जाते हैं। राजा महाराजोंको, जिनके साथ बहुत लोग हों, नैनीतालमें साहेब कमिश्नर बहादुरके पास अथवा पौड़ीमें डिपुटीकमिश्नरके पास दरखास्त करनेसे रसद आदिकी पूरी मदद मिल सकती है। रास्तेमें किसी जगह हिंसक जन्तुका भय नहीं है। रुद्रप्रयागसे आगे केदारनाथके रास्तेमें और ऊखीमठसे आगे बदरीनाथकी ओर एक प्रकारकी मक्खी आदमीको काटती हैं। काटनेके समय जान नहीं पड़ता परन्तु पीछे घाव होकर बहुत दिनों तक खुजलाता और बढ़ता जाता है। कर्णप्रयाग और मीलचौरीके बीचकी आबहवा खराब है। इस देशमें झरनोंका पानी बहुत मीठा और स्वास्थ्यकर है। हरिद्वारसे काठगोदाम तक अङ्गरेजी सरकारने जगह जगह डाकखाना, शफाखाना और पुलिसकी चौकी नियत कर दी हैं। अधिकांश यात्री प्रति दिन सबेरे चार पांच बजे उठते हैं और ग्यारह बारह बजे चट्टीपर टिक जाते हैं। कुछ लोग खा पीकर शामको भी थोड़ा चलते हैं। हरिद्वारसे चलकर ४१७ मील काठगोदामके रेलवे स्टेशनपर चालीस पैंतालीस दिनमें आरामसे आदमी पहुँच जाते हैं। जब तक केदारनाथ और बदरीनाथके पट खुले रहते हैं, तब तक यात्रा जारी रहती है, परन्तु श्रावण तक यात्रियोंकी भीड़भाड़ बहुत रहती है। वर्षा कालमें पर्वत, नदी और जङ्गल अधिक रम्य और मनोहर होजाते हैं। केदारनाथ और बदरीनाथके पहाड़ोंपर वैशाख और जेठमें भी बरफ जमा रहता है। बरसातमें बरफ गल जानेपर बहुतेरी जगहोंमें सुन्दर पौधे निकल आते हैं। अब यात्रियोंको इस मार्गमें दो बातका क्लेश रहगया, है; जिससे वे लोग घबड़ाकर पहाड़से जल्दी बाहर होनेकी इच्छा करते हैं। एक तो पहाड़की चढ़ाई उतराई और दूसरी जगहोंकी संकीर्णता; परन्तु ये दोनों काम असाध्य हैं। आटा हृषीकेशमें डेढ़ आने सेर, बदरीनाथमें ४ आने सेर और केदारनाथमें ६ आने सेर बिकता है।

केदारनाथ और बदरीनाथकी यात्रामें हरिद्वारसे काठगोदाम तक नीचे लिखे हुए क्रमसे चट्टियाँ मिलती हैं।

(१) हरिद्वारसे उत्तर थोड़ा पूर्व रुद्रप्रयाग तक, हरिद्वारसे फासिला—

मील, चट्टियोंका नाम ।

६ सत्यनारायण ।
१२ हृषीकेश ।
१४ लक्ष्मणझूला ।
१७$\frac{1}{2}$ फुलवाड़ीचट्टी ।
१९$\frac{3}{4}$ सेमलचट्टी ।
२०$\frac{3}{4}$ गूलरचट्टी ।
२२$\frac{3}{4}$ मोहनचट्टी ।
२५$\frac{1}{2}$ बिजनीचट्टी ।
२८$\frac{1}{4}$ कुण्डचट्टी ।
३१$\frac{1}{2}$ बन्दरचट्टी ।
३४$\frac{3}{4}$ महादेवचट्टी ।
३८$\frac{4}{3}$ सेमालोचट्टी ।
४०$\frac{1}{2}$ कण्डीकी छोटी चट्टी ।
४१$\frac{1}{4}$ कण्डीकी बडीचट्टी ।
४५$\frac{3}{4}$ व्यासचट्टी ।
४८$\frac{1}{2}$ छालूरी चट्टी ।
५०$\frac{3}{4}$ उमरासूचट्टी ।
५४$\frac{3}{4}$ देवप्रयाग ।
६२ रानीबागचट्टी ।
६४$\frac{3}{4}$ रामपुरचट्टी ।
६७$\frac{3}{4}$ भगवान्चट्टी ।
७२$\frac{3}{4}$ श्रीनगर ।
८१$\frac{1}{4}$ भट्टीसेराचट्टी ।
८२$\frac{1}{2}$ छान्तीखालचट्टी ।
८४$\frac{1}{4}$ खांकराचट्टी ।
८७$\frac{1}{4}$ नरकोटाचट्टी ।
९० गुलाबरायचट्टी ।
९१$\frac{3}{4}$ रुद्रप्रयाग ।

(२) रुद्रप्रयागसे उत्तर कुछ पूर्व केदारनाथ तक रुद्रप्रयागसे फासिला ।

मील, चट्टियोंका नाम—

४$\frac{3}{4}$ छितौली वा तिलबड़ा ।
७ रामपुरचट्टी ।
१०$\frac{3}{4}$ अगस्तचट्टी ।
१३$\frac{1}{4}$ महादेवचट्टी वा सौंड़ीचट्टी ।
१५ चन्द्रापुरीचट्टी ।
१८ भीरीचट्टी ।
२१$\frac{1}{2}$ कुण्डचट्टी ।
२४ गुप्तकाशी ।
२४$\frac{3}{4}$ नालागाँव ।
२६ भीतगाँव ।
२७$\frac{1}{2}$ व्युंगगढ़चट्टी ।
३१ फट्टाचट्टी ।
३४ शेरसीचट्टी ।
३५$\frac{1}{2}$ रामपुरचट्टी ।
४०$\frac{1}{4}$ त्रियुगी नारायण ।
४३ सोनप्रयाग ।
४६ गौरीकुण्ड ।
५०$\frac{1}{2}$ रामवाड़ाचट्टी ।
५५ केदारनाथ ।

(३) केदारनाथसे दक्षिण थोड़ा पूर्व चमोली तक केदारनाथसे फासिला—

मील, चट्टियोंका नाम ।

२५$\frac{1}{2}$ केदारनाथसे नालागाँव चट्टी पूर्व कथनानुसार सोनप्रयागसे सीधा रास्ता त्रियुगी नारायण छोड़कर ।
२८$\frac{1}{2}$ ऊखीमठ ।
३१ गणेशचट्टी ।
३२$\frac{3}{4}$ दुर्गाचट्टी बड़ी ।
३३$\frac{1}{2}$ दुर्गाचट्टी छोटी ।
३५$\frac{1}{2}$ पोथीबाँसाचट्टी ।
३७$\frac{1}{2}$ कुन्दनचट्टी ।
३८$\frac{1}{2}$ चौपत्ताचट्टी ।
४४ तुङ्गनाथ होकर भीमचट्टी ।
४५ जङ्गलचट्टी ।
४५$\frac{3}{4}$ पाँगरचट्टी ।
४९ मण्डलचट्टी ।
५३$\frac{1}{4}$ वीरभद्रचट्टी ।

५५ गोपेश्वर ।
५७ चमोली ।

(४) चमोलीसे उत्तरकी ओर बदरीनाथ तक चमोलीसे फासिला—

मील, चट्टियोंके नाम ।
२½ मठचट्टी ।
४ बालानी चट्टी ।
७ हाटचट्टी ।
९ पीपल कोटी ।
१३ गरुड़गंगा चट्टी ।
१४½ देवदारु चट्टी ।
१६¼ पातालगंगा ।
१८¼ गुलाबकोठी ।
२० कुमार चट्टी छोटी ।
२०½ कुमार चट्टी बड़ी ।
२३ पैनीचट्टी ।
२६ छोटीचट्टी ।
२७¼ जोशीमठ ।
२८¾ विष्णुप्रयाग ।
३३ घाटचट्टी ।
६५ पाण्डुकेश्वर ।
३७¾ लाभवगढ़चट्टी ।
४१ हनुमानचट्टी ।
४५¼ बदरीनाथ ।

(५) लौटती बदरीनाथसे दक्षिण थोड़ा पश्चिम कर्णप्रयागतक, बदरीनाथसे फासिला—

मील, चट्टियोंका नाम ।
४४¼ चमोली पूर्व कथनानुसार जोसी मठ छोड़कर विष्णुप्रयाग और छोटी चट्टी होकर ।
४६¼ कुवेलचट्टी ।
४८½ छोटी चट्टी ।
५१¼ नन्दप्रयाग ।
५४¼ सुरला चट्टी ।
५७¾ लिङ्गासू चट्टी ।
६३¾ कर्णप्रयाग ।

(६) कर्णप्रयागसे पश्चिम रुद्रप्रयाग तक कर्णप्रयागसे फासिला—

मील चट्टियोंका नाम ।
५ चटवा पीपलचट्टी ।
१० बगड़ासू ।
१३ शिवानन्दी ।
२१ रुद्रप्रयाग ।

रुद्रप्रयागसे पूर्व कथनानुसार हारिद्वार ९१¾ मील पर है। हरिद्वार होकर अपने घर जानेवाले यात्री कर्णप्रयागसे रुद्रप्रयाग होकर जाते हैं।

(७) कर्णप्रयागसे दक्षिण-पूर्व काठगोदाम रेलवे स्टेशन तक कर्णप्रयागसे फासिला—

मील, चट्टियोंका नाम ।
३¾ सेमलचट्टी ।
६ सिरौलीचट्टी ।
७½ बटोलीचट्टी ।
११¾ आदिबदरी ।
१६½ जांकापानीचट्टी ।
१९½ कालीमाटी चट्टी ।
२०¼ सिंहकोटी चट्टी ।
२१¾ गोहरचट्टी ।
२३¼ धोबीघाट ।
२६½ छोटीचट्टी ।
२९ मीलचौरी ।
३१ सिमालखेतचट्टी ।
३२¾ नारायणचट्टी ।
३५ वृषभूचट्टी ।
३६¼ छोटीचट्टी ।
३७ चौखुटिया या गनाई ।
४१¾ महाकालचट्टी ।
४२ साहपुरचट्टी ।

४३½ बराटचट्टी ।
४६ अमीरचट्टी ।
४७¼ द्वारहाट ।
५१¼ मनरगोंकी दूकान ।
५२½ बगवालीपोखर ।
५३½ बांसुरी सेरा ।
५५ मलयनदी चट्टी ।
५७ रेवनीगांव चट्टी ।
५८¾ मजखली चट्टी ।
५९¼ मजखली धर्मशाला ।
६८¼ सीता चट्टी या जङ्गल चट्टी ।
७४ कांकरी घाट चट्टी।
७५¼ पहड़िया चट्टी ।
७८ चमड़िया चट्टी ।
८०¼ खैरना ।
८१ गरमपानी चट्टी ।
८३¾ रामगढ़ चट्टी ।
८४½ एक चट्टी ।
८७¼ कैंची चट्टी ।
८९¾ निंगलाट चट्टी ।
९२¼ भिमौली चट्टी
९३½ परसवली चट्टी
९६¾ भीमताल ।
१०१¼ नवचण्डी चट्टी ।
१०२¼ रानीबाग ।
१०४¾ काठगोदाम ।

हरिद्वारसे काठगोदाम तकका जोड़

मील वृत्तान्त
९१¾ हरिद्वारसे उत्तर थोड़ा पूर्व रुद्रप्रयाग ।
५५ रुद्रप्रयागसे उत्तर कुछ पूर्व केदारनाथ ।
५७ केदारनाथसे दक्षिण थोड़ा पूर्व चमोली ।
४५¼ चमोलीसे उत्तरकी ओर बदरीनाथ ।
६३¾ बदरीनाथसे दक्षिणकी ओर कर्णप्रयाग ।

३१२¾ जोड़ कर्णप्रयाग तक ।
१०४¼ कर्णप्रयागसे दक्षिण–पूर्व काठ-गोदाम ।

४१७ जोड़ काठगोदाम तक ।

हरिद्वारसे केदारनाथ और बदरी-होकर हरिद्वार लौटनेका मार्ग ।

मील वृत्तान्त
३१२¾ हरिद्वारसे कर्णप्रयाग तक पूर्व लेखके अनुसार ।
२१ कर्णप्रयागसे रुद्रप्रयाग ।
९१¾ रुद्रप्रयागसे हरिद्वार ।

४२५½ सम्पूर्ण जोड़ ।

पहाड़ी यात्रा आरम्भ–वैशाख शुक्ल तृतीया (संवत १९५३–सन् १८९६ ई०) को मैंने हरिद्वार छोड़ा । हरिद्वारकी हरिपैरीसे १ मील उत्तर गङ्गाके दहिने किनारेपर भीमागोड़ा नामक स्थान है । यहाँ पहाड़ीके नीचे भीमकुण्ड नामक आठपहला पक्का एक कुण्ड है, जिसके पास भीमेश्वर शिवलिङ्ग और पहाड़ीके कमरपर एक छोटे मन्दिरमें भीम गङ्गा और भगीरथकी मूर्त्ति हैं । उससे आगे जगह जगह कतरा मूँज लगी हुई जमीन, जगह जगह बड़े बड़े वृक्षोंका घना जङ्गल और स्थान स्थान पर दीमकके टीले देख पड़े । गरना (करौंदा) आदि वृक्षोंके फूलोंकी सुगन्धिसे मन प्रसन्न होगया । हरिद्वारसे २ मील आगे गङ्गा छूट जाती हैं । ३ मील आगे मोतीचूर नदीमें ठेहुनसे नीचे जल बहता है । ४॥ मील आगे रावलगांवके पास पूरी, मिठाई और मोदियोंकी कई दूकानें हैं । ५½ मील आगे

सुसुआ नदीमें ठेहुनसे नीचे जल लांघना होता है, पर वर्षा कालमें इस नदीकी धारा बड़ी तेज और इसकी चौड़ाईभी बहुत होजाती है। उसी समय किरायेके हाथी पर चढ़ कर या तुमड़ियोंके बेड़े पर लोग पार होते हैं। हरिद्वारसे ६ मील आगे सत्यनारायणका नया मन्दिर है।

सत्यनारायणका मन्दिर—यहाँ एक छोटे मन्दिरमें सत्यनारायण, लक्ष्मी और महावीरकी मूर्त्ति, २ दालान और ४ कोठरियोंकी एक धर्मशाला कई छप्परोंकी बस्ती, उत्तम पानीका एक कुँआ और मोदियोंकी कई दूकानें हैं।

सत्यनारायणके पासही उत्तर सौक नदी पर काठका पुल बना है। वर्षा कालमें तुम्बेके बेड़े या हाथीपर लोग पार उतरते हैं। उससे आगे १ मीलके भीतर दो जगह इसी नदीके दो नाले, जिनमें ठेहुनेसे नीचे पानी बहता है और उससे आगे जगह जगह गेहूँके खेत और जगह जगह जङ्गलमें बनढाढ़ा लगे हुए, जिनको जङ्गल साफ करनेके लिये लगाया थीं; देख पड़े। सत्यनारायणसे २½ मील पर एक कूप, ३½ मील पर बहुत छोटा नाला, ५ मील पर पथरूवा नदी, जिसमें ठेहुनेसे नीचे जल है, ५¾ मील पर गङ्गा और सत्यनारायणसे ६ मील (हरिद्वारसे १२ मील) आगे देहरादूनके जिलेमें हृषीकेश है।

हृषीकेश–हृषीकेशमें गङ्गाके दाहिने किनारेपर रामजानकीका मन्दिर है। मन्दिरके आगे गङ्गाकी ओर कुब्जांबर नामक एक पक्का कुण्ड है। झरनाका पानी कुण्डमें होकर गङ्गामें जाता है। मन्दिरसे थोड़ी दूरपर वाराहजीका छोटा मन्दिर और एक दूसरा शिखरदार मन्दिर है। इनके अतिरिक्त हृषीकेशमें कई छोटे छोटे मन्दिर हैं।

भरतजीका शिखरदार मन्दिर हृषीकेशके मन्दिरोंमें प्रधान है, यह हृषीकेशके उत्तर भागमें पूर्व मुखसे स्थित है, मन्दिर दो डेवढ़ीका है। भीतरकी डेवढीमें श्यामल, चतुर्भुज शंख, चक्र, गदा, पद्म लिये हुए, शरीरपर सुन्दर वस्त्र, शिरपर मुकुट धारण किये हुए भरतजी खड़े हैं। मन्दिरके आगे जगमोहन और चारोंओर दीवार और कुछ मकान हैं। मन्दिर प्राचीन है। लोग कहते हैं कि भरतजीकी मूर्त्तिको (सन् ई० की ९ वीं सदीमें) शंकराचार्य्यने स्थापित किया। ५०–६० वर्ष पहिले यहाँ भरतजीके मन्दिरके अतिरिक्त कोई पक्का मकान न था, केवल विरक्तोंका निवास था।

हृषीकेशमें जगाद्री वालेकी, नजीबाबाद वालेकी, कलकत्ते वालोंकी और अन्य कई धर्मशालायें और सदावर्तहैं। गङ्गाके किनारे संन्यासी, वैरागी आदि साधु कुटी बनाकर बसे हैं। कलकत्ते वालोंकी धर्मशालाओंमें रोटी, दाल नित्य साधुओंको दी जाती है (पराशरस्मृतिके पहले अध्यायमें लिखा है कि यति और ब्रह्मचारी दोनों पक्के अन्नके अधिकारी हैं)। हृषीकेशसे दक्षिण कई मीलों पर्यन्त और उत्तर शत्रुघ्नजीके मन्दिर तक लगभग १०० कोढ़ी मढ़ी बाँधकर बसे हैं और यात्रियोंसे पैसा मांगतेहैं। ऋषीकेशमें डाकघर और पुलिसकी चौकी है। बाजारमें खानेका सब सामान तय्यार रहता है और वहाँसे पहाड़में जाता है। हरिद्वारसे यहाँ तक बराबर जमीन है और एक्के और बैलगाड़ी आती हैं। हरिद्वारके समान यहाँ भी झम्पानें और कण्डीवाले कुली मुकर्रर होते हैं।

पहाड़ी सवारी–झम्पान, बरैळीदण्डी, दरीदण्डी और कण्डी ये पहाड़ी सवारी हैं।

झम्पान।
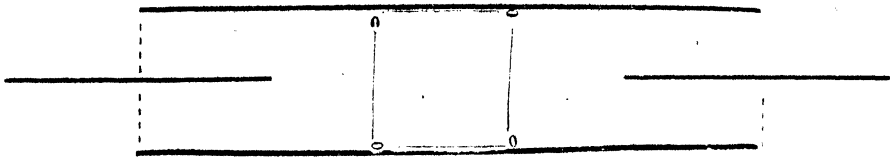
दरीदण्डी।
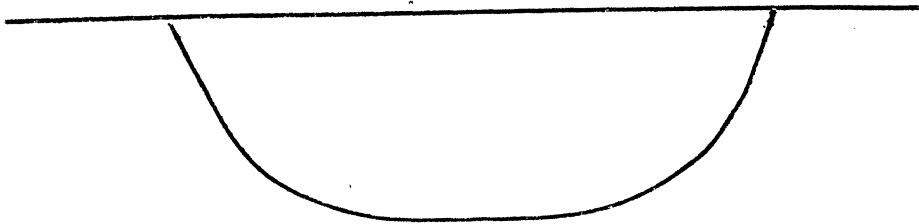
कण्डी।
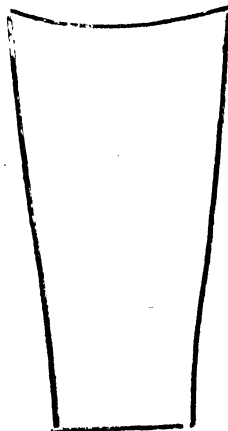
झम्पान, जिसमें एक आदमी पलथी मारकर आरामसे बैठता है, एक उलटी हुई मचियाके समान है, जिसकी पाटी २ फीट लम्बी होती है, इसके दोनों बगलोंमें ८½ फीट लम्बे दो बांस बाँधे जाते हैं; उनके छोरों पर दोनों तरफ रस्सियोंसे ढीले बाँधे रहते हैं। रस्सियोंके बीचमें एक झंपानके आगे और एक पीछे चार २ फीट लम्बी दो लकड़ियां या बांस लगा कर ४ कुली अपने कन्धोंपर उठाकर ले चलते हैं। पर्देमें रहनेवाली स्त्री झम्पानके ऊपर बांसकी बत्ती बाँध कर पर्दा लगा सक्ती है। हृषीकेश अथवा हरिद्वारसे मीलचौरीतक झम्पान और कण्डीका किराया तै होता है क्योंकि झम्पान या कण्डी कुलीके उससे आगे नहीं जाते हैं। मीलचौरीमें दूसरे झम्पानका किराया किया जाता है। झम्पानका किराया हृषीकेशसे मीलचौरी तकका साधारण आदमीके लिये ७०) रुपयेसे ८०) रुपये तक और मोटे आदमीके लिये इससे दश बीस रुपया अधिक लगता है; इसके अतिरिक्त जगह जगह रास्तेमें करीब १०) रुपये झम्पानके कुलियोंको मामूली इनाम देना पड़ता है। मैंने १००) रुपये पर हृषीकेशमें एक झम्पान किराये पर किया।

बरेलीदण्डी झम्पानकी तरह होती है। वह बड़े आरामकी सवारी है; उस पर कुर्सीके समान पैर लटका कर बैठनेकी जगह रहती है; उसके लिये कुछ चौड़ी सड़ककी जरूरत है इससे वह इस मार्गमें मीलचौरीसे इधर नहीं चलती है।

दरीदण्डी एक बाँस या लकड़ीके दोनों छोरोंके पास एक छोटी दरी बाँध दी जाती है। उसी पर झूलेकी तरह एक बगलमें पैर लटका कर यात्री बैठता है। दोनों ओर दो कुली लगते हैं। दरीदण्डीमें कोई बिरलाही चढ़ता है।

कण्डी एक गोली गहरी गावदुम टोकरी है। उसको एक कुली अपने पीठपर खुले हुए मुहँको ऊपर करके उसमें रस्सियां बाँध कर कन्धेमें लगाता है और उसमें नीचे कपड़े आदि भर देता है, जिससे बैठनेवाला आरामसे बैठजाय। पाँव लटकानेके लिये एक ओरसे उसका किनारा कटा होता है; इसमें बूढ़े, लड़के या गरीब, स्त्रियाँ बहुधा चढ़ती हैं। धनी लोग असबाब ले जानेके लिये कण्डी किरायेसे करते हैं। कण्डीका किराया हृषीकेश या हरिद्वारसे मीलचौरी तकका एक मन असबाब लेजानेके लिये करीब २५) रुपया, सवारीके लिये लगभग ३६) रुपया लगता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्द पुराण (केदार खण्ड, दूसरा भाग, १६ वाँ अध्याय) विष्णु भगवान्‌ने १७ वें मन्वन्तरमें मधु और कैटभ, दोनों दैत्योंको मारकर उनके मेदसे पृथ्वीको बनाया। उसके उपरांत वे पृथ्वी तलके सैकड़ों क्षेत्रोंमें भ्रमण करते हुए गङ्गाद्वारमें गये। वहाँ बड़े तेजस्वी रैभ्य मुनि बहुत कालसे तप कर रहे थे। विष्णुभगवान्‌ने आम्र वृक्षमें प्राप्त होकर रैभ्य मुनिको, जो कुब्ज अर्थात् कुबड़े होगये थे, दर्शन दिया। मुनि भगवान्‌को देखकर बार बार दंडवत् करके स्तुति करने लगा। भगवान् बोले कि हे मुनीश्वर! मैं प्रसन्न हूँ तुम इच्छित वर माँगो। मुनि बोले कि हे भगवन्! यदि आप प्रसन्न हैं तो आप इस स्थल पर नित्य निवास करैं। सदा तुम्हारे और हमारे नामसे यह स्थान प्रसिद्ध रहे। भगवान्‌ने कहा कि ऐसाही होगा। कुब्ज रूप तुमने आम्र वृक्षमें प्राप्त मुझको देखा इस कारणसे इस स्थानका कुब्जाम्रक नाम होगा। इस तीर्थमें स्नान, दान, जप आदि करनेवाले मनुष्योंको कोटि कोटि फल लाभ होगा। जो यहाँ निवास करेगा उसको परम धाम प्राप्त होगा। यहाँ

बिन्दु मात्र जल देनेसे पितरोंका उद्धार होजावेगा। मैं लक्ष्मीके सहित इस तीर्थमें सदा निवास करूंगा। हृषीक अर्थात् इंद्रियोंको जीतकर तुमने मेरे दर्शनके लिये तप किया, अथवा मैं जो हृषीकेश हूँ, यहाँ प्राप्त हुआ इस कारणसे इस तीर्थका दूसरा नाम हृषीकेश होगा। त्रेतायुगमें राजा दशरथके पुत्र भरत, जो हमारे चतुर्थांश भाग हैं, हमको यहाँ स्थापित करेंगे। वही मूर्त्ति कलियुगमें भरत नामसे प्रसिद्ध होगी। जो प्राणी सतयुगमें वाराह रूपसे, त्रेतामें कार्तवीर्य रूपसे, द्वापरमें वामन रूपसे और कलियुगमें भरत रूपसे स्थित मुझको यहां नमस्कार करेगा उसको निःसन्देह मुक्ति मिलेगी। ऐसा कह विष्णु भगवान् अन्तर्द्धान होगये। (१७ वाँ अध्याय) सुन्दरीसे लेकर हेमवती नदी तक कुब्जाम्रक क्षेत्र है।

यह कथा वाराह पुराणके १२२ वें अध्यायमें है। किन्तु उसमें लिखा है कि विष्णु भगवान्ने रैभ्य मुनिके निकटके आम्र वृक्ष पर बैठकर उनको दर्शन दिया। भगवान्के भारसे वह वृक्ष नम्र होकर कुबड़ा होगया, इस कारणसे उस तीर्थका नाम कुब्जाम्रक करके प्रसिद्ध होगया।

वामनपुराण—(७९ वाँ अध्याय) प्रह्लादजी कुब्जाम्रक तीर्थमें गये। वह उस पवित्र तीर्थमें स्नान और हृषीकेश भगवान्की पूजा करके वहाँसे बदरिकाश्रम चले गये।

कूर्मपुराण—(उपरिभाग ३४ वाँ अध्याय) कुबृजाम्रक नामक विष्णुका एक तीर्थ है। वहाँ विष्णुकी पूजा करनेसे श्वेत द्वीपमें निवास होता है। जिस समय भगवान् शंकरने दक्षप्रजापतिका यज्ञ विध्वंस किया, उसी समय चारोंओर १ योजन विस्तारका वह क्षेत्र होगया और उसी समयसे पुरुषोत्तम भगवान् वहाँ निवास करते हैं।

नरसिंहपुराण–(६५ वाँ अध्याय) कुब्जागारमें हरि भगवान्का नाम हृषीकेश है।

गंगोत्री।

हृषीकेशसे उत्तर ओर पहाड़ी राहसे करीब १५६ मील पर गङ्गोत्री है। हृषीकेशसे देहरादून होकर करीब ६० मील टिहरी है। टिहरीसे ४२ मील "उत्तरकाशी"। टिहरी राज्यमें एक पहाड़ी कसबा है। वहाँ विश्वनाथ, केदारनाथ, भैरव, अन्नपूर्णाके चार मन्दिर और पांच छः धर्मशालायें, महाराजा इन्दौर और रायसूर्य्यमलका सदावर्त और मोदियोंकी दूकानें हैं। उत्तरकाशीसे १७ मील पर भटवारी बस्तीमें शिवमन्दिर और मोदियोंकी दूकानें हैं। भटवारीसे ३७ मील, अर्थात् टिहरीसे ९६ मील और हृषीकेशसे १५६ मील उत्तर समुद्रके जलसे १४००० फीटसे कुछ कम ऊपर गङ्गोत्री है, टिहरीसे राह गङ्गाके दाहिने किनारे जाती है। गङ्गोत्रीसे कई मील पहले राह गङ्गाके बायें किनारे होगई है, टिहरीसे आगे राह सुगम है। यात्राके दिनोंमें बीच बीचमें भी दूकानें बैठजाती हैं। गङ्गोत्रीमें रायसूर्य्यमलका सदावर्त, कई धर्मशालायें और मोदियोंकी दूकानें है। वहाँ ३ मन्दिर हैं; जिनमेंसे एक शिखरदार बड़े मन्दिरमें गङ्गा, यमुना, नरनारायण, कुबेरजी और अन्नपूर्णा; दूसरेमें भैरव और तीसरेमें महावीरजी हैं। वहाँ गोमुखसे गङ्गाकी धारा गिरती है, जिसका जल यात्री लोग ले आते हैं। उस स्थानसे ११ मील और आगे लगभग ३०० फीट ऊँचे एक बर्फके ढेरसे लगभग २५ फीट चौड़ी और दो तीन फीट गहरी गङ्गा निकली है और लगभग १५०० मील बहनेके पश्चात् १० मील चौड़ी धारासे समुद्रमें गिरती है।

गङ्गोत्रीके बहुतेरे यात्री टिहरी लौटकर वहाँसे श्रीनगर होकर केदारनाथ और बदरी-नाथ जाते हैं और बहुतेरे गङ्गोत्रीसे कई मील दक्षिण आकर वहाँसे सीधा पूर्व एक दूसरी राहसे केदारनाथसे १५ मील फासिले पर त्रियुगीनारायण पहुँचकर केदारनाथ जाते हैं; परन्तु यह राह पगदण्डी है और राहमें सब जगह दूकान नहीं है। श्रीनगरसे टिहरी होकर गङ्गोत्री तक मार्ग अच्छा है। खाने पीनेका सामान सर्वत्र मिलता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कंदपुराण—(केदारखण्ड, प्रथम भाग, ९३ वाँ अध्याय) हिमालयके वारणावत शिखरके ऊपर उत्तर वाहिनी भागीरथी गङ्गाके तट पर उत्तरकाशी है। वहाँ अस्सी और वरुणा नामकी दो पवित्र नदियों और अनेक महर्षियोंके स्थान विद्यमान हैं। उस स्थान पर परशुरामजीने कठिन तप किया था।

पूर्वकालमें इन्द्रादिक देवता और मुनिगणोंने हिमालय पर्वतपर जाकर महादेवजीसे विनय किया कि हे महाराज ! तुमने शाप दिया है कि कलियुगमें काशी अन्तर्द्धान हो जायगी, तब विना काशीके कलियुगके मनुष्योंकी किस भांति गति होगी और तुम तब कहां निवास करोगे ?। महादेवजी बोले कि जब भूतलमें बहुत पाप होने लगेंगे और यवन लोग व्याप्त हो जायँगे, तब काशी और सम्पूर्ण अन्य तीर्थोंके साथ हिमवान् पर्वतके ऊपर उत्तर वाहिनी भागीरथीके समीप हमारा निवास होगा। अस्सी, वरुणा इत्यादि काशी के सम्पूर्ण तीर्थ वहाँ वास करेंगे। उत्तरकाशीके दर्शन मात्रसे मनुष्य मुक्त हो जाँयगे।

वाराणसीके समान उत्तर काशी है; वहां तीन रात्रि उपवास करके शिवजीकी पूजा करनेवालेको किसी स्थानमें मरे; अवश्य शिवलोक मिलता है। वहाँ मणिकर्णिकामें स्नान करके पितरोंके तर्पण करनेसे पितर लोग सैकड़ों कल्प तक तृप्त रहते हैं। वहां मृत्यु होनेसे मनुष्य मोक्ष पाता है।

(९५ वाँ अध्याय) उत्तरकाशीके ब्रह्मकुण्डमें स्नान करनेसे ब्रह्मलोक मिलता है। उसके नीचे भागमें रुद्रकुण्ड है, जिसमें स्नान करनेवाला मनुष्य बहुत काल तक रुद्रलोकमें निवास करता है और पृथ्वीमें आने पर सातों द्वीपका राजा होता है। उसी स्थानमें रुद्रेश्वर शिवलिङ्ग हैं, जिनके एक बार दर्शन करनेसे मनुष्य ज्ञानी हो जाता है और अपने कुलके सहित शिवलोकमें जाता है। उससे नीचे गङ्गा और वरुणाका सङ्गम है; उस स्थानपर आषाढ़ मासके आषाढ़ा नक्षत्रमें स्नान करनेसे मनुष्य कोटि जन्मके अर्जित पापोंसे छूट कर मुक्ति लाभ करता है। उत्तरकाशीके अस्सी और वरुणाके संगम पर स्नान करनेसे कृमि, कीटभी मुक्त हो जाते हैं। वहाँ विष्णुकुण्ड है, जिसमें स्नान करनेसे मनुष्य विष्णुरूप हो जाता है और वहाँ पिण्डदान करनेसे कोटिकुलका उद्धार होता है। पूर्वकालमें दुर्योधनने उसी वारणावत क्षेत्रके "जतुगृह,, में पाण्डवोंके जलानेका प्रयत्न किया था। अब तक भी वहां जतु देख पड़ता है। उत्तरकाशीका विस्तार पांच कोसमें है।

मानसरोवर।

गङ्गोत्रीसे मुचकुन्द कुण्ड होते हुए साधु लोग मानसरोवर आते हैं। राहमें दूकानें नहीं हैं, न किसी बस्तीमें दाम देकर खानेका सामान मिलता है। साधु लोग बस्तीमें भोजन-का सामान मांगकर खालेते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा महाभारत-(अनुशासन पर्व्व-२५ वाँ अध्याय) उत्तर मानसमें जानेसे मनुष्य पापसे मुक्त होता है ।

कूर्मपुराण-(उपरिभाग, ३६ वाँ अध्याय) मानसरोवरमें स्नान करनेसे इन्द्रका अर्द्धासन मिलता है ।

दूसरा अध्याय ।

(गढ़वाल जिलेमें) देवप्रयाग, भिल्लेश्वर, श्रीनगर, पौड़ी, टिहरी और रुद्रप्रयाग ।

देवप्रयाग ।

लक्ष्मणझूला—हृषीकेशसे १ मील उत्तर गङ्गाके दाहिने किनारे पहाड़ीके पास मौनीकी रेतीमें शत्रुघ्नजीका छोटा मन्दिर है । शत्रुघ्नजीकी मूर्त्तिके बायें बदरीनारायणकी चतुर्भुजी मूर्त्ति है । वहाँ टिहरीके राजाके कर्मचारी झम्पान और कण्डीके कुलियोंसे प्रति झम्पान और प्रति कण्डी ४) रुपये महसूल लेकर झम्पानके सवार और कुलियोंके नाम अपनी बहीमें लिख लेते हैं ।

शत्रुघ्नजीके मन्दिरसे लक्ष्मणजीके मन्दिर तक १ मील सुगम चढ़ाई उतराईकी राह गङ्गाके किनारे किनारे गई है । यहाँ शिखरदार मन्दिरमें २ हाथ ऊँची गौराङ्ग लक्ष्मणजीकी मूर्त्ति है । मन्दिरके जगमोहनमें एक और बदरीनाथकी एक प्राचीन मूर्त्ति; फर्शके नीचे एक गुम्बजदार मन्दिरमें लक्ष्मणेश्वर महादेव और उनकी चारोंओर दश दूसरे शिवलिङ्ग हैं । यहाँ एक छोटी धर्मशाला और चार पांच दूकानें हैं ।

मन्दिरसे करीब ¼ मील आगे गङ्गाजीपर लक्ष्मण झूला नामक लोहेका लटकाऊ पुल है ।

लक्ष्मणझूला ।
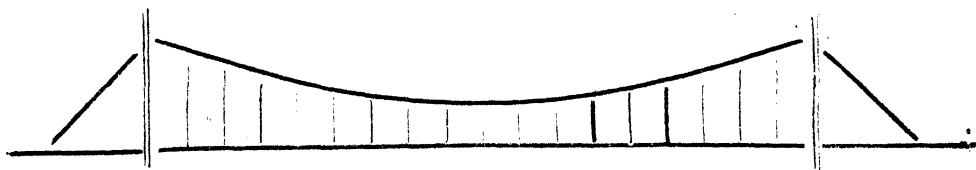
गङ्गाके दोनों किनारोंपर पोख्ते दोदो पाये बने हैं, जिनके शिरोंपर इस किनारसे उस किनारे तक लोहेके मोटे मोटे कई एक रस्से (बरेह) लगे हैं, जो पुलसे बाहर जाकर दोनों ओर नीचे मुख करके जमीनपर खूँटेमें बँधे हैं । दोनों ओरके बरहोंके नीचे भी इस किनारेसे उस किनारे तक लोहेके रस्से हैं । ऊपर और नीचेके रस्सोंके बीचमें लोहेके खड़े छड़ लगे हैं, जो नीचेके बरहोंको थाँभ रक्खे हैं । नीचेके दोनों ओरके बरहोंपर तख्ते पाटकर उसपर सुर्खी बिछा दी गई है; जिसपरसे झम्पान कण्डी, मनुष्य, घोड़े, भेड आदि सब पार होते

हैं। सम्पूर्ण पुलका बोझ ऊपरवाले रस्सोंपर रहता है। यह पुल २२५ फीट लम्बा है, इसको ३२०००) रुपयके खर्चसे झुंझुनुवाले राय सूर्य्यमलने बनवाया। सन् १८९४ ई० में गोहना झीलके टूट जानेपर गङ्गाकी बाढ़से, जब २० फीटसे अधिक ऊँचा पानी इसपर होगया था, यह पुल टूट गया था; परन्तु अब मरम्मत होनेके कारण ज्यौंका त्यौं होगया है। पुलके पास जहां ध्रुवकुण्ड गङ्गाजीमें गुप्त है वहाँ ध्रुवजीकी एक प्रतिमा है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्द पुराण-(केदार खण्ड; दूसरा भाग, २१ वाँ अध्याय) कुब्जाम्रक तर्थिके उत्तर ऋषि पर्वतके निकट गङ्गाके पश्चिम तटपर मुनियोंका तपोवन है। उस स्थानके नीचेके भागकी एक गुहामें शेषजी स्वयं निवास करते हैं।

श्रीरामचन्द्रजी रावणको मारकर सीताजी और लक्ष्मणजीके सहित अयोध्यापुरीमें आये और अपने पिताके राज सिंहासनपर विराजे। उसके पश्चात् लक्ष्मणजीको राजयक्ष्मा रोग हुआ। श्री रामचन्द्रके पूछनेपर महर्षि वशिष्ठने कहा कि लक्ष्मणने रावणके पुत्र इन्द्रजीतको, जो ब्राह्मण था और युद्धसे भागकर तप करने गया था, मारा, उसी दोषसे इनको यह रोग हुआ है। यह कुब्जाम्रक तर्थिमें जाकर तप करें तब रोगसे विमुक्त हो जायंगे और तुम भी रावण वधके पापसे छूटनेके लिये तपका प्रयत्न वहीं करो।

(२३ वाँ अध्याय) कुब्जाम्रकसे डेढ़ कोस उत्तर गङ्गाके तटमें अब तक शेषजी विद्यमान हैं। श्री लक्ष्मणजीने वहाँ जाकर १२ वर्ष निराहार रह शिवका तप किया। उसके पश्चात् वह १०० वर्ष वायु भोजन करके और १०० वर्ष पत्र, फल खाकर एक चरणसे खड़े हो तप करते रहे। तब शंकर भगवान् प्रकट होकर उनसे बोले कि हे लक्ष्मण! हमारे प्रसादसे तुम्हारा सब पाप छूट गया। इस स्थानमें एक बार स्नान करनेसे मनुष्य ३ करोड़ ब्रह्महत्यासे विमुक्त हो जायगा; तुमने तो मुनिहंता, पापी राक्षसको मारा है। तुम्हारा रोग अब छूट गया। अबसे यह स्थान तुम्हारे नामसे प्रसिद्ध होगा और हम लक्ष्मणेश्वर नामसे यहाँ स्थित रहेंगे। मेरे दर्शनसे पापियोंका भी मोक्ष हो जायगा। शिवजीके अंतर्द्धान होजानेपर लक्ष्मण जी अपने पूर्ण अंशसे वहाँ स्थित हुए और उनके वाम भागमें लक्ष्मणेश्वर शिव (प्रतिमारूप) विराजमान हैं, जिनके दर्शन करनेसे सम्पूर्ण पाप छूट जाता है। गङ्गाके पश्चिम तीरपर लक्ष्मणकुण्ड है। वहाँ स्नान और जप करनेसे अनन्त फल लाभ होता है।

शिवपुराण (८ वाँ खण्ड-१५ वाँ अध्याय) में लिखा है कि कुब्जाम्रक तीर्थ और पूर्णतर्थिके पास गङ्गाके बीच सोमेश्वर महादेव हैं। गङ्गाके पश्चिमी तटपर तपोवन है, यहाँही लक्ष्मणजीने बडा तप किया था और शिवजीकी कृपासे पवित्र होगये।

वनसे आने पर लक्ष्मणजीको क्षयीका रोग हुआ क्योंकि उन्होंने मेघनाद ब्राह्मणको मारा था। वशिष्ठजीके उपदेशसे लक्ष्मणजी तपोवनमें गये और शिवजीका तप करके उनके वरदानसे रोगसे विमुक्त हुए। शिवजी लिङ्गरूपसे वहाँ रह गये और लक्ष्मणेश्वर नामसे विख्यात हुए। लक्ष्मणजी भी शेषका शरीर धारण कर उसी स्थान पर स्थित हुए हैं।

फुलवाड़ी चट्टी लक्ष्मण झूलासे गङ्गा पार होकर बायें किनारेसे चलना पड़ता है। गङ्गाके दाहिनें टिहरीके राजाका राज्य और बायें अङ्गरेजी राज्य है। झूलाके ½ मील आगेसे केदारनाथ और बदरीनाथ तक मील सूचक पत्थर गड़े हैं।

लक्ष्मण झूलासे १ ३/४ मील पर एक जलका झरना और २ ३/४ मील पर दूसरे झरने पर पनचक्कीका मकान है।

पनचक्की साधारण चक्कियों (जाँताओं) से बड़ी होती है और पानीके चलानेसे चलती है। चक्कीके नीचे नदी या झरनेके पानीकी धार जोर शोरसे गिरती है। चक्कीसे नीचे पानीकी धार तक गोलाकार एक लकड़ी लगी रहती है, जिसके ऊपरके शिरे पर लोहेका एक कील रहता है, जो चक्कीका तरवटा छेदकर उपरवटामें लगा रहता है। लकड़ीके नीचेके छोर पर चारों ओर कई खड़े तख्ते लगे रहते हैं; जिनमें पानीकी टक्कर लगनेसे लकड़ी घूमती है, जिसके साथ चक्कीका उपरवटा घूमता है। चक्कीके ऊपर जिन्सकी गावदुम टोकड़ी रहती है, जिससे धीरे २ जिन्स चक्कीमें गिरती है। चक्कीके ऊपर सुन्दर मकान बना रहता है। पनचक्कीसे १/२ मील और लक्ष्मणझूलासे ३ १/२ मील गङ्गाके बायें पानीके पास फुलवाड़ी चट्टी है। झूलासे वहाँ तक मार्ग सुगम चढ़ाव उतारका है। वहाँ गङ्गाके किनारे कुछ मैदान है। सन् १८९४ की बाढ़में वहाँकी दूकानें बह गईं। अब टट्टी और फूसके छप्परोंसे बहुतेरे मकान बने हैं।

फुलवाड़ीचट्टीसे गङ्गा बायें ओर छूट जाती है। हिउल नदीके बायें किनारेसे चलना होता है। फुलवाड़ीसे २ १/४ मील आगे सेमलचट्टीपर टट्टीकी कई दूकानें और एक पानीका बड़ा झरना और ३ १/४ मील आगे गूलरचट्टी पर गूलरके कई वृक्ष और टट्टीकी कई दूकानें हैं। वहाँसे हिउल नदी पार कर उसके दहिने किनारेसे चलना होता है। फुलवाड़ी चट्टीसे ५ मील आगे एक झरना; नदीके उस पार बैरागड़ा गाँव और एक पनचक्की; ५ १/४ मील आगे कई छप्परोंकी मोहनचट्टी; ५ १/२ मील पर एक झरना; ६ ३/४ मील पर तक दूसरा झरना और ८ मील पर बिजनी चट्टी है। मोहनचट्टीके एक मील पहलेसे बिजनीचट्टी तक नदीके दोनों ओर खड़े पहाड़के बगलोंपर खेतोंकी भूमिके असंख्य टुकड़े और जगह जगह पत्थर और टट्टीके मकान देख पड़ते हैं। मोहनचट्टीसे बिजनीकी कड़ी चढ़ाई आरम्भ होती है।

बिजनी चट्टी—बिजनीचट्टी पर मोदियोंके चार पाँच बड़े बड़े मकान, जिनमें पत्थर और लकड़ीकी दुमंजिली दुकानें हैं, एक पक्की सर्कारी धर्मशाला, दो झरने और आमके बड़े बड़े ५ पेड़ हैं और पहाड़के ऊपर बिजनीगाँव बसा हुआ है।

बिजनीचट्टीसे आगे २ ३/४ मील कुण्डचट्टी, ४ ३/४ मीलके सामने नीचे नन्दगाँवमें ५ ३/४ मील एक छोटा झरना और ६ मील बन्दरचट्टी है।

बिजनीचट्टीसे २ मील आगे सुगम चढ़ाईसे हिउल नदी और गङ्गाके बीचकी चोटी पर आदमी पहुँचते हैं। ऊपरसे गङ्गाकी धार नालाके समान देख पड़ती है। हिउल नदी, जो फुलवाड़ीचट्टीसे मिलती है, १० मीलके पीछे वहाँ छूट जाती है। वहाँसे गङ्गाके बायें किनारे चलना होता है। कुण्डचट्टी गहरी जमीन पर है। चट्टी पर एक मोदी, टट्टीके दो तीन मकान और एक छोटा झरना है।

बन्दरचट्टी—कुण्डचट्टीके १ मील पहलेसे घुमाव राहकी कठिन उतराई है। बन्दर चट्टी, गङ्गाके किनारे उसके पानीके पास है। वहाँ २ पुरानी पक्की धर्मशालायें और नन्द-गाँवके मोदियोंकी टट्टी और छप्परकी बड़ी २ कई दूकानें हैं। सन् १८९४ की बाढ़से पहली दूकानें बहगईं और एक धर्मशालाका ओसारा टूट गया। चट्टीके पास झरना नहीं है। सब लोग गङ्गाका पानी पीते हैं।

बन्दर चट्टीसे आगे थोड़ी दूरपर छोटी बन्दर चट्टी और एक छोटा झरना, २$\frac{१}{४}$ मीलपर दूसरा झरना, २$\frac{३}{४}$ मीलपर तीसरा छोटा झरना और ३$\frac{१}{४}$ मीलपर महादेव चट्टी है।

बन्दर चट्टीसे १$\frac{१}{४}$ मील आगे एक कड़ी चढ़ाईके उपरान्त पर्वतकी चोटीपर पहुँचते हैं। उससे आधा मील आगे खड़ी उतराई है।

महादेवचट्टी—महादेवचट्टीपर मोदियोंकी तीन चार दूकानें और पांच सात छप्पर हैं। ८० सीढ़ियोंके ऊपर पत्थरके टुकड़ोंसे छाई हुई एक कोठरीमें शिव लिङ्ग है। वहाँ गङ्गाका पानी मिलता है और किनारेपर मैदान है।

महादेव चट्टीसे आगे १$\frac{१}{२}$ मीलपर एक बहुत बड़ा झरना, १$\frac{३}{४}$ मीलपर एक कोठरीमें गरुड़की छोटी मूर्त्ति; पानीका एक छोटा हौज और दो गुफायें ४ मीलपर सेमालो चट्टी; ५$\frac{३}{४}$ मीलपर कण्डीकी छोटी चट्टी, एक झरना, एक कोठरीमें सीताजीकी मूर्त्ति और आमके कई वृक्ष; कुछ आगे २ झरने; ६$\frac{१}{४}$ मीलपर एक छोटा झरना और ६$\frac{१}{२}$ मीलपर कण्डीकी बड़ी चट्टी है। सड़कसे नीचे सेमालो चट्टी और सडकके ऊपर एक झरना है। झरनेका पानी लकडीके कई नालोंसे होकर चट्टीके पास जाता है।

कण्डीचट्टी—कण्डीकी बड़ी चट्टीपर मोदियोंके बड़े बड़े कई मकान, चट्टीके पास केले और आमके बहुतेरे वृक्ष और एक बड़ा झरना, चट्टीके नीचे एक और झरना है, जिसका पानी गाँववाले लेजाते हैं और चट्टीसे थोड़ी दूर एक टीलेपर कण्डी गाँवमें पत्थरके १५–२० मकान बने हुए हैं।

कण्डीचट्टीसे आगे १$\frac{१}{२}$ मीलपर एक झरना, ४ मीलपर व्यास गङ्गा और ४$\frac{१}{२}$ मीलपर व्यास चट्टी है। कण्डी चट्टीके दो मील आगेसे १$\frac{१}{२}$ मीलकी कठिन चढ़ाईके बाद पहाड़की चोटीपर पहुँचते हैं। उससे आगे $\frac{१}{२}$ मील कठिन उतराईके बाद व्यास गङ्गाका पुल मिलता है।

व्यास गङ्गाका पुल लक्ष्मणझूलाके ढांचेका १८० फीट लम्बा है; वहाँसे व्यास गङ्गाके पास जानेकी राह नहीं है। पुलसे $\frac{१}{४}$ मील उत्तर जाकर व्यासगङ्गा भागीरथी गङ्गामें मिल गई है। पुलके पाससे एक सड़क दक्षिण और व्यासगङ्गाके दहिने किनारे होकर बांगघाट होती हुई, जो वहाँसे १८ मीलपर है; निजाबाबादको गई है।

व्यासचट्टी—गङ्गाके बायें व्यासचट्टीपर एक सरकारी पक्की धर्मशाला, एक सरकारी मोदीकी दूकान, लकड़ी और खरसे बने हुए मोदियोंके बहुतेरे मकान और खेतका थोड़ा मैदान भी है, वहाँ गङ्गाका जल मिलता है। सन् १८९४ की बाढ़से वहाँकी पहली चट्टी और धर्मशालायें बहगई। उस समय वहाँ ३३ फीट ऊँचा पानी चढ़ा था। पहाड़के ऊपर नवगाँव नामक वस्ती है। चट्टीसे थोड़ी दूरपर एक झरना और $\frac{१}{२}$ मीलपर व्यास मन्दिर है। वहाँ आगे पीछे २ कोठरी हैं। भीतरकी कोठरीमें व्यास और शुकदेवकी छोटीमूर्त्ति हैं। मन्दिरके पास एक दूसरी कोठरी और एक छोटा झरना है।

व्यास मन्दिरसे १८ मील पूर्व गढ़वाल जिलेका सदर स्थान और पौड़ीको एक पहाड़ी सड़क गई है। व्यास मन्दिरसे आगे देव प्रयाग तक अधिकांश जगहोंपर पहली सड़कके ऊपर नई सड़क बनी है।

व्यासचट्टीसे आगे $\frac{१}{२}$ मील व्यास मन्दिर; १ मील एक झरना; २$\frac{३}{४}$ मीलपर छालुडो चट्टी; ५ मील उमरासू या अनरकोट चट्टी, ६ मील एक नदीपर ५६ फीट लम्बा काठका

पुल, ७ मील अनन्तराम पण्डाका मन्दिर, धर्मशाला, एक झरना और पन्त नामक बस्ती और व्यासचट्टीसे ९ मील, हृषीकेशसे ४२$\frac{3}{4}$ मील और हरिद्वारसे ५४$\frac{1}{4}$ मील देवप्रयाग है।

छालूडी नामक छोटी चट्टीके पास झरना है। उमरासू गाँवके पास उमरासू नामक बड़ी चट्टीपर छप्परकी दूकानोंके अतिरिक्त तीन चार बड़े बड़े पक्के मकान; २ झरने और बहुतेरे आमके पेड़ हैं। व्यासमन्दिरसे देवप्रयाग तक गङ्गाके दहिने पर्वतके कमर और शृंगोंपर जगह जगह छः सात बस्तियां देख पड़ती हैं। कई बस्तियोंमें पक्के मकान बने हुए हैं।

देवप्रयाग-देव प्रयागके पास गङ्गा उत्तरसे आई हैं और अलकनन्दा पूर्वोत्तरसे आकर गङ्गा (भागीरथी) में मिल गई हैं। अलकनन्दाके दहिने टिहरीके राजाका राज्य और बायें अङ्गरेजी राज्य है। देव प्रयागके पास अलकनन्दापर लोहेका लटकाऊ पुल है। वह पुल दोनों किनारोंके पायोंके भीतर २५० फीट लम्बा और भीतरी २४$\frac{1}{4}$ फीट चौड़ा है। अलकनन्दाके बायें किनारेपर अङ्गरेजी राज्यमें सरकारी धर्मशाला और चालिस पचास घरकी बाजार बनी थी, जिसमें सब तरहके दूकानदार रहते थे। वे सब दूकानें सन् १८९४ की बाढ़से बह गईं। अब वहाँ दो चार मकान बने हैं। और एक डाकखाना भी है।

अलकनन्दाके दहिने और गङ्गाके बायें सङ्गमके पास समुद्रके जलसे २२६६ फीट ऊपर टिहरीके राजाके राज्यमें पहाड़के बगलपर देवप्रयाग बसा है। पुलके पश्चिम चौरस फर्शके बीचमें रघुनाथजीका बड़ा मन्दिर है। मन्दिरके शिखरपर सुन्दर कलश और छत्र लगे हैं और भीतर रघुनाथजीकी श्याम रङ्गकी विशाल मूर्त्ति खड़ी है। उनके दोनों चरणों और हाथोंपर चाँदीकी जड़ाव, शिरपर सुनहला मुकुट, हाथोंमें धनुष, बाण और कमरमें ढाल, तलवार हैं। रघुनाथजीके बायें एक सिंहासनमें श्रीजानकीजी और दहिने राम और लक्ष्मणकी चल मूर्त्ति हैं, जो रामनवमी और बसन्तपञ्चमी आदि उत्सवोंमें बाहरके पत्थरके सिंहासनपर बैठाई जाती हैं। मन्दिरके आगे जगमोहनसे बाहर पीतलकी बनी हुई गरुडकी बड़ी मूर्त्ति है। मन्दिरके दहिने बदरीनाथ, महादेव और कालभैरव, पीछे महावीरजी और बायें महादेव हैं। लोग कहते हैं कि रघुनाथजीकी मूर्त्ति शङ्कराचार्य्यकी स्थापित की है। वहाँका पुजारी महाराष्ट्र ब्राह्मण है। मन्दिरका चोबदार सबेरेके दर्शनके समय एक पैसा लेकर यात्रीको मन्दिरमें जाने देता है।

रघुनाथजीके मन्दिरसे १०० सीढ़ीसे अधिक नीचे भागीरथी और अलकनन्दाका संगम है। इस संगमपर अलकनन्दाके निकट वशिष्ठकुण्ड और गङ्गाके समीप ब्रह्मकुण्ड चट्टानमें थे, जो सन् १८९४ की बाढ़के समय जलके नीचे पड़ गये; अब इनमें कोई स्नान नहीं कर सक्ता है। अब उस स्थानके ऊपर मुण्डन और स्नान होता है और जवके पिसानकी १६ गोलियां बनाकर पितरोंको पिण्डदान दिया जाता है। वहाँ एक छोटी और एक बड़ी गुफा है। छोटी गुफामें महादेव स्थित हैं।

सन् १८९४ ई० की बाढ़के समय रघुनाथजीके मन्दिरके नीचेकी बस्ती, बाजार, धर्मशाला और कई देवस्थान बहगये और ऊपरके सब बच गये। उस समय ७० फीट ऊँचा पानी बढ़ा था। देवप्रयागसे पूर्व ऊँची जमीनपर नई बस्ती बस रही है। रघुनाथजीके मन्दिरके

उत्तर एक छोटी धर्मशाला और मन्दिरसे करीब २०० सीढ़ीके ऊपर पर्वतपर क्षेत्रपालका मन्दिर है। देवप्रयागमें इन्दौरके महाराज और रायबहादुर सूर्य्यमलके सदावर्त लगे हैं। बदरीनाथके पण्डे देवप्रयागहीमें रहते हैं। वहाँ पण्डाही लोगोंके अधिक मकान हैं। पण्डे लोग वहाँसे या हरिद्वारहीसे धनी यात्रियोंके साथ बदरीनाथ जाते हैं। देवप्रयाग गढ़वाल जिलेके पांच प्रयागोंमेंसे एक है। दूसरे रुद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग, नन्दप्रयाग और विष्णुप्रयाग उससे आगे मिलते हैं।

संगमसे उत्तर स्थान स्थान पर गङ्गाके किनारोंपर वाराहशिला, बैताल शिला, पौष्प-मालतीर्थ, इन्द्रद्युम्न, बिल्वतीर्थ, सूर्यतीर्थ और भरतजीका मन्दिर है। बहुतेरे यात्री बैताल-शिलापर पिण्डदान करते हैं। एक स्थानमें गङ्गापर रस्सोंका झूला बना हुआ है।

गङ्गोत्रीके यात्री देवप्रयागसे गङ्गाके किनारे किनारे टिहरी होकर गङ्गोत्री जाते हैं। देवप्रयागसे लगभग २४ मील टिहरी और टिहरीसे ९६ मील गङ्गोत्री है। यात्रीलोग लौटते समय श्रीनगर या त्रियुगीनारायण होकर केदारनाथ और बदरीनाथ जाते हैं। (हृषीकेशका वृत्तान्त देखो)

केदारनाथ और बदरीनाथके यात्रियोंको देवप्रयागसे गङ्गा छूट जाती हैं; उनको वहाँसे अलकनन्दाके बायें किनारे चलना होता है। वे लोग लक्ष्मण झूलासे देवप्रयाग तक ३० मील गङ्गाके किनारे किनारे आते हैं; किन्तु लक्ष्मणझूला, फुलवाड़ीचट्टी, बन्दरचट्टी, महा-देवचट्टी, व्यासचट्टी और देवप्रयाग केवल इन्हीं ६ स्थानोंमें स्नान और जलपानके लिये गङ्गाजल मिलता है। शेष स्थानोंमें ऊपरसे गङ्गा देख पड़ती है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्दपुराण—(केदारखण्ड, तीसरा भाग, पहला अध्याय) गङ्गाद्वारके पूर्व भागमें गंगा और अलकनन्दाके सङ्गमके निकट देवप्रयाग उत्तम तीर्थ है, जिसके दर्शन और स्मरण मात्रसे ब्रह्महत्याके समान पाप नष्ट होजाता है; उस तीर्थमें किये हुए कर्मोंका फल अक्षय होता है। जो मनुष्य देवप्रयागमें पिण्डदान करता है, उसको फिर पितरकार्य करनेकी आवश्यकता नहीं रहती है। जिस स्थानपर गङ्गा और अलकनन्दाका सङ्गम है और साक्षात् श्रीरामचन्द्र, सीता और लक्ष्मणजीके सहित निवास करते हैं उस तीर्थका माहात्म्य कौन वर्णन कर सकता है।

देवप्रयागमें जिस स्थान पर ब्रह्माजीने तप किया, वह ब्रह्मकुण्ड प्रसिद्ध होगया। गङ्गाके उत्तर तटमें शिव तीर्थ है, जिसमें स्नान करनेसे कीट भी शिवरूप होजाता है। गङ्गाके निकट बैतालकी शिलाके पास बैतालकुण्ड है, जिसमें ५ दिन स्नान करनेसे मनुष्य शुद्ध होजाता है; उससे थोड़ी दूर पर सूर्यकुण्ड है, जिसमें स्नान करनेसे मनुष्य सब पापोंसे छूट जाता है। ये सब तीर्थ गंगाके उत्तर तटपर हैं। गंगाके दक्षिण भागमें ब्रह्मकुण्डसे ऊपर ४ हाथ प्रमाणका वशिष्ठ कुंड है, जिसके सेवन करनेसे मोक्ष मिलता है। वशिष्ठ तीर्थके ऊपर ८० हाथके प्रमाण पर वाराह तीर्थ है। गंगाके मध्यमें वाराही शिला है, जिसके स्पर्श करनेसे मुक्तिलाभ होता है और दर्शन करनेसे पितर लोग अक्षय लोक प्राप्त करते हैं। उससे ४ दण्ड दूर सूर्य्यकुंड है, जिसमें स्नानकरनेसे महापातकी मनुष्य भी मुक्ति पाता है। उससे एक बाणके अन्तर पर पौष्पमाल तीर्थ है। उससे ६ दण्ड आगे इन्द्रद्युम्नका तप, स्थान इन्द्र-द्युम्न तीर्थ है। उसके आधे कोसकी दूरीपर बिल्वतीर्थ स्थित है, जहाँ महादेवजी सर्वदा

निवास करते हैं। उस स्थान पर गंगामें स्नान करके १० दिन निवास करनेसे सिद्धि प्राप्त होती है। ये तीर्थ गंगाके ऊपरि भागमें हैं।

(दूसरा अध्याय) सतयुगमें देवशर्मा नामक प्रसिद्ध मुनि हुआ; वह देवप्रयागमें जाकर विष्णु भगवान्‌का तीव्र तप करने लगा। जब मुनिने १० सहस्र वर्षतक पत्ता खाकर और एक हजार वर्ष एक पादसे खड़ा रह कर उग्र तप किया, तब लक्ष्मीजी सहित विष्णु भगवान् प्रकट हुए और बोले कि हे तपोधन! मैं प्रसन्न हूं तुम इच्छित वर मांगो। देवशर्मा बोला कि हे प्रभो! हमारी निश्चल प्रीति तुम्हारे चरणोंमें रहे; यह पवित्र क्षेत्र कलियुगमें सम्पूर्ण पापोंका नाश करनेवाला होय; तुम सर्वदा इस क्षेत्रमें निवास करो और जो पुरुष इस क्षेत्रमें तुम्हारा पूजन और संगममें स्नान करें उनको परम गति मिले। भगवान्‌ने कहा कि हे मुनि! ऐसाही होगा। मैं त्रेता युगमें राजा दशरथका पुत्र राम नामसे विख्यात होकर रावणादिक दैत्योंको मारूंगा; और कुछ दिनों तक अयोध्याका राज्य भोग करके इस स्थान पर आऊंगा; तब तक तुम इसी स्थान पर निवास करो; फिर हमारा दर्शन पाकर तुम परम गति पाओगे, तबसे इस तीर्थका नाम तुम्हारे नामके अनुसार देवप्रयाग होगा। विष्णु भगवान्‌के चले जाने पर देवशर्मा उस स्थानमें रहने लगा। विष्णु त्रेता युगमें राजा दशरथके गृह जन्म लेकर राम नामसे विख्यात हुए। उन्होंने रावण वध करनेके पश्चात् आकर देवशर्माको दर्शन दिया और कहा कि हे मुनीश्वर! अबसे यह तीर्थ लोकमें प्रसिद्ध होगा। तुमको सायुज्य मुक्ति मिलेगी। ऐसा कह रामचन्द्रजी सीता और लक्ष्मणके सहित उस स्थान पर रह गये।

(तीसरा अध्याय) ब्रह्माजीने सृष्टिके आरम्भमें दश सहस्र और दश सौ वर्ष समाधिनिष्ठ होकर कठिन तप किया। तब विष्णु भगवान् उस स्थानमें प्रकट हुए और बोले कि हे ब्रह्मन्! वर मांगो। ब्रह्माजीने कहा कि हे प्रभो! मुझको जगत्‌की सृष्टि करनेका सामर्थ्य होय और यह स्थान पवित्र तीर्थ होजाय। भगवान् बोले कि तुम सृष्टि करनेमें समर्थ होगे; यद्यपि यह तीर्थ पवित्र है तिसपर भी २८ वें मन्वन्तरमें जब राजा भगीरथ इस मार्गसे गंगाजीको ले जायगा तबसे यह तीर्थ अति पवित्र होजावेगा और इस स्थानका नाम ब्रह्मतीर्थ होगा।

(चौथा अध्याय) ब्रह्मतीर्थके निकट महामति वशिष्ठजीने निवास किया। जो मनुष्य वहाँ एक बारभी स्नान करता है; वह किसी स्थानमें मरे; अवश्य ब्रह्ममें लीन होगा।

(५ वाँ अध्याय) गङ्गा और शांता नदीके संगमके पास, जिसकी उत्पत्ति दशरथाचलसे हुई है; शिव तीर्थ है, जहां श्रीरामचन्द्रजीने अनेक शिवलिंग स्थापन किये हैं। (६ ठा अध्याय) शिव तीथके ऊपरके मार्गमें वैतालकुण्डके समीप वैतालकी शिला है। वैताल कुण्डमें स्नान और शिलाका स्पर्श करके नारायणका ध्यान करनेसे सर्व यज्ञ, तीर्थ और दान करनेका फल प्राप्त होता है। उस कुण्डके प्रभावसे बड़े बड़े वैताल परमगतिको पाये हैं। उस कुण्ड और शिलापर स्नान दान और पितरोंके पिण्ड दान करनेसे कोटि गुणा फल लाभ होता है।

(७ वाँ अध्याय) वैतालतीर्थसे ऊपर एक बाणकी दूरीपर सूर्यतीर्थ है, जहां स्नान करनेसे मनुष्य कुष्ठ रोगसे विमुक्त हो जाता है। पूर्व कालमें मेधातिथि नामक ब्राह्मणने

देवप्रयागमें जाकर सूर्य भगवान्‌का तप किया था। सूर्य भगवान्‌ने प्रगट होकर उससे कहा कि वर मांगो। मेधातिथि बोले कि हे भगवन्! तुम्हारे चरणोंमें सदा मेरी भक्ति होय; तुम हमारे साथ यहाँ निवास करो, यह पवित्र कुण्ड हो और यह तीर्थ तीनोंलोकोंमें विख्यात हो जाय। सूर्य भगवान्‌ने कहा कि ऐसाही होगा। तबसे यह तीर्थ पवित्र और प्रसिद्ध हुआ। माघ सुदी सप्तमीके दिन सूर्यकुण्डमें स्नान करनेवाला मनुष्य बहुत काल तक सूर्यलोकमें निवास करके ब्राह्मणके गृह जन्म लेकर वेद वेदांग पारग होता है।

(८ वाँ अध्याय) वशिष्ठतीर्थसे ८० हाथ ऊपर वाराहतीर्थ है। सतयुगमें सर्वबन्धु नामक ब्राह्मण वाराह भगवान्‌का बड़ा भक्त था। उसने देवप्रयागमें जाकर वाराह रूप विष्णुका बहुत काल तक तप किया। वाराहजी प्रकट हुए। सर्वबन्धुने यह वर मांगा कि हे भगवन्! तुम नित्य हमारे साथ यहाँ निवास करो। भगवान् बोले कि मैं सर्वदा इस तीर्थमें वास करता हूँ। इस तीर्थका नाम अबसे वाराहतीर्थ होगा। मैं गङ्गामें शिला रूपसे निवास करूंगा। जो मनुष्य इस कुण्डमें स्नान करेगा उसको सायुज्य मुक्ति मिलेगी। जो तृप्ति पितरोंको सहस्र वर्ष श्राद्ध करनेसे होती है, वह तृप्ति केवल इस तीर्थमें तर्पण करनेसे होगी। ऐसा कह भगवान् शिला रूपसे गङ्गामें स्थित हुए। उन्होंने अपने दोनों बगलोंमें शिवजीको स्थापित किया।

(१० वाँ अध्याय) महर्षि विश्वामित्र हिमवान् पर्वतपर मानसरोवरके समीप उग्र तप करने लगे। इन्द्रादिक देवताओंने उनके तपसे व्याकुल होकर ब्रह्माजीके आदेशानुसार तपमें विघ्न डालनेके लिये पुष्पमाला नामक किन्नरीको भेजा, वह अप्सराओंके साथ विश्वामित्रके निकट जा बीणा बजाकर गान करने लगी। कामदेवने अपने कुसुम बाणको विश्वामित्र पर छोड़ा। विश्वामित्रका ध्यान छूट गया। उसने अपने आगे खड़ी पुष्पमालाको देखा। ऋषिके पूछने पर उसने अपने आनेका सब वृत्तान्त कह सुनाया। मुनिने शाप दिया कि तुम मकरी अर्थात् घड़ियालकी स्त्री होजाओ। जब पुष्पमाला प्रार्थना करने लगी तब विश्वामित्रने कहा कि तुम देवप्रयागमें जाकर वहां कुछ काल निवास करो। जब त्रेतायुगमें लक्ष्मणके सहित रामचन्द्र वहाँ आवेंगे तब उनके दर्शन करनेसे तुम्हारे शापका अन्त होगा। पुष्पमाला देवप्रयागमें आकर गङ्गाजीमें मकरी रूपसे रहने लगी। त्रेतायुगमें लक्ष्मणके सहित श्रीरामचन्द्र आये। जब स्नानके लिये गङ्गामें प्रवेश करने पर मकरी उनको निगलने लगी तब उन्होंने उसका शिर काट डाला। उसी समय मकरी अपना शरीर छोड़ कर सुन्दर स्त्री हो रामचन्द्रजीकी स्तुति करने लगी। भगवान् बोले कि हे किन्नरी! तुम हमारे धाममें जाओ, आजसे यह तार्थ पौष्पमाल नामसे प्रसिद्ध होगा। यहाँ स्नान, दान, जप, होम करनेवालों पर मैं प्रसन्न हूँगा। इस स्थानपर पितरोंके तर्पण करनेसे पितर लोग असंख्य वर्ष पर्यन्त स्वर्गमें निवास करेंगे। उसी समय वह किन्नरी शापसे विमुक्त होकर विष्णुधामको चली गई।

(११ वाँ अध्याय) जिस समय वामनजीने अपने चरणसे भूमण्डलको नापा था उसी समय उनके चरणकी अंगुलीके नखसे जलकी धारा निकली। वह ध्रुवके मण्डल तथा सप्तर्षि मण्डलमें होती हुई मेरुके शृङ्गपर ब्रह्मलोकमें गिरी। वहाँसे वह धारा ४ भागोंमें विभक्त होकर पृथ्वीमें आई और क्षार समुद्रमें मिली। उनमें सीता नामक धारा गन्धमादनके शिखर

पर गिरी; भद्रा पूर्व दिशामें भद्राश्ववर्षमें गई; चक्षुनाम धारा माल्यवान्‌के शिखरसे पश्चिम दिशामें केतुमाल पर्वतपर गई और अलकनन्दा नामक धारा दक्षिणको बहती हुई हिमालयपर आई। यहाँ शिवजीने उसको अपनी जटामें रखलिया। कुछ दिनोंके उपरान्त राजा भगीरथने शिवजीको प्रसन्न करके अपने पितरोंके उद्धारके लिये उनसे उस गङ्गाको माँगा। शिवजीने गंगाको देदिया। गंगा हिमालयसे नीचेके शृंगपर गिरीं। उनके प्रबल वेगसे शृंग दो भाग हो गयीं। इस कारण गंगा दो धारा होकर भारतवर्षमें आई। उनमेंसे एक धारा अलकापुरी होकर आई;इसलिये उसका नाम अलकनन्दा पड़ा। देवप्रयागमें आकर दोनों धारा फिर एकमें मिल गईं। संगमसे बाणजा नदी तक देव प्रयाग क्षेत्र है।

संगमके पूर्व भागमें गंगाके दक्षिण तटपर तुण्डीश्वर महादेव हैं। अलकनन्दाके किनारे एक पवित्र कुण्ड है, जिसके निकट तुण्डी भीलने बहुत काल तक शिवका तप किया था, जिससे शिवजी वहाँ तुण्डीश्वर नामसे स्थित होगये।

श्रीरामचन्द्रने देवप्रयागमें जाकर विश्वेश्वर शिवकी स्थापना की। उससे ऊपर क्षेत्रराज भैरव हैं। जो मनुष्य विश्वेश्वरके विना दर्शन किये हुए तीर्थ यात्रा करते हैं उनका सम्पूर्ण फल निष्फल होजाता है। क्षेत्रपाल भैरवका यथाविधि पूजन करके तब रामचन्द्रका दर्शन करना चाहिये।

रानीबागचट्टी।

देवप्रयागसे आगे $\frac{1}{2}$ मील झरनेका पुल और एक बहुत छोटासा मन्दिर १$\frac{1}{2}$ मील बड़ा झरनाका पुल; २$\frac{1}{2}$ मील गोविन्दकोठी; २$\frac{1}{2}$ मील अलकनन्दाके दहिने पर्वतके ऊपर दो बस्ती, ४$\frac{1}{2}$ मील बड़े झरनेका पुल; ५$\frac{1}{4}$ मील पिहड़ीका झूला; ५$\frac{1}{2}$ मील एक छोटा झरना और एक साधुकी झोपड़ी और ७$\frac{1}{2}$ मीलपर रानीबाग चट्टी है।

गोविन्दकोटी स्थानपर एक छोटे मन्दिरमें गोविन्दजीकी मूर्त्ति; मन्दिरके आगे पीतलकी गरुड़की प्रतिमा; मन्दिरके पास २ कोठरियाँ और एक झरना है।

गोविन्दकोठीसे २$\frac{3}{4}$ मील आगे उस पारकी ओर पांच सात छप्परोंका एक छोटा गाँव है। गाँव वालोंने पार जानेके लिये रस्सीमें पिहड़ीका झूला बनाया है। एक किनारेसे दूसरे किनारे तक चार पांच रस्से लगे रहते हैं; उसमें मचियेके समान एक पिहड़ी लटकी रहती है। उसपर एक आदमी बैठजाता है। वह एक रस्सेको खींचता हुआ और दूसरेको छोड़ता हुआ पार हो जाता है। और कोई चीज पिहड़ीपर रखकर रस्सीसे एक किनारेसे दूसरे किनारे तक लोग उसे खींच लेते हैं। इस झूलेको उधरके लोग डील्ह या डीढ़ा कहते हैं। उससे एक मील आगे तक अलकनन्दाके बाँये नीचा ऊँचा मैदान और दहिने खेतीकी जमीन और एक बस्ती है।

रानीबागचट्टीपर अच्छी अच्छी दुकानें, एक धर्मशाला और एक बाग था, जो सन् ९४ की बाढ़में बहगये। अब लकड़ीकी बल्ली और फूससे दुकानें बनी हैं। वहाँ अलकनन्दा और झरनाका पानी मिलता है और ठण्ढी और मनोहर झाडियाँ हैं, जिनमें मुछाली नामक एक छोटी बस्ती देखनेमें आती है।

रानीबागचट्टीसे आगे १$\frac{1}{2}$ मीलपर एक झरना, अलकनन्दाके किनारे थोडा खेतीका मैदान, पानीके पास जानेकी राह और पर्वतपर बहुतेरे लंगूर बन्दर दिखलाई देते हैं, उससे

आगे एक झरना, उससे आगे छोटे झरनेका पुल, २ मीलपर पिहड़ीका झूला और २$\frac{3}{4}$ मीलपर रामपुर चट्टी है।

रामपुर चट्टीपर लकड़ी और फूसकी बहुतसी दुकानें, थोड़ा जंगलका मैदान और एक खुला हुआ झरना और चट्टीके पास रामपुर वस्ती है।

रामपुर चट्टीसे आगे ३ मील भगवान्‌चट्टी और ४$\frac{1}{2}$ मील भीलेश्वर महादेवका मन्दिर है।

भगवान्‌चट्टीपर अनेक दूकान्दारोंके मकान और झरने हैं। रामपुरचट्टीसे भिल्लेश्वर तक अलकनन्दाके किनारोंपर जगह जगह खेतीका मैदान है। और नदीके किनारोंपर तथा पर्वतके बगलोंमें बहुत पहाड़ी बस्तियाँ देखनेमें आती हैं।

भीलेश्वर।

भीलेश्वरके मन्दिरके मिलनेसे पहले ५२ फीट लम्बा काठका पुल, जो खाण्डव नदीपर बना है, लाँघना होता है। वहाँ खाण्डव नदी अलकनन्दासे मिलगई है। अलकनन्दाके बायें किनारेपर गुम्बजदार छोटे मन्दिरमें अनगढ़ भीलेश्वर शिव लिङ्ग हैं। उनका ताम्बेका अर्घा और चाँदीका छत्र बना है। पहला मन्दिर सन् १८९४ की बाढ़से बह गया, अब नया मन्दिर बना है; शिवलिंग वही है। मान्दिरके निकट २ छोटी कोठरियाँ हैं। इसी स्थानपर भीलरूप धारी सदाशिव और अर्जुनका परस्पर युद्ध हुआ था।

ढुण्ढम् नामक एक छोटी नदी उस पार अर्थात् अलकनन्दाके दहिने आकर उसीमें मिली है, जिसपर एकही मेहराबीका पुल है। पुराणोंमें उस संगमका नाम ढुण्ढप्रयाग और उसके पासके पर्वतका नाम इन्द्रकील पर्वत लिखा है। उस स्थानपर एक नया शिव मन्दिर बना है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(वनपर्व—३७ वाँ अध्याय) अर्जुन तपस्वियोंसे सेवित अनेक पर्वतोंको देखते हुए हिमाचल पर्वतके इन्द्रकील नाम स्थानपर पहुँचे। उस स्थानपर तपस्वीके रूपमें इन्द्रने अर्जुनको दर्शन दिया और कहा कि हे तात! जब तुम शूलधारी भूतोंके स्वामी शिवका दर्शन करोगे तब हम तुमको सब शस्त्र देंगे। अब तुम परमेश्वर शिवके दर्शनका यत्न करो। उनके दर्शन होनेसे सिद्ध होकर स्वर्गमें जाओगे। इन्द्रके जानेपर अर्जुन वहीं बैठकर योग करने लगे। (३८ वाँ अध्याय) अर्जुनका उग्र तप देखकर मुनीश्वरोंने महादेवके पास जाकर अर्जुनके तपकी प्रशंसा की। ३९ वाँ अध्याय) तपस्वियोंके जानेपर सदाशिव किरातका वेष धारण करके महा मेघकी शिखाके समान शरीर बनाकर धनुष, बाण लिये हुए अपने समान वेष वाली पार्वती और अनेक भूतोंके सहित; किरात वेष धारिणी अनेक स्त्रियोंको संग ले उस वनमें जा पहुँचे।

उसी समय दनुका पुत्र मूक नामक राक्षस सूकरका वेष बनाकर मारनेकी इच्छासे अर्जुनको देख रहा था। तब अर्जुनने गांडीव धनुष लेकर उस राक्षससे कहा कि मैं अभी तुमको यमके घर पहुँचाता हूँ। उस समय किरात रूपी महादेवने अर्जुनसे कहा कि पहले मैंने इसको मारनेकी इच्छा की है, तुम इसको मत मारो, परन्तु अर्जुनने उनका निरादर कर सूअरपर बाण चलाया। उसी समय किरातने भी सूअरको लक्ष करके उसपर बाण चलाया। जब वह मर गया तब तो यह कहकर कि, मेरे ही बाणसे यह सूअर मरा है, अर्जुन और

किरात दोनों परस्पर वाद विवाद करने लगे। अनन्तर अर्जुनको महा क्रोध हुआ; वे बाणास्त्र किरातको मारने लगे। किरात अर्जुनके बाणोंको सहने लगा। उसके पश्चात् वे दोनों परस्पर एक दूसरेको बाणोंसे विद्ध करने लगे। तब अर्जुनने किरातपर बाणोंकी वर्षा की। किरात रूपधारी शिव प्रसन्न चित्तसे बाणोंकी वर्षाको सहते हुए पर्वतके समान अचल हो खड़े रहे। उनके शरीरमें कुछ भी घाव न लगा। यह देख अर्जुनको सन्देह हुआ कि यह शिव या कोई यक्ष, राक्षस अथवा देवता तो नहीं है? फिर कहा कि यदि यह शिवको छोड़कर देवता या कोई यक्ष होगा तो अब मैं इसको कठिन बाणोंसे मारकर यमके घर पहुचाऊँगा। ऐसा कहकर अर्जुन बाणोंकी वर्षा करने लगा। शिव उन बाणोंको सहने लगे। जब क्षण भरमें अर्जुनके बाण चुक गये तब उन्होंने धनुषसे किरातका गला फांसकर वज्रके समान मुक्कोंसे किरातको बहुत मारा। जब पर्वतके समान किरातने इनके धनुषको भी ग्रासकर लिया, तब तो अर्जुनने खड्गसे किरातके शिरमें मारा, परन्तु उसके शिरमें लगनेसे वह उत्तम खड्ग भी टूट गया। तब अर्जुन शिला और वृक्षोंसे मारने लगा परन्तु किरात उनको भी सहने लगा। तब दोनोंका परस्पर मुक्केका युद्ध होने लगा। अनन्तर महादेवजीने अर्जुनके शरीरको पीड़ा दी और अपने तेजसे उनका तेज खींचकर उनके चित्तको मोहित कर दिया। तब अर्जुन निश्चेष्ट होकर पृथ्वीमें गिर पड़ा; श्वास भी बन्द होगया; परन्तु क्षण मात्रके पीछे वह चैतन्य होकर उठा और शरण देनेवाले भगवान् शिवकी शरणमें गया। उस समय अर्जुनने शिवकी मट्टीकी मूर्त्ति बनाकर उसपर माला चढ़ाई। जब अर्जुनने वही माला किरातके शिरपर देखी, तब वह किरातके चरणोंपर गिरपड़ा। शिव अर्जुनकी असाधारण वीरतासे प्रसन्न होकर पार्वतीके सहित प्रकट हुए। अर्जुनने शिवकी बड़ी स्तुति की।

(४० वाँ अध्याय) शिव बोले हे अर्जुन! पूर्व जन्ममें तुम नर नामक ऋषि थे। नारायण तुम्हारे साथी थे। बदरिकाश्रममें हजारों वर्ष तुमने तपस्या की थी। तुम्हीं दोनोंसे जगत् स्थित है। पीछे शिव अर्जुनको पाशुपत अस्त्र और स्वर्ग जानेकी आज्ञा देकर अन्तर्द्धान होगये। (यह कथा शिवपुराणमें ज्ञानसंहिताके ६४ वें अध्यायसे ६७ वें अध्याय तक है)।

स्कन्दपुराण—(केदारखंड, उत्तर भाग, ५ वाँ अध्याय) खांडव और गंगा अर्थात् अलकनन्दाके सङ्गमके समीप शिवप्रयाग है। उसी स्थानपर महर्षि खांडवने सदाशिवका तप किया था। उस स्थान पर भक्तिपूर्वक स्नान करनेवालेको ब्रह्मसायुज्य मिलता है। संगममें स्नान करके महादेवकी आराधना करनेसे मनुष्य तीनों लोकोंमें श्रेष्ठ होजाता है। उसी स्थान पर महादेवजीने इन्द्र पुत्र अर्जुनको दर्शन दिया था।

युधिष्ठिर आदि पांडवगण दुर्योधनसे द्यूतमें हार कर १२ वर्षके लिये वनमें गये। सब लोग शोचने लगे कि हम लोग दुर्योधनको किस प्रकारसे जीतेंगे। अर्जुनने कहा कि यदि पाशुपत अस्त्र मिले तब हम लोग कौरवों पर विजय लाभ कर सकते हैं। इसके उपरांत वह वहाँसे अकेले चलकर हिमालयके एक देशमें जाकर शिवका तप करने लगा। कुछ कालके पश्चात् शिवजी प्रसन्न होकर भीलरूप धारण कर हाथमें धनुष लिये हुए अनेक भीलोंके साथ अर्जुनके निकट आये। उन्होंने एक मायाका मृग बनाकर उसकी पीठमें बाण मारा। बाणोंसे बेधाहुआ मृग दूसरे वनमें भाग चला। तब अर्जुनने हँसकर अपने गांडीव धनुष

पर बाण चढ़ा कर उससे मृगको मारडाला । भीलराज और अर्जुन दोनों मृगके निकट जाकर परस्पर विवाद करने लगे । भीलराज कहते थे कि मेरे बाणसे मृग मरा है, इसको मैं लूंगा और अर्जुन कहते थे कि मेरे बाणसे मरा है यह हमारा है। अर्जुनने भीलराज पर बाण छोड़ा वह उनके शरीरमें लगकर चूर हो भूमिपर गिर पड़ा। तब वह शिवके साथके दूसरे किरातों को अपने बाणोंसे मारने लगे । उस समय पर्वतसे असंख्य किरात आकर पाषाण, लाठी और अनेक प्रकारके शस्त्रोंसे अर्जुनको मारने लगे । अर्जुनने अपने बाणोंसे सैकड़ों भीलोंको पृथ्वी पर गिरा दिया । बहुतेरे भील पर्वतपर भाग गये । तब वह भीलराजपर बाण वृष्टि करने लगे किन्तु उनके सम्पूर्ण बाण भीलराजके शरीरमें लगकर चूर चूर हो पृथ्वीमें गिर पड़े । उसके पश्चात् अर्जुनने धनुषसे भीलराजके मस्तकमें मारा । उससे भी भीलराजको चोट नहीं लगी। वह अर्जुनको देखकर बार बार हँसने लगे । तब अर्जुन लज्जित हो युद्ध परित्याग करके मुनियोंके तपःस्थलमें जाकर भीलराजको परास्त करनेके लिये सदाशिवकी आराधना करने लगे। उस समय इन्द्रकील पर्वतके कटि भागमें किरातोंका बड़ा किलकिला शब्द सुन पडा । तभीसे उस स्थानपर किलकिलेश्वर महादेव प्रसिद्ध होगये । भीलराज भीलोंको साथ लियेहुए अर्जुनके तपःस्थलमें पहुँचे । भीलराज और अर्जुनका रोमहर्षण युद्ध होने लगा । भीलराजने अर्जुनको पछाड़ दिया । तब अर्जुन दुःखित हो शिव शिव कहने लगे । जब उन्होंने अपनी चढ़ाई हुई पूजाकी सब सामग्री भीलराजके मस्तकपर देखी, तब उनको शिव जानकर स्तुति करने लगे । सदाशिव बोले कि हे वत्स ! मैं तुमपर प्रसन्न हूँ, तुम इच्छित वर माँगो। अर्जुनने कहा कि तुम अपना अस्त्र दो जिससे मैं अपने शत्रुओंको जीतूँ । महादेवजीने अर्जुनको मन्त्रके सहित पाशुपत अस्त्र दिया और कहा कि हे धनंजय ! तुम इससे शत्रुओंको जीतोगे; यह स्थान तुम्हारे तपसे पवित्र होगया। जो प्राणी सात रात्रि इस स्थानमें मेरा पूजन करेगा उसको परम सिद्धि प्राप्त होगी। ऐसा कह महादेवजी अंतर्द्धान होगये । उसी समयसे वहाँ भीलेश्वर महादेव प्रख्यात हुए, जिनका दर्शन, ध्यान तथा नामोच्चारण करनेसे महापातकी जीव भी सद्यः शुद्ध हो जाता है। अर्जुन शिवजीसे पाशुपत अस्त्र पाकर वहाँसे चलेगये।

(६ ठा अध्याय) गङ्गा और खाण्डव नदीके संगमसे आधे कोसपर कालिका नदीका संगम है, जिसमें स्नान करनेसे १०० यज्ञ करनेका फल मिलता है। उससे १ कोस दूर कारि पर्वतपर कारिनामक भैरव हैं। उससे आधे कोसपर वत्सजानामक नदी खाण्डवमें मिली है। संगमसे ऊपर शिरस्कूट स्थानपर नारायणी नदीका संगम और नारायणीके संगमसे २ कोस दूर राजिका नदीका संगम है ।

गंगाके उत्तर तीर पर ढुंढ प्रयाग तीर्थ है। पूर्वकालमें ढुंढोने ५ हजार ५ सौ वर्ष तक पत्ते भोजन करके तप किया था; तभीसे वह स्थान ढुंढप्रयाग करके प्रसिद्ध होगया। जो मनुष्य सोमवती अमावसको उस तीर्थमें स्नान करता है, उसको सब पुण्य और संपूर्ण यज्ञ करनेका फल लाभ होता है। वहाँ सूर्य और चन्द्रग्रहणमें स्नान करनेसे मनुष्य लोकमें धन्य हो जाता है। शिवप्रयागसे पूर्व गङ्गाके दक्षिण तटपर एक बाणके अन्तरमें शिवकुंड तीर्थ है, जहाँ शिवजी जलमें निवास करते हैं।

(१४ वाँ अध्याय) राजराजेश्वरी पीठसे कोसके अष्टांश भाग पर मनाहरी नामक पवित्र नदी है। उससे ४ बाण ऊपर देववती नदी, देववतीसे ५ बाण ऊपर मधुमती नदी, मधुमतीसे ४ बाण ऊपर मनोन्मती नदी, मनोन्मतीसे २ बाण ऊपर किलकिलेश्वर महादेव और किलकिलेश्वरसे ऊपर जीवंती नामक नदी है। जीवंती नदीके ऊपर उत्तर दिशामें सब कामनाको देनेवाला इन्द्रकील पर्वत है। पूर्वकालमें उस स्थान पर दुष्ट दैत्योंके द्वारा इन्द्र-कीले गये थे, (अर्थात् दैत्योंके भयसे वहाँ छिपकर रहे) इस लिये उस पर्वतका नाम इन्द्र-कील होगया । (श्रीनगरकी प्राचीन कथा देखो) पर्वतके शृङ्ग पर कपिल नामक शिवलिङ्ग है।

श्रीनगर।

भीलेश्वरसे १ मील आगे अलकनन्दा पर लोहेका लटकाऊ पुल है। अलकनन्दाके दहिने किनारे पर पुलके निकट टिहरीके वर्तमान नरेश महाराज कीर्तिशाहकी बसाई हुई नई बाजार और नई बस्ती है। उस पुलके पाससे एक रास्ता पश्चिमोत्तर टिहरीको, दूसरा रास्ता पूर्व दक्षिण पौड़ीको और तीसरा मार्ग पश्चिम-दक्षिण टिहरीके राज्यमें अलकनन्दाके दहिने किनारे होकर देवप्रयाग को गया है।

भीलेश्वरके मन्दिरके $\frac{3}{4}$ मील आगेसे अलकनन्दा और पर्वतके बीचमें १ मील लम्बा बालूका मैदान होगया है। अलकनन्दाके किनारे पक्का घाट; कई धर्मशालायें, टिहरीके राजाका पुराना मकान, काठ और पत्थरसे बना हुआ श्रीनगरका बाजार और बहुतेरे देवमन्दिर थे, जिनमेंसे बहुतेरे सन् १८९४ की बाढ़से बहगये और बहुतेरे बालूमें दब गये। टूटे हुए अथवा बालूमें गड़े हुए कई मन्दिर देख पड़ते हैं। उस समय श्रीनगरमें ४२ फीट ऊँचा पानी बढ़ा था। अलकनन्दामें अर्जुनशिला नामक एक चट्टान और उसके किनारों पर अनेक पवित्र स्थान और बालूके मैदानके दोनों तरफ पर्वत पर अनेक बस्तियां हैं।

बालूके मैदानके बाद कमलेश्वर महादेवका मन्दिर मिलता है। १२ खम्भोंकी गुम्बजदार बारहदरीके भीतर ६ पहल वाला गुम्बजदार एक छोटा मन्दिर है। प्रत्येक पहलमें एक जालीदार किवाड़ लगी है, जिसके भीतर कमलेश्वर महादेवका खण्डित लिङ्ग है। मन्दिरके आगे पीतलसे जड़ा हुआ बड़ा नन्दी, चारों ओर मकान और एक कोने पर ऊँचा घण्टाघर है। यह मन्दिर ऊँची जमीनपर है, इस लिये बाढ़के समय बहनेसे बच गया। कार्तिक शुक्ल १४ को यहां मेला होता है। बहुतेरे लोग रातभर दीपक जलाते हैं। कमलेश्वरके अलावे श्रीनगरमें किलकेश्वर, नागेश्वर और अष्टावक्र महादेव तथा राजराजेश्वरी भगवती इनके मन्दिर हैं।

कमलेश्वरके मन्दिरसे $\frac{1}{2}$ मीलसे अधिक पूर्वोत्तर देवप्रयागसे १८ मील, हृषीकेशसे ६०$\frac{3}{4}$ मील और हरिद्वारसे ७२$\frac{3}{4}$ मील दूर अलकनन्दाके किनारे ऊँची जमीनपर नया श्रीनगर वसा है। वहाँ अलकनन्दा और पर्वतके बीचमें चौरस मैदान है; जिसके बीचमें चौड़ी सड़कके बगलोंपर दो मञ्जिले पक्के मकान बने हुए हैं और अबभी बन रहे हैं। वहाँ कपड़े, बर्तन, कम्बल, जूते, मेवे, बिसातीकी चीजें, मोमबत्ती, छाता, कस्तूरी आदि पर्वती चीजें; मसाले आदि सब वस्तु मिलती हैं। नोट बाजारमें बिक सक्ता है। नाई और धोबीभी वहाँ

रहते हैं। वहाँ एक बड़ा अस्पताल, जिसमें गरीब रोगियोंको सरकारसे खाना और उसमें रहनेकी जगह मिलती है; पुलिस की चौकी, एक धर्मशाला और डाकखाना है। वहाँ तक तार भी बन गया है। वहाँ आमके बहुत वृक्ष देखनेमें आते हैं और बैल गाड़ी भी चलती हैं। श्रीनगरकी नई बस्तीके पास अलकनन्दाके करारेके नीचे एक झरना है। पानी अलकनन्दा और झरनाका मिलता है। श्रीनगर गढ़वाल जिलेमें अलकनन्दाके बायें किनारे पर उस जिलेमें सबसे बड़ा कसबा है। सन् १८८१ की जन-संख्याके समय उसमें २१०० मनुष्य थे। वह एक समय गढ़वालके राजाओंकी राजधानी था। नजीबाबादसे श्रीनगरमें माल और जिन्स भेड़; बकरे और खच्चरोंपर लाद कर जाती है।

बहुत लोग श्रीनगरसे टिहरी होकर; जो वहाँसे २८ मील है; गङ्गोत्तरी जाते हैं। टिहरीसे ९६ मील गङ्गोत्तरी है (हृषीकेशके वृत्तान्त में देखो)।

श्रीनगरसे एक मार्ग पौड़ी होकर नजीबाबादको और दूसरा टिहरी राजधानी होकर सहारनपुरको गया है। उन दोनोंका वृत्तान्त नीचे है।

श्रीनगरसे पौड़ी होकर नजीबाबाद का मार्ग। श्रीनगरसे फासिला;—

मील, टिकनेका स्थान।

७ पौड़ी।
१७ अधवानी।
२९ वागघाट।
४१ डाँडो मण्डी।
५३ कोटद्वार।
६८ नजीबाबाद (रेलवे स्टेशन)।

इन सब जगहोंमें धर्मशालायें बनी हैं और दूकानोंपर सब चीजें मिल सकती हैं। पौड़ी और कोटद्वारमें तार घर है। कोटद्वारमें पुलिसका थाना और अस्पताल है। कोटद्वारसे नजीबाबाद तक बैल गाड़ीकी सड़क है। कुछ यात्री नजीबाबादसे श्रीनगर आकरके केदारनाथ और बदरीनाथ जाते हैं।

श्रीनगरसे टिहरी होकर सहारनपुरका मार्ग। श्रीनगरसे फासिला;—

मील, टिकनेका स्थान।

५ मलेथा।
७ डांगचौरा।
११ तिलोकी।
१४ ढालङ्गी।
१८ पौ।
२८ टिहरी।
३७ कौड़िया।
४१ कानाताल।
४४ कदू खाल।
४९ धनौलटी।
६१ लधौरा।
६७ राजपुर।
७३ मंसूरी।
७९ देहरादून।
८६ असरोरी।
९३ मोहन।
१०६ फतेहपुर।
१२१ सहारनपुर (रेलवे स्टेशन)।

इन सब जगहोंमें बनियोंकी दूकानें और पानी मिलता है। डांगचौरा, पौ, टिहरी, कौड़िया, धनौलटी, लन्धौरा, राजपुर, मंसूरी और देहरादूनमें डाक बँगले हैं। देहरादूनसे सहारनपुर तक शिकरम जाती है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा-स्कन्द पुराण-(केदारखण्ड, उत्तर भाग, पहला अध्याय) श्रीक्षेत्र अर्थात् श्रीनगरका स्थूल रूप कोळोत्तमांगसे कोल कलेवर तक चार योजन लम्बा और तीन योजन चौड़ा; सूक्ष्म रूप जीवनेंद्रपुरसे बरसवता नदीतक और अति सूक्ष्म रूप खाण्डव नदीसे शितिपुर तक है। श्रीक्षेत्रमें देवता लोग सर्वदा निवास करते हैं। वहाँ मृत्यु होनेसे जन्म मरणका बन्धन छूट जाता है। वहाँ भगवान् शङ्कर शिवाके सहित सर्वदा विद्यमान रहते हैं। पूर्वकालमें तारकासुरने इन्द्रादिक देवताओंको स्वर्गसे निकाल दिया था, तब वे लोग सम्पूर्ण पृथ्वीमें भ्रमण करके केदारेश्वर क्षेत्रमें, जहां तारकासुरका भय नहीं था आये। इन्द्रने इन्द्रकील पर्वतपर निवास किया। उसके दक्षिण भागमें कीनाश पर्वतपर यमराजने अपना गृह बनाया। इसी प्रकारसे सम्पूर्ण देवता उसके आस पास अपना अपना निवासस्थान बनाकर रहने लगे। कितने एक युगोंके उपरान्त वे लोग शिवकी आराधना करके स्वामिकार्तिकको पाकर फिर स्वर्गमें आये और स्वामिकार्तिकको सेनापति बनाकर असुरोंको परास्त करके अपने अपने स्थानोंको फिर पागये।

(दूसरा अध्याय) राजा धर्मनेत्रने उत्फालक मुनिसे पूछा कि श्रीक्षेत्रकी उत्पत्ति किस भांति हुई। मुनि कहने लगे कि सतयुगमें सत्यकेतु नामक प्रतापी राजा हुआ। वह बहुत काल राज्य करनेके उपरान्त अपने पुत्र सत्यसंधको राज्य देकर इन्द्रकील पर्वतपर गया और गुहामें समाधि लगा कर तप करने लगा। उसके पश्चात् राजाका शत्रु कोलासुर आया। राजा सत्यसन्ध घोड़े पर सवार हो नगरसे बाहर निकला। गङ्गाके उत्तर तीर एक योजनकी दूरी पर कुबेर पर्वतके दक्षिण भागमें राजा सत्यसन्ध और कोलासुरका रोमहर्षण युद्ध होने लगा। बहुत काल तक युद्ध होनेके उपरान्त आकाश वाणी हुई कि हे सत्यसन्ध! तुम उत्फालक क्षेत्रके ऊपरके भागमें २ बाणकी दूरीपर गङ्गाके दक्षिण तीरमें भगवतीकी आराधना करो, उनके प्रसादसे तुम कोलासुरको मारसकोगे। ऐसा सुन राजा सत्यसन्ध उस स्थान पर गया और एक शिला पर भगवतीका यन्त्र लिखकर पूजा करने लगा। एकसौ वर्ष राजाके तप करनेके उपरान्त भगवतीने राजाको दर्शन दिया। राजाने दण्डवत् करके जगदम्बाकी स्तुति की। भगवती बोली कि हे राजन्! मैं प्रसन्न हूँ; तुम मुझसे इच्छित वर मांगो। सत्यसन्धने कहा कि हे जगदम्ब! कोलासुर हमारे हाथसे माराजांय, इस पवित्र क्षेत्रको तुम कभी न त्याग करो और इस क्षेत्रमें जो कुछ कर्म कियाजाय उसका फल कोटिन गुणा होवे। भगवती बोली कि हे सत्यसन्ध! तुम्हारे हाथसे कोला-सुरका वध होगा; यह क्षेत्र श्रीक्षेत्रके नामसे प्रसिद्ध होगा, यह क्षेत्र सम्पूर्ण पापोंका नाश करनेवाला और यहाँ मृत होनेवालोंको मुक्ति देनेवाला होगा। जो मनुष्य इस क्षेत्रमें हमारा पूजन करेगा वह थोड़ेही दिनोंमें हमारे समान समर्थ होजायगा। मैं शिवजीके इस क्षेत्रमें सर्वदा निवास करती हूँ। इस स्थानसे आधे कोसकी दूरीपर गङ्गाके उत्तर तीरमें मैं राजराजेश्वरीके नामसे प्रसिद्ध हूँ। पूर्व समयमें राजराज (कुबेर) ने वहाँ मेरी आराधना की थी; तबसे मैं वहाँ निवास करती हूँ। जब कुबेर मेरी आराधना करके सम्पूर्ण संपत्तिका स्वामी होगया, तब उसने ३० करोड़ सुवर्णकी बेदी बनाकर उसपर मुझे स्थापित किया; तभीसे मेरा नाम राजराजेश्वरी करके प्रख्यात हुआ। ऐसा कहकर देवी अन्तर्द्धान होगई। राजा सत्यसन्ध रण-भूमिमें जाकर फिर कोलासुरसे युद्ध करने लगा। उसने बड़ा युद्ध

होनेके उपरान्त कोलासुरका शिर काटडाला और उसके शिर और रुण्डको अलग अलग फेंक दिया। नैऋत्य दिशामें १ योजन पर कोलासुरका शिर और पूर्व भागमें ३ योजन पर उसका रुण्ड जा गिरा। यही ४ योजन लम्बा और ३ योजन चौड़ा श्रीक्षेत्र (श्रीनगर) का प्रमाण हुआ। अबतकभी उसके शिरका स्थान कोल शिर करके प्रसिद्ध है और उसके रुण्डके देशमें कोल नामक पर्वत है। इनके मध्यमें जो प्राणी शरीर त्याग करता है, उसको शिवलोक प्राप्त होता है।

(तीसरा अध्याय) कोलासुरके शिरके भागमें मेनका नदीके समीप मैनकेश्वर महादेव हैं। नदीमें स्नान करके शिवकी पूजा करनेसे सम्पूर्ण मनोरथ सुफल होता है। उससे १ कोस दूर देवतीर्थमें भुवकुटेश्वर महादेव स्थित हैं। उस स्थान पर सूर्य, चन्द्र और अग्नि नामक ३ धारा देखनेमें आती हैं। गङ्गाके उत्तर तीर पर श्यामलानदी बहती है। संगमके निकट शिवतीर्थमें शिवप्रयाग प्रसिद्ध है; जिसमें स्नान करनेसे बहुत फल लाभ होता है। उससे १ कोस दूर गजवतीधारा; गजवतीसे आधे कोस पर गङ्गाके दक्षिण तटपर पुष्पदन्तिका नदी और पुष्पदन्तिकासे एक बाण दूर गङ्गाके निकट भानुमती शिला है, जिसके स्पर्श करनेसे सौन्दर्य्य प्राप्त होता है। अलकनन्दाके समीप इन्द्रप्रयाग है। उसी स्थान पर राज्य भ्रष्ट इन्द्रने तप करके फिर अपना राज्य पाया। उस स्थानसे २ बाण पर दृषद्वती नदी दृषद्वतीसे आधे कोस पर अहिकण्डिका नदी, उससे २ कोस दूर पर्वतके ऊपर कण्डिका देवी हैं। गङ्गाके उत्तर किनारे पर शक्तिजा नदीके तटमें गणेश्वर महादेव; गणेश्वरसे आधे कोसपर श्मशान वासिनी देवी, उससे १ कोस दूर शंखवती और शक्तिजाका संगम और उस स्थानसे उत्तर शक्तिजाके पश्चिमके तीरसे आधे कोसपर महादेवका मन्दिर है। उसी स्थानमें सोमवंशीय राजा नहुषने कठोर तप करके इन्द्रका राज्य पाया था। उससे ऊपर दो कोस प्रमाणका देवीपीठ है। शक्तिजाके संगमके ऊपर गङ्गाके दक्षिण तट पर उपेंद्रा नदीका संगम है। उसके ऊपर ४ बाण पर इन्द्रके स्थापित कियेहुए कन्दुकेश्वर भैरव हैं।

(५ वाँ अध्याय) खाण्डव नदी और गंगाके संगमके निकट शिवप्रयाग है (भीलेश्वरकी कथामें देखो)। (९ वाँ अध्याय) धनुष कोटि तीर्थसे २ बाणकी दूर पर भैरवी तीर्थ में अनेक नामकी भैरवी रहती हैं। उसके दक्षिण भागमें २५ धनुषपर भैरवी पीठ है। पूर्व कालमें सत्यसन्ध नामक राजाने उस स्थानपर देवीका पूजन किया था, तबसे वहाँ देवीजी स्थित होगई। गङ्गाके उत्तर तोरपर कौबेर कुण्ड है; उसी स्थानपर कुबेरने देवीकी आराधना की थी।

(१० वाँ अध्याय) श्रीक्षेत्रमें चामुण्डा पीठ, भैरवी पीठ, कंसमर्द्दिनी पीठ, गौरीपीठ, महिष मर्द्दिनीपीठ और राजराजेश्वरी पीठ सद्यः प्रभावको दिखलाने वाले हैं। राजराजेश्वरी पोठ और भैरवीपीठ तो मैं कह चुका, अब चामुण्डा पीठकी उत्पत्तिकी कथा सुनो।

पूर्वकालमें शुम्भ और निशुम्भ दैत्योंने सम्पूर्ण देवताओंके अधिकारको छीन लिया था। तब देवताओंने हिमवान पर्वतपर जाकर पार्वतीजीकी प्रार्थना की। भगवती पार्वतीने कहा कि तुम सब निर्भय होकर रहो, मैं शुम्भ और निशुम्भको मारूँगी। सब देवता जाकर अपने अपने स्थानमें रहने लगे। उसके अनन्तर किसी कालमें शुम्भ और निशुम्भके कर्मचारी चण्ड और मुण्डने देवीको गङ्गामें स्नान करते हुए देखकर उनके रूपसे मोहित हो

शुम्भ और निशुम्भके निकट जाकर उसके रूपका वर्णन किया । शुम्भ, निशुम्भने सुग्रीव नामक दूतको देवीके पास भेजा । उसने हिमालयमें जाकर भगवतीसे कहा कि शुम्भ और निशुम्भ दैत्योंके राजा हैं; यदि तू अपना कल्याण चाहती हो तो उनकी पत्नी बनो । ऐसा नहीं करोगी तो वह तुझको बलात्कारसे लेजायँगे । भगवती बोली कि हे दूत ! तुम उनसे कहो कि जो मुझको संग्राममें जीतेगा, वही हमारा पाणिग्रहण करेगा । सुग्रीवने शुम्भ और निशुम्भके निकट आकर देवीका वचन कह सुनाया । (११ वाँ अध्याय) दैत्यराजकी आज्ञासे धूम्रलोचन दैत्य चतुरंगिणी सेना लेकर हिमालयपर आ भगवतीसे बोला कि अब मैं तुझको बाँधकर ले जाऊँगा । देवीजीने क्रोध करके अपने हुंकारहीसे उसको भस्म कर दिया । शुम्भने धूम्रलोचनकी मृत्यु सुनकर बड़ी भारी सेनाके साथ चण्ड और मुण्ड दैत्योंको भेजा । दैत्यकी भयंकर सेना देवीके पास आकर नानाप्रकारके अस्त्र शस्त्र चलाने लगी । उस समय इन्द्रादिक देवताओंकी करोड़ों सेना भगवतीकी सहायताके लिये वहाँ आकर उपस्थित हुई । देवता और राक्षसोंका रोमहर्षण संग्राम होने लगा । जब चण्ड और मुण्ड देवीजीके सन्मुख गये, तब क्रोधके मारे अंबिकाका मुख श्याम वर्ण होगया । उस समय उनके ललाटसे अपने हाथोंमें तुरन्तका कटा हुआ शिर, खड्ग, चर्म, भाला; शक्ति, पाश, धनुष; बाण इत्यादि अस्त्र शस्त्र लिये हुए शिवा प्रकट होगई । वह दैत्योंका मर्दन करने लगी । कितने दैत्य उसके महानादसे नष्ट होगये; कितने उसकी दृष्टिसे मूर्च्छित हुए; कितनोंको उसने मार डाला । उसके पश्चात् उन्होंने अपने खड्गसे चण्डका शिर काट डाला और उसके उपरान्त मुण्डके कण्ठको अपने चरणसे दबाकर खड्गसे काट लिया । वह दोनों दैत्योंके शिर लेकर भगवतीके समीप आई । भगवती अति प्रसन्न हो बोली कि हे काली ! तुमने चण्ड और मुण्डको मारा इस कारणसे तुम अबसे लोकमें चामुण्डा करके प्रसिद्ध होगी । उसके पश्चात् चामुण्डाने दोनों दैत्योंके शिरोंको फेंक दिया । श्रीक्षेत्रमें ४ बाणकी दूरीपर गङ्गाके उत्तर तीरपर ब्रह्मकुण्डके निकट मुण्डका शिर और ४ बाणकी दूरीपर गंगाके दक्षिण किनारेपर चण्डका शिर जा गिरा । चामुण्डा उसी क्षेत्रमें निवास करने लगी ।

(१२ वाँ अध्याय) श्रीक्षेत्रमें माहेश्वरपीठ, कमलेश्वर पीठ, नागेश्वरपीठ, कटकेश्वर-पीठ और कोटीश्वरपीठ सम्पूर्ण सिद्धिको देने वाले हैं । भैरवी तीर्थसे ऊर्द्ध भागमें २ बाण पर गंगाजीके दक्षिण तटमें ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर ये तीनों देवता शिलारूपसे स्थित हैं। प्रत्येक शिलाओंके नीचे उन्ही नामोंसे प्रसिद्ध एक एक कुण्ड हैं ।

कमलेश्वरकी उत्पत्ति इस भाँति हुई कि एक समय काशीके रहनेवाले ब्रह्मदेव ब्राह्मणने इस तीर्थमें आकर ५ सहस्र ५ सौ वर्ष पर्यन्त शिवजीका तप किया । तब भगवान् शंकर प्रसन्न हुए । उस समय वहाँकी पृथ्वी फट गई; उसके छिद्रसे मणियोंका समूह निकला । वह अर्द्धरात्रिका समय था, किन्तु उनके प्रकाशसे मध्याह्न सा हो गया । उन मणियोंमें मर-कतमणिका शिवलिङ्ग देख पड़ा । उसी समय शिल्ह नामक मुनि वहाँ आ गये । वह बोले कि हे विप्र ! तुम धन्य हो कि तुम्हारे तपके प्रभावसे यह लिङ्ग प्रकट हुआ । उस समय ब्रह्मदेव और शिल्ह मुनिने बहुतेरे मुनियोंको बुलाकर उस लिङ्गका अभिषेक करवाया। महा-देव शिल्हेश्वर नामसे प्रसिद्ध हुए। शिल्ह मुनि शिवलोकमें गये । उसके पीछे किसी समय श्रीरामचन्द्रजी नित्य १०० कमलोंसे शिवको पूजा करते थे । तभीसे वह लिङ्ग कमलेश्वर

नामसे प्रख्यात होगया । वह्निपर्वतके नीचेके भागमें ४ बाणपर कमलेश्वर महादेव हैं । उनसे ऊपर एक बाणपर विष्णु तीर्थ और विष्णु तीर्थसे १ कोसकी दूरीपर गंगाके दक्षिण तटमें नागेश्वर महादेव हैं, जहाँ पूर्वकालमें नागोंने शिवका तप किया था । कटकवतीके संगमसे आधे कोसपर कटकेश्वर महादेव हैं । शिवजीके साथ क्रीडा करती हुई पार्वतीजीका कटक अर्थात् कर्णभूषण गिर गयी इसलिये शिवका नाम कटकेश्वर पड़ा ।

(१३ वाँ अध्याय) कमलेश्वरपीठसे ऊपर दक्षिण दिशामें वह्नि पर्वत है, जहाँ अग्निने शिवजीका तप करके सम्पूर्ण इच्छित फल पाया था । तभीसे वह सब देवताओंका मुख हो गया । वह्नि पर्वतके नीचे वह्नि धारा और वह्नि धाराके ऊपर वह्नि पर्वतके मध्यमें अष्टावक्र-मुनिका पवित्र तपस्थल है ।

(१५ वाँ अध्याय) कंसको मारनेवाली देवी श्रीक्षेत्रमें कंसमर्दिनी नामसे निवास करती है । गंगाके दक्षिण तीरपर श्रीशिला है । गंगासे १॥ कोसपर चैत्रवती नदीके पश्चिम भागमें चारोंओर एक एक कोसके प्रमाणमें पुण्यक्षेत्र गौरीपीठ है, जहाँ ब्रह्मादिक देवताओंने परम सिद्धि पाई है रत्नद्वीपके रहनेवाले शशबिन्दुके पुत्र राजा देवलने इस स्थानमें गौरीका स्थापन किया था; तभीसे यह महापीठ हो गया । गौरीके निकट महिषमर्दिनी देवी है, उसी स्थानमें कालिका देवीका परम पावन पीठ है । प्रथम कालिकाका पूजन करना चाहिये ।

पौड़ी ।

श्रीनगरसे ७ मील पूर्व-दक्षिण गढ़वाल जिलेका सदर स्थान पौड़ी एक पहाड़ी बस्ती है वह समुद्रके जलसे लगभग ५००० फीट ऊपर स्थित है । वहांका जल, वायु स्वास्थ्य कर है । वहाँ गढ़वाल जिलेके प्रधान हाकिम डिपुटी कमिश्नर रहते हैं ।

टिहरी ।

श्रीनगरसे ३२ मील पश्चिमोत्तर गङ्गाके बायें किनारेपर पश्चिमोत्तर देशके गढ़वाल जिलेमें एक देशी राज्यकी राजधानी टिहरी है । टिहरीसे उत्तर एक रास्ता उत्तरकाशी और भटवारी होकर गंगोत्तरीको और दक्षिण दूसरी रास्ता राजपुर, मंसूरी, देहरादून और हृषी-केश होकर हरिद्वारको गई है । टिहरी राजधानीकी आबादी सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय लगभग १८००० थी । वर्तमान राजाकी माताने सन् १८४९ में भागीरथीकी धाराके समीप बदरीनाथजीका सुन्दर मन्दिर बनवाया, जहाँ बड़ा उत्सव होता है ।

टिहरी राज्यका क्षेत्र फल ४१८० वर्ग मील और इसकी आबादी सन् १८९१ के अनुसार २४०८८९ और मालगुजारी १४२००० रुपये हैं । यह राज्य अङ्गरेजी गढ़वाल जिलेके पश्चिम हिमालयके दक्षिण ढालू भूमिपर है । इसमें ऊँचे पहाड़ोंका एक बड़ा सिल-सिला, जिसमें कई खाढ़ियाँ हैं, देख पड़ती हैं । अङ्गरेजी राज्य और टिहरी राज्यकी सीमा-पर गङ्गा अलकनन्दा और मन्दाकिनी नदियाँ बहती हैं । राज्यका बड़ा हिस्सा कीमती जङ्ग-लसे भरा हुआ है ।

टिहरीके राजवंश क्षत्री हैं । चान्दपुरके राजा अजयपालने छोटे छोटे राजाओंको अपने अधिकारमें करके गढ़वाल राज्यको नियत किया और श्रीनगरको अपनी राजधानी बनाया । उनके वंशवाले, जो चान्द घरानेके नामसे प्रसिद्ध हैं, सन् ई० की उन्नीसवीं सदीके आरम्भ

तक मुगल बादशाहोंको थोड़ा खिराज देकर सम्पूर्ण गढ़वालमें राज्य करते थे। गोरखे लोग सन् १८०३ ई० में चान्द घरानेके राजा मानशाहको जीतकर गढ़वालपर राज्य करने लगे। सन् १८१५ ई० में अङ्गरेजी सरकारने गोरखोंको परास्त करके गढ़वालकी अलकनन्दाकी घाटीका देश, जो अब अङ्गरेजी राज्यका गढ़वाल जिला बना है, अपने राज्यमें मिला लिया और शेष राज्य राजा मानशाहके पुत्र राजा सुदर्शनशाहको दे दिया। सुदर्शनशाहके पुत्र राजा भगवान्‌शाह, और भगवान्‌शाहके पुत्र राजा प्रतापशाह हुए। राजा प्रतापशाहके पुत्र टिहरीके वर्त्तमान नरेश १८—२० वर्षकी अवस्थाके महाराज कीर्त्तिशाह हैं। टिहरी राजवंशके साथ नेपाल राजवंशका विवाह होता है। बदरीनाथके मन्दिरका प्रबंध पहले टिहरीके राजा लोग करते थे और वे लोग श्रीनगरमें रहते थे; उस समय यात्रीलोग उनका दर्शन करते थे। अब तो कई बर्षोंसे बदरीनाथके मन्दिरका प्रबन्ध अङ्गरेजी सरकारके अधीन है।

रुद्रप्रयाग।

भट्टीसेरा चट्टी—श्रीनगरसे आगे २ मीलपर श्रीकोट वस्ती; ३ मीलपर झरनाका पुल और डाक ढोनेवालोंकी कोठरी; अलकनन्दाके उस पार ४ मीलपर एक बस्ती; ४$\frac{1}{4}$ मीलपर एक ढोकमे गुफा; ५ मीलपर सुकृतीचट्टीमें एक कोठरी, दूधकी दूकान, एक झरना और एक गुफा; ६$\frac{1}{2}$ मीलपर बड़े झरनेका; पुल; ७$\frac{1}{4}$ मीलपर १ बस्ती और ८$\frac{1}{2}$ मीलपर भट्टी सेराचट्टी है।

भट्टी सेराचट्टी पर खुला हुआ एक बड़ा झरना और आठ दस छप्परके मोदियोंके नये मकानात हैं।

श्रीनगरसे यहाँतक मार्ग सुगम है और जगह जगह खेतके मैदान देख पड़ते हैं। सुकृती-चट्टीके कुछ आगेसे पुरानी सड़क जिसपर कल्याणचट्टी थी, बाढसे बह गई है। उसके सामने नदीके पार द्रौपदी शिला है।

भट्टीसेरासे आगे १$\frac{1}{4}$ मीलपर छान्तीखाल नामक एक छोटी चट्टी और एक बहुत छोटा झरना, २$\frac{1}{4}$ मीलपर एक गुफा और ३ मीलपर खांकरा चट्टी है।

खांकराचट्टी—यहाँ झरनेके ऊपर बल्लोंसे पाटा हुआ १ पुल और झरनेके दोनों ओर छप्परके मकानात हैं। भट्टीसेरासे १$\frac{1}{4}$ मीलकी कठिन चढ़ाइ पड़ती है।

खांकराचट्टीसे आगे ३ मीलपर नरकोटा नामक एक छोटी चट्टी और एक बड़ा झरना और ५$\frac{3}{4}$ मील गुलाबराय चट्टी है।

गुलाबरायचट्टी—यहाँ पांच छः पक्की दूकानें, एक झरना, थोड़ा सा मैदान और केलोंके झाड़ हैं।

खांकरा चट्टीसे एक मील कड़ी चढ़ाईके पीछे एक शिखरसे बहुत नीचे अलकनन्दा देख पड़ती हैं। नरकोटा चट्टी तक २ मील उतराई है। नरकोटासे आगे १ मीलकी चढ़ाईपर भेड़ बकरीका टिकान है। वहाँसे $\frac{3}{4}$ मील बराबर कठिन उतराई है।

गुलाबराय चट्टीसे $\frac{1}{4}$ मील आगे २ धर्मशालायें, आम्र वृक्षोंके नीचे टिकनेकी जगह और थोड़ासा मैदान है। वहाँसे रुद्रप्रयागका शिव मन्दिर देख पड़ता है। उससे आगे एक छोटी नदीपर काठका छोटा पुल और नदीमें पनचक्कीके ३ मकान हैं।

रुद्रप्रयाग—गुलाबरायचट्टीसे १¾ मील, श्रीनगरसे १९ मील, देवप्रयागसे ३७ मील और हरिद्वारसे ९१¾ मीलपर अलकनन्दाके बायें किनारेपर अलकनन्दा और एक छोटी नदीके सङ्गमके पास रुद्रप्रयागका बाजार है। मैं हरिद्वारसे चलनेपर दशवें दिन रुद्रप्रयाग पहुँचा।

यहाँ सन् १८९४ की बाढ़के समय अलकनन्दाका पानी १४० फीट ऊँचा चढ़ आया था। उस समय यहाँका सम्पूर्ण बाजार बह गया और धर्मशालायें लुप्त होगईं। अब बाजारके स्थानसे ऊपर पन्द्रह बीस बड़े बड़े मकान बने हैं। यहाँ जिन्सकी दूकानोंके सिवाय कपड़ा, बरतन और पूरीकी भी एक एक दुकान हैं। खड़ी उतराईसे उतरकर अलकनन्दामें स्नान होता है। पीनेके लिये, छोटी नदीसे पानी आता है।

रुद्रप्रयागके बाजारके पास २०० फीट लम्बा और ६ फीट चौड़ा अलकनन्दापर लोहेका एक लटकाऊ पुल (झूला) है। केदारनाथको छोडकर बद्रीनाथ जानेवाले यात्री (विशेषकर आचारी लोग) यहाँसे सीधा आगे अलकनन्दाके बायें किनारे कर्णप्रयाग, नन्दप्रयाग, चमोली होकर अलकनन्दाके किनारे २ बद्रीनाथ जाते हैं और केदारनाथके यात्री यहाँसे पुल पार होकर रुद्रनाथके मन्दिरसे आगे मन्दाकिनी नदीके किनारे किनारे केदारनाथ पहुँचते हैं और केदारनाथसे नालागाँव चट्टी पर लौटकर उखीमठ, गोपेश्वर और चमोली होकर बद्रीनाथको जाते हैं। रुद्रप्रयागसे २१ मील कर्णप्रयाग, ३३॥ मील नन्दप्रयाग, ४०½ मील चमोली, जोशीमठ छोड़ करके ६८¼ मील विष्णु प्रयाग और ८४¾ मील बद्रीनाथ हैं और रुद्रप्रयागसे दूसरी ओर मंदाकिनीके किनारे पर २४ मील गुप्तकाशी ४०¼ मील पर त्रियुगी नारायण, ४३ मील सोनप्रयाग, ४६ मील गौरीकुण्ड और ५५ मील पर केदारनाथ हैं।

मैं लोहेका पुल पार होकर केदारनाथको चला। पुलसे ¾ मील आगे अलकनन्दा और मन्दाकिनी नदीके संगमपर एक छोटे गुम्बजदार मन्दिरमें रुद्रनाथ शिव लिंग हैं। मन्दिरके आगे जगमोहनकी जगह पर एक कोठरी है। एक कोठरीमें नारदेश्वर शिव और दूसरी कोठरीमें कामेश्वर शिव लिंग हैं। खड़ी सीढ़ियोंमें उतर कर संगमपर स्नान होता है। यहाँ जलका वेग तेज है। रुद्रनाथके मन्दिरके पास एक डाक खाना और मन्दिरसे थोड़ी दूर मन्दाकिनी नदी पर रस्सोंका झूला है। लोहेके लटकाऊ पुलके समान इस ओर रस्सोंका झूला होता है। यह चढ़नेसे हिलता है, इसलिये इसको लोग झूला कहते हैं। इसमें लोहेके बरहोंकी जगहपर रस्सेके बरहे रहते हैं। झूलेके दोनों बगलोंपर लोहेके छड़ोंकी जगह ओर चनके समान रस्सियां लगाई जाती हैं और पाटनके तख्तोंके स्थान पर जङ्गलकी लकड़ीके टुकड़ बिछाये जाते हैं। ऐसे झूलोंपर यात्री लोग बोझ लेकर नहीं चल सक्ते। पहाड़ी लोग इनकी वस्तुओंको दूसरे किनारे पहुँचा देते हैं।

रुद्रप्रयाग; जो पंचप्रयागोंमेंसे एक है, देवप्रयागके बाद मिलता है। रुद्रप्रयागहीमें श्रीमहादेवजीने महर्षि नारदजीको संगीत विद्याकी शिक्षा दी थी।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्दपुराण—(केदारखण्ड, प्रथम भाग, ६३ वाँ अध्याय) पूर्व कालमें महामुनि नारदजीने रुद्रप्रयागमें मन्दाकिनी गङ्गाके तट पर, जहां शेषादिक नाग तप करके सदाशिवजीके भूषण बन गये थे, एक चरणसे खड़े होकर १०० वर्ष पर्यंत महादेवजीका कठिन तप किया। तब भगवान् शिव श्रीपार्वतीजीके साथ नन्दीपर चढ़े हुए

और बोले कि हे नारद! अब तुम्हारा तप पूर्ण होगया! उसी समय श्रीमहादेवजीने ६ रागों को उत्पन्न किया। एक एक रागकी पांच पांच रागिनियां (स्त्रियां) और आठ आठ पुत्र तथा आठ आठ पुत्रबधू हुई। (६४ वाँ अध्याय) नारदने सदाशिवजीके सहस्र नामसे स्तुति की। (६५ वाँ अध्याय) महादेवजीने कहा कि हे नारद! मैं प्रसन्न हूँ तुम इच्छित वर मांगो। नारदजी बोले हे वृषध्वज! यदि आप प्रसन्न हैं तो मुझको संगीत विद्या प्रदान कीजिये; आप नाद रूप हो और नाद आपको परम प्रिय है इस लिये मैं उसको जानना चाहताहूँ; संगीत शास्त्रका सर्वस्व मुझको आप सिखलाइये इसका जानने वाला आपके अतिरिक्त दूसरा कोई नहीं है। ऐसे नारदके वचन सुनकर शिवजीने प्रसन्न होकर नादके शास्त्रका सम्पूर्ण भेद उनसे कह दिया। (यहाँ नाद शास्त्रकी कथा ६५ वें अध्यायसे ७७ वें अध्याय तक है)। (७७ वाँ अध्याय) महर्षि नारद नादोंका सम्पूर्ण भेद और आवरणों को और महादेवजीकी दी हुई पवित्र वीणाको ग्रहण कर ब्रह्मलोकमें गये। शिवजी वहांही अन्तर्द्धान होगये। नारदजीने अलकनन्दा और मन्दाकिनीके संगमके निकट रुद्रतीर्थमें स्नान करके परम सिद्धिको प्राप्त किया था इसलिये यह तीर्थ पृथ्वीमें श्रेष्ठ है। उस प्रदेशमें ३ लाख १० सहस्र तीर्थ विद्यमान हैं और नाग पर्वत स्वर्गके समान है।

(उत्तर भाग, १८ वाँ अध्याय) गंगा और मन्दाकिनीके संगमके समीप रुद्रक्षेत्र और मन्दाकिनी और लशनदीके संगमके निकट सूर्यप्रयाग है।

बड़ा शिवपुराण, उर्दू अनुवाद-(८ वाँ खण्ड, १५ वाँ अध्याय)। देवप्रयागके उत्तर रुद्रप्रयागमें रुद्रेश्वर शिवलिंग है, जिसकी पूजा करनेसे सम्पूर्ण पाप दूर होजाता है।

तीसरा अध्याय।

(गढवालके जिलेमें) शोणितपुर, गुप्तकाशी, नारायण-कोठी, धामाकोटी, शाकम्भरी दुर्गा, त्रियुगीनारायण, मुण्डकटागणेश, गौरीकुण्ड, चीरवासा भैरव और केदारनाथ।

शोणितपुर।

छितौलीचट्टी-अलकनन्दा और मन्दाकिनीके सङ्गमसे आगे मन्दाकिनीके बायें किनारेसे चलना पड़ता है। मन्दाकिनीके दहिने ओर टिहरीका राज्य और बायें ओर अङ्गरेजी राज्य है। रुद्रप्रयागके मन्दिरसे आगे १ मीलपर पीपलके पेड़के चारों ओर मैदान और एक छोटा झरना; १¾ मीलपर एक दूसरा छोटा झरना; २¾ मीलपर एक गुफा, एक छोटा झरना और मन्दाकिनीके दहिने ओर एक बस्ती; बाद कई झरने और ४ मीलपर तिलवाडा चट्टी है।

वहाँ पत्थरसे छाई हुई बँगलेके समान एक सरकारी धर्मशाला, फूसकी टट्टीकी कई दुकानें और झरना हैं।

तिलवाड़ा चट्टीसे आगे ½ मीलपर तिलवाड़ा बस्ती, केलोंके झाड़, खेतकी भूमि और मन्दाकिनीपर रस्सोंका झूला, १ मीलपर एक छोटा झरना, उस पार खेत और कई मकान,

१½ मीलके सामने उसपार मन्दाकिनी और एक छोटी नदीका संगम; १¾ मीलपर दो दुकानें और २¾ मीलपर रामपुर चट्टी है ।

रामपुरचट्टी—रुद्रप्रयागसे वहाँतक रास्ता सुगम और जगह जगह ढोकोंकी नीची ऊँची सीढ़ियाँ हैं । वहाँ कई एक पक्की और फूसकी दुकानें हैं । मन्दाकिनी और झरनोंका पानी मिलता है और किनारेपर बडे बड़े पत्थरके ढोंके पड़े हैं ।

रामपुरचट्टीसे आगे ¾ मीलपर बड़े झरनेका पुल; १¼ मीलपर खड़ी पहाडीसे गिरता हुआ पानीका झरना; १½ मीलपर एक छोटे मन्दिरमें शिवलिङ्ग और एक कोठरी, जहांसे अनेक तरहकी विचित्र लता और वृक्षोंके सघन वनका दृश्य आरम्भ होता है, २ मीलपर एक झरना; २½ मीलपर मन्दाकिनी नदीका घाट और मैदान; ३ मीलपर एक नदीपर काठका पुल और एक पनचक्की; और ३¾ मीलपर अगस्तचट्टी है ।

अगस्तचट्टी—यहाँ दूकानदारोंके करीब १५ पक्के मकान, एक पक्की धर्मशाला, मन्दाकिनीका पानी और चट्टीके दोनों तरफ सुन्दर मैदान है ।

चारों तरफके मकानोंके बीचमें अगस्तजीका मन्दिर है । अगस्तजीकी ताम्रमयी बड़ी मूर्त्तिके बगलमें कटार और उनके दोनों ओर दो शिष्योंकी ताम्रकी मूर्त्तियाँ और पासही नवग्रह हैं । मन्दिरके आगे जगमोहनकी जगह पर लम्बी कोठरीमें गणेशजीकी पुरानी मूर्त्ति और घण्टा और मन्दिरके दहिने ओर एक कोठरीमें शिवलिंग है ।

मन्दिरके पास द्वादश वार्षिक यज्ञ होरहा था (जो १२ वर्ष पर होता है) । मन्दिरके आगे यज्ञशालामें अगस्तजीकी पीतलकी चल मूर्त्ति, जो उत्सवके समयमें बाहर निकाली जाती है, रक्खी हुई थी । यज्ञ कुण्ड और मट्टीकी यज्ञ मूर्त्ति बनी थी । ऐसे यज्ञ पहले बहुत होते थे । महाभारत आदि पर्वके ४ थे अध्यायमें है कि लोमहर्षणके पुत्र उग्रश्रवाजी नैमिषारण्यमें शौनकजीके द्वादश वार्षिक यज्ञमें गये थे ।

मन्दाकिनीके उस पार वहाँसे २ मीलपर शिलेश्वर महादेव हैं । लोग कहते हैं कि अगस्त्यजीने उसी स्थान पर तप किया था ।

अगस्त्यचट्टीसे पूर्वकी ओर चमोली तक एक पहाड़ी मार्ग गया है । बकरी, भेड़ लादनेवाले व्यापारी जिन्स लेकर उस मार्गसे आते जाते हैं । चट्टीसे केदारनाथकी ओर हिम मण्डित पर्वत शिखर दृष्टिगोचर होता है ।

अगस्तचट्टीसे आगे ½ मीलपर दो मञ्जिली धर्मशाला और मन्दाकिनीपर वरहेका झूला; १½ मीलपर एक झरना, जिसके आगे छोटे छोटे ३ और झरने हैं और २½ मीलपर महादेवचट्टी है ।

महादेवचट्टी—वहाँ २ कोठरियोंमें २ शिव लिङ्ग, १ धर्मशाला, आठ दस पक्की दुकानें, दो झरने, मन्दाकिनीका पानी और आस पास तमाकूके खेत हैं । चट्टीसे थोड़ेही आगे एक छोटी नदी मिलती है ।

महादेव चट्टीसे आगे ½ मीलपर एक बड़े झरनेके ऊपर काठका पुल और मन्दाकिनीके उस पार एक वस्तीमें एक छोटा मन्दिर; १ मीलपर चार मकानकी चन्द्रापुरीकी छोटी चट्टी आगे खड़े पहाड़से गिरता हुआ झरना और १¾ मील चन्द्रापुरी है ।

चन्द्रापुरी—चन्द्रापुरीमें मोदियोंकी बड़ी बड़ा और पक्की ८ दुकानें हैं, जिनमें बहुतसे यात्री टिक सक्ते हैं। कोठरीके समान छोटे मन्दिरमें चन्द्रेश्वर नामक अनगढ़ शिवलिङ्ग है। मन्दिरके जगमोहनकी जगहपर एक कोठरी है। एक नदी आकर मन्दाकिनीसे मिली है। ४ पनचक्की हैं। चट्टीके पास थोड़ासा मैदान है लोहे और ताम्बेके कड़े और अँगूठी बेचनेवाले एक लोहारकी दुकान है।

चन्द्रापुरीसे ¼ मील आगे मन्दाकिनीपर रस्सोंका झूला, उस पारकी बस्तीमें एक छोटा मन्दिर और केलोंके झाड़, ½ मीलपर एक छोटा झरना १¼ मीलपर एक दूसरा झरना; २ मीलपर अर्जुनका तीर अर्थात् जोते हुए खेतमें टेढ़ा गड़ाहुआ पत्थरका कोरदार पतला खम्भा, २¼ मीलपर एक झरना और उस पार मन्दाकिनी और डमार नदीका संगम; २¾ मीलपर कड़ा और अंगूठी बनानेवाले लोहारकी एक दुकान और केलोंके झाड़ और ३ मील पर भीरीचट्टी है।

भीरीचट्टी—वहाँ मन्दाकिनीके दोनों किनारोंपर मोदियोंके पांच सात मकान और पानीके झरने; बायें किनारेपर बंगलाके समान सरकारी एक पक्की धर्मशाला, खेतका चौरस मैदान और कई पनचक्कियाँ हैं। धर्मशालाकी दहिनी ओर एक कोठरीमें २½ हाथ ऊँची भीमकी मूर्त्ति हाथमें गदा लिये हुए है। पासही दूसरी कोठरीमें सत्यनारायणकी सुन्दर चतुर्भुजी मूर्त्ति है, जिसके दोनों ओर और ऊपर ३ पत्थरोंमें खुदी हुई लगभग छोटी छोटी ३६ मूर्त्तियाँ हैं।

मन्दाकिनीके ऊपर ७० फीट लम्बा और ५ फीट चौड़ा लोहे और काठका लटकाऊ पुल है। पुलपर सन् १८८९ ई० लिखा है। वहाँसे मन्दाकिनीके बायें किनारेकी सड़क उखी मठको और दहिनेकी गुप्त काशी होकर केदारनाथको गई है। केदारनाथके यात्री यहाँसे पुल पार होकर मन्दाकिनीके दहिने किनारेसे चलते हैं। रामपुर चट्टीसे यहाँतक सुगम रास्ता है। जगह जगह थोड़ी चढ़ाई उतराई मिलती है। वहाँसे मन्दाकिनीकी दहिनी ओर भी अङ्गरेजी राज्य है।

भीरीचट्टीसे आगे ½ मीलपर बड़ा झरना; आगे एक कोठरीमें एक देवताकी मूर्त्ति विचित्र चट्टान, खड़ा पर्वत और हरित जंगल; १¼ मील आगे एक बड़ा झरना और भिक्षुककी कोठरीमें सत्यनारायणकी मूर्त्ति; १½ मील कौनियादानाकी उजाड़चट्टी और कड़ा और अगूठी बेचनेवालेकी दूकान; २½ मीलपर एक झरना; ३½ मीलपर कुण्डचट्टीमें फूस टट्टीकी कई दुकानें और मन्दाकिनीका जल; ४ मीलपर एक छोटी नदी; और ४½ मीलपर और एक भिक्षुककी कोठरीमें गरुड़की मूर्त्ति है।

कौनियादानाचट्टीके १ मील आगेसे रिंगाल (नरकट) का जंगल जगह जगह देख पड़ता है, जिससे तराय, डोलची और टोकरी इत्यादि बनती हैं और वह मकानके छप्परके काममें आता है और उसका कलम भी बनता है। कुण्ड चट्टीके ½ मील आगेसे चढ़ाई आरम्भ होती है।

शोणितपुर—कुण्डचट्टीके एक मील आगेसे जहाँ भिक्षुककी कोठरी है, पहाड़के ऊपर शोणितपुरको ३ मीलकी एक पगदण्डी गई है। वहाँ बाणासुरके गढ़की निशानी और बाणा-

सुर, अनिरुद्ध और पंचमुखी महादेवकी मूर्त्तियाँ हैं। केदारनाथके पण्डे शोणितपुरहीमें रहते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–वामन पुराण–(९२ अध्याय) राजा बलिके रसातल जानेके उपरान्त उसका पुत्र बाणासुर पृथ्वीमें शोणिताख्यपुर रचकर दानवोंके साथ रहने लगा।

श्रीमद्भागवत—(दशमस्कन्ध–६२ वाँ अध्याय) राजा बलिके १०० पुत्र उत्पन्न हुए, जिनमेंसे उसका ज्येष्ठ पुत्र बाणासुर शोणिताख्यपुरमें राज्य करता था। शिवजी उसकी तांडव गतिके नृत्यसे प्रसन्न हो, उसकी इच्छानुसार अपने कुल समेत उसके घरमें स्थित हुए। एक समय बाणासुरने शिवजीसे कहा कि आपके अतिरिक्त मुझसे युद्ध करनेवाला दूसरा कोई नहीं देख पड़ता। विना युद्ध किये मेरी भुजायें खुजलाती हैं इसलिये कृपा करके आप मुझसे युद्ध कीजिये। तबतो शिवजी क्रुद्ध होकर बोले कि मेरे समान बलवान्से जब तेरा युद्ध होगा तब तेरा गर्व टूट जायगा।

बाणासुरकी ऊखा नामक एक कन्या थी। स्वप्नमें अनिरुद्धके साथ उसका समागम हुआ। जागनेपर वह हे कान्त ! तुम कहाँ गये इस प्रकार पुकारती पुकारती सखियोंके बीचमें गिर पड़ी। तब बाणासुरके मंत्री कुभाण्डककी पुत्री चित्ररेखा देवता मनुष्य सबके चित्र लिख २ कर उसको दिखलाने लगी। अन्तमें अनिरुद्धका चित्र देखकर ऊखाने कहा कि मेरा चित्त चोर तो यही है। तब योग बलसे चित्ररेखा आकाश मार्गसे होकर द्वारिकापुरीमें जा पहुँची। उस समय अनिरुद्ध पलँगपर सो रहे थे उन्हें वह योगबलसे उठाकर शोणितपुरमें ले आई। वे दोनों गुप्तभावसे घरमें रहने लगे। कुछ दिनोंके पश्चात् बाणासुरने पहरेदारोंके मुखसे यह वृत्तान्त सुन कन्याके घरमें जाकर अनिरुद्धको देखा और कुछ युद्ध होनेके बाद अनिरुद्धको नागफाँससे बाँध लिया।

(६३ अध्याय) वर्षाऋतुके ४ महीने बीत जानेपर नारदजीने द्वारिकामें आकर श्रीकृष्णचन्द्रसे अनिरुद्धके कारागारका समाचार सुनाया। तब श्रीकृष्णचन्द्रने बड़ी भारी सेनाके साथ जाकर बाणासुरके नगरको घेरलिया। अपनी सेना लेकर बाणासुरभी पुरसे बाहर निकला और उसकी सहायताके लिये महादेवजी भी अपने. गणोंके संग रणभूमिमें सुशोभित हुए। भयानक युद्ध होनेके बाद श्रीकृष्णचन्द्रजीने जृंभण अस्त्र चलाया. जिससे शिवजी जँभाई लेने लगे। तब श्रीकृष्णजीने असुरकी सब सेनाका विनाश करके बाणासुरकी ४ भुजाओंको छोड़ शेष भुजाओंको काट डाला। उसके पश्चात् बाणासुरने कृष्णचन्द्रको प्रणाम करके ऊखाके सहित अनिरुद्धको रथमें बैठाकर बिदा कर दिया। श्रीकृष्णचन्द्र अपनी सेनाके संग द्वारिकामें आये। और बाणासुर शिवजीका मुख्य पार्षद हुआ।

(यह कथा शिवपुराण—(धर्मसंहिताके ७ वें अध्यायमें और आदि ब्रह्मपुराणके ९४ वें अध्यायमें भी है।)

स्कन्दपुराण–(केदारखंड, उत्तर भाग, २४ वाँ अध्याय) गुप्त काशीकी पश्चिम दिशामें बाणासुर दैत्यने अजय वरदान पानेके लिये शिवजीका कठिन तप किया। वहाँ बाणेश्वर महादेव स्थित होगये। बाणासुरने उनके प्रसादसे सम्पूर्ण जगत्को जीत लिया।

गुप्त काशी।

भिक्षुककी कोठरीसे आगे १$\frac{3}{4}$ मीलपर एक झरना और १$\frac{1}{2}$ मीलपर गुप्तकाशी है। यहाँ दो चौगान हैं। उनमेंसे दक्षिणके चौगानमें चारोंओर पक्के दो मञ्जिले दोहरे मकान जिनमें यात्री टिकते हैं और उत्तरके चौगानमें ३ और पक्के दो मञ्जिले दोहरे मकान और धर्मशालायें और पश्चिम ओर पहाड़के नीचे विश्वनाथ शिवका पूर्वमुखका मन्दिर है। मन्दिर साधारण डौलका है। उसके शिखरपर छोटी बारादरी और सोनेका कलश है। विश्वनाथ शिवलिंग अनगढ़ है। शिवका अरघा, जलधरीका घड़ा और ऊपरका पर्दा (छत्र) चाँदीका है। शिवजीके पास चाँदीसे बनी हुई उनकी शृंगार मूर्त्ति और ताखमें चाँदीहीसे बनी हुई १$\frac{1}{2}$ हाथ ऊँची अन्नपूर्णाकी चतुर्भुजी मूर्त्ति है। मन्दिरके आगे पत्थरके टुकड़ोंसे छाया हुआ एक द्वारवाला जगमोहन है; जिसमें नन्दीकी पीतलकी छोटी मूर्त्ति और गणेशजीकी एक मूर्त्ति बनी है। जगमोहनके द्वारके दोनों ओर ताखमें दो द्वारपाल खड़े हैं। पुजारी यात्रीसे द्वारपर एक पैसा लेकर भीतर जाने देता है। और शिवजीके पास एक थारीमें रुपया, अठन्नी चवन्नी इस इच्छासे रक्खी रहती है कि यात्री लोग जानें कि यहाँ पैसा नहीं चढ़ता है।

शिवमन्दिरके आगे लगभग १५ हाथ लम्बा और इतनाही चौड़ा मणिकर्णिका कुण्ड है। कुण्डके पश्चिमकी दीवारमें १ पत्थरहीके हाथीका मुख और दूसरा पीतलका गोमुख बना है। इन दोनोंसे झरनेका जल कुण्डमें गिरता है और कुण्डका जल बाहर निकला करता है। हाथीके मुख पर शाका १६६४, संवत् १७९९ और गोमुख पर संवत् १९३२ और टिहरीके राजा रणवीरसिंहका नाम खुदा हुआ है। कुण्डके पूर्व पुराना नन्दी रक्खा हुआ है और उसके चारोंओर पत्थरका फर्श है।

विश्वनाथजीके मन्दिरके पासही एक छोटा गुम्बजदार मन्दिर है। उसमें मार्बुल पत्थरके बैल पर चढ़ीहुई गौरीशङ्करकी मूर्त्ति है। मूर्त्तिके दाहिने भागमें पुरुष अर्थात् शिवके बाम भागमें स्त्री याने पार्वतीके चिह्न देखनेमें आते हैं। उसके नीचे पत्थर पर संवत् १९३२ खुदा हुआ है। मन्दिरके सामने नन्दीकी मूर्त्ति है।

चौगानके उत्तरके एक मकानमें पाण्डवोंकी प्राचीन मूर्त्तियां हैं। दोनों चौगानोंके बाहर चौरस भूमि नहीं है। दुकान्दार लोगभी धर्मशालाहीमें रहते हैं। गुप्तकाशीके अधिकारी ऊखीमठके रहनेवाले केदारनाथके रावल (पुजारी) हैं।

गुप्तकाशीसे बर्फकी सर्दी आरम्भ होजाती है। वहाँसे ३$\frac{1}{2}$ मील दूर पहाड़के ऊपर शोणितपुर और सामने मन्दाकिनीके उस पार ऊखीमठ है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा-स्कन्दपुराण-(केदारखण्ड, उत्तर भाग, २४ वाँ अध्याय) केदारेश्वरसे ६ योजन दक्षिण काशीके तुल्य भुक्ति मुक्तिको देनेवाला गुह्य वाराणसी क्षेत्र है। उस क्षेत्रका बिस्तार २ योजन है। वह गुप्त स्थान है। उसको गुप्तकाशी कहते हैं। उसके स्मरणमात्रसे सब आपत्तियां विनाश होजाती हैं। वहाँ महाराज शङ्कर सर्वदा बास करते हैं और गंगा और यमुना गुप्त रूपसे रहती हैं। वहां स्नान करनेवाला दुर्लभ मुक्ति पाता है। माघ मासमें मकर राशिके सूर्य होने पर वहाँ स्नान करनेसे असंख्य फल लाभ होता है।

नालगाँव-गुप्तकाशीसे आगे जाने पर दुर्गाका छोटा मन्दिर मिलता है। उसके आगे सेवती पुष्पके वृक्षोंका जंगल देख पड़ता है। गुप्तकाशीसे ३/४ मील नालागाँवके पास फूस टट्टीकी चार पांच दुकानें, झरना; गरुड़का एक बहुत छोटा मन्दिर और ललितादेवीका छोटा पुराना मन्दिर है; जिसके शिरपर मुलम्मेदार दो हाथ ऊँचा ध्वजदण्ड खड़ा है। ललिताकी मूर्त्तिकी दहिनी ओर शिवजीकी मूर्त्ति है। मन्दिरके पास बहुत छोटे छोटे चार पांच मन्दिर और लोगोंके झूलनेके लिये एक झूला है।

यात्री लोग केदारनाथसे यहाँ लौट कर यहांसे उखीमठ और चमोली होकर बदरीनाथ जाते हैं। कोई कोई अपना असबाब यहाँ किसी मोदीके पास रख देते हैं और केदारनाथसे लौटकर लेलेते हैं।

नारायण कोटी।

नाला गाँवसे आगे १/२ मील दहिने तरफ पगदण्डीके पास एक मन्दिर १ मील पर एक झरना जिससे कुछ आगे दूसरा झरना और नाला गाँवसे ११/२ मील पर भेत गाँव है। वहाँ मोदियोंके १० मकान, दो झरने, साधारण कदके एक मन्दिरमें नारायणकी मूर्त्ति, जिसके पास छोटी छोटी बहुत देव मूर्त्तियां हैं, और पासही बायें ओर ऐसेही मन्दिरमें शिवलिंग है। इन मन्दिरोंके पीछे छोटे छोटे दो मन्दिर हैं। उस स्थानसे थोड़ी दूर पश्चिम साधारण डौलके एक मन्दिरमें गरुड़के कन्धे पर श्रीलक्ष्मीनारायणकी सुन्दर मूर्त्ति हैं, जिनके पास पांचों पाण्डवों और नवग्रहोंकी छोटी २ मूर्त्तियां हैं। मन्दिरके बाहर चारों कोनोंके पास अत्यन्त छोटे छोटे ४ मन्दिर और दक्षिण और पश्चिम ऐसेही १४ मन्दिर हैं। छोटे २ मन्दिरोंमें बहुतेरे ऐसे हैं, जिनमें आदमी नहीं बैठ सक्ते और बहुतेरे खाली पड़े हैं। वहां एक छोटे कुण्डमें झरनेका पानी गिरकर बाहर निकल रहा है। उसी स्थानपर वृकासुरने जिसको भस्मासुरभी कहते हैं, शिवका तप करके उनसे यह वर मांगा था कि जिसके मस्तकपर मैं हाथ धरूं वह भस्म होजाय।

संक्षिप्त प्राचीन कथा-ब्रह्मवैवर्तपुराण-(कृष्ण जन्मखण्ड-६३ वाँ अध्याय) वृक नामक दैत्यने शिवजीका तप करके उनसे यह बर मांगा कि मैं जिसके मस्तकपर हाथ धरूं वह भस्म होजावे। वर पाने पर दैत्य शिवजीहीके माथे पर हाथ देनेको उनके पीछे लगा। शिवजी भागे। अन्तमें विष्णुने दैत्यके हाथको उसीके शिरपर रखवाकर उसको भस्म करादिया।

श्रीमद्भागवत—(१० वाँ स्कन्ध—८८ वाँ अध्याय) शकुनी दैत्यका पुत्र वृकासुर केदार तीर्थमें जाकर अपने शरीरको छूरीसे काट काट अग्निमें हवन करने लगा। जब सातवें दिन उसने शिरको काटना चाहा, तब शिवने अग्निकुण्डसे निकलकर उसका हाथ पकड़ लिया और प्रसन्न होकर उसे बर माँगनेको कहा। दैत्य बोला कि जिसके शिरपर मैं अपना हाथ रखदूं वह उसी समय भस्म होजावे। शिवजीने हँसकर उसको यह बरदान देही दिया। जब वृकासुर शिवजीके मस्तकपर हाथ रखनेके लिये चला तब शिवजी वहाँसे भागे। दैत्य उनके पीछे दौड़ा। महादेवजी सम्पूर्ण देशोंमें भ्रमण करके जब वैकुण्ठमें विष्णुके सामने होकर भागे तब विष्णुने ऋषि वेष होकर वृकासुरसे पूछा कि तू इतना घबड़ा कर कहाँ

जाता है। जब उसने उनसे सब वृत्तान्त कहा तब विष्णुने कहा कि तू अज्ञानी है कि बौरहे महादेवके वचनका विश्वास करता है। तू अपने शिरपर हाथ रखकर पहले उस बरदानकी परीक्षा करले। यह सुनतेही वृकासुरने परमेश्वरकी मायासे उस वचनको सत्य मानकर जैसे-ही अपने शिरपर हाथ रक्खा वैसेही वह भस्म होगया।

धामाकोटी।

नारायणकोटीसे आगे १ मीलपर छोटे छोटे २ झरने; १¼ मीलपर दो झरने; १½ मील पर व्युंगगढ़ चट्टी, १¾ मीलपर बड़ा झरना, २ मीलपर ५ मकानकी व्युंगगढ़ नामक छोटी वस्ती, एक छोटा झरना और साधुकी कोठरी, और ३¾ मीलपर धामाकोटी वस्ती है।

व्युंगगढ़चट्टी एक नदीके पास है। नदीपर काठका पुल बना है। वहाँ मोदियोंके टट्टी छप्परसे बने हुए बहुत मकान; एक पनचक्की; कड़ा और अंगूठी बनानेवाले लोहार और झरनेकी कलसे काठके प्याले, कठौते, कठारी, लोटे बनानेवाले बढ़ई हैं। गुप्तकाशीसे वहाँ तक बहुत जगह उतराई हैं। व्युङ्गगढ़ वस्तीसे ½ मील तक कठिन चढ़ाई है।

महिषमर्दिनी देवी—धामाकोटी वस्तीके पास एक छोटे मन्दिरमें एक फीट ऊँची श्रेष्ठ धातुसे बनी हुई महिषमर्दिनी देवीकी अष्टभुजी मूर्त्ति है। उसके पास ताँबा आदि धातुओंके पत्तरोंपर बनी हुई देवियोंकी बहुतेरी मूर्तियाँ हैं। मन्दिरके बाहर, जिसपर चैत्र और आश्विनकी अष्टमीको देवीकी चल मूर्त्ति झूलेपर झुलाई जाती है, बीस बीस हाथके दो खम्भे गड़े हैं, दोनोंके शिरोंपर एक लकड़ी है। मोटे मोटे दो जञ्जीर अलग अलग लकड़ीसे नीचे लटके हैं। सीकड़ोंमें नीचे १ पीढ़ी लगी है। कोई कोई यात्री उस झूलेमें बैठकर झूलते हैं। धामाकोटी वस्तीमें कड़ा और अंगूठी बनाने वाला लोहार और प्याले, कठारी इत्यादि काठके बर्तन बनाने वाला बढ़ई है। ऐसा प्रसिद्ध है कि इसी स्थानपर महिषासुरको मारने वाली देवीजी निवास करती हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—बाराहपुराण—(८८ वाँ अध्याय) ब्रह्माजी कैलासमें जाकर शिवजीसे कहने लगे कि महिषासुरसे पीड़ित होकर सम्पूर्ण देवता मेरे शरण आये हैं, इसकी शान्तिका कोई उपाय आप विचारें। शिवजीने विष्णु भगवान्का ध्यान किया। उसी समय विष्णु भगवान् प्रकट हुए, तब तीनों अन्तर्द्धान होकर एक मूर्त्ति होगये। उसी मूर्त्तिकी दृष्टिसे एक कुमारी दिव्य रूपसे प्रकट हुई। तीनों देवोंने प्रसन्न होकर कुमारीको बर दिया कि तुम्हारा नाम त्रिकला है। तुम सब कालमें विश्वकी रक्षा करो। तुम्हारे देहके तीन वर्ण (रङ्ग) हैं इस लिये तुम अपने शरीरको तीन भागोंमें विभक्त करो। यह सुन कुमारी तीन रूपसे प्रकट हुई। एकका शुक्ल वर्ण, दूसरीका रक्त वर्ण और तीसरीका कृष्ण वर्ण हुआ। जो ब्राह्मीनामक देवी शुक्ल वर्णा थी वह प्रजाकी उत्पत्ति करनेमें प्रवृत्त हुई; जो रक्तवर्णा कुमारी थी वह शंख, चक्र, गदा, पद्म निज करकमलोंमें धरकर विष्णुके रूपसे संसारकी रक्षा करनेलगी और जो नील बर्णी त्रिशूल धारण किये रौद्री शक्ति थी वह जगत्के संहार करनेमें प्रवृत्त हुई।

(९० वाँ अध्याय) त्रिशक्तियोंमेंसे वैष्णवी शक्ति कुमार व्रत धारणकर बदरिकाश्रममें अकेली तप करने लगी। तप करते करते बहुत काल व्यतीत होनेसे उस शक्तिके मनमें क्षोभ उत्पन्न हुआ, जिसके होतेही अनेक कुमारियां उत्तम उत्तम रूप धारण कर उत्पन्न हुईं, जो

एकसे एक मनोहर और उत्तम उत्तम वस्त्र भूषणोंसे भूषित थीं। इस प्रकार कुमारियोंकी उत्पत्ति देख कर प्रधान देवीने निज मायासे अति रमणीय एक नगर निर्माण किया। तब देवियोंका गण उसमें निवास करने लगा। प्रधान देवीगणोंसे सेवित होकर राजसिंहासनमें विराजमान हुई।

एक समय नारद मुनि महिषासुर दैत्यकी पुरीमें जाकर उससे बोले कि मैंने मन्दराचलमें पहुँचकर वहाँ देखा था कि एक नगर अनेक पदार्थोंसे परिपूर्ण और उत्तमोत्तम कुमारियोंसे भूषित है। उन्हीं कुमारियोंमेंसे एक निज प्रभासे विश्वको प्रकाश करती हुई वहाँ निर्भय विराजमान है, इसलिये हम आपके पास आये हैं; सब रत्नोंके स्वामी आप हैं और वह स्त्री रत्नभी आपहीके योग्य है।

(९२ वाँ अध्याय) महिषासुरका भेजा हुआ विद्युत्प्रभ नामक दूत मायापुरमें देवीजीके पास पहुँचा। वह प्रणाम करके कहने लगा कि हे देवि! रेवा नदीके तटपर माहिष्मती नामक पुरीके समीप महिषासुरका जन्म हुआ। वह तप करके ब्रह्मासे वरदान पाकर देवोंसे अजेय; असुरोंका राजा हुआ है। वह नारदजीसे तुम्हारा रूप और गुण सुनकर तुमपर मोहित है, इसलिये उसका मनोरथ सिद्ध करना तुमको उचित है। देवीने इसका कुछ उत्तर नहीं दिया। दूत देवीकी जया नामकी सखीका रूखा वचन सुनकर चुपचाप चल दिया। अनन्तर देवीकी आज्ञासे सब कुमारियाँ सौम्य स्वभाव और मनोहर रूप छोड़ कर नाना अस्त्र शस्त्र धारण कर संग्राम करनेको तय्यार हुई। उसी समय अगणित सेना संग लिये महिषासुर आ पहुँचा। पहुँचतेही देवीके गणोंके साथ महिषासुरकी सेनाका संग्राम होने लगा। देवीजीके गणोंने महिषासुरकी असंख्य सेनाको क्षण मात्रहीमें विध्वंस कर दिया। जो कुछ थोड़ेसे दैत्य बचे थे, उन्होंने महिषासुरके पास पहुँच सब वृत्तान्त कह सुनाया। तब महिषासुर अति क्रोधित हो हाथमें गदा ले देवीके पास पहुँचा। श्रीदेवीजीने अठारह भुजा धारण कर नाना भांतिके अस्त्रशस्त्रोंको ले शिवजीका स्मरण किया। शिवजीके प्रकट होने पर देवीने उनसे आज्ञा ले क्षण मात्रहीमें सम्पूर्ण दैत्योंका संहार कर दिया। तब महिषासुर भाग कर अन्तर्द्धान होगया। थोड़ी देरमें फिर वह आकर युद्ध करने लगा। इसी प्रकार वह कभी भाग जाता था। और कभी आकर युद्ध करता था। इसी भांति देवीजीको युद्धमें १००० वर्ष व्यतीत हुए। सारे ब्रह्माण्डमें घूम घूम कर महिषासुर युद्ध किया करता था। एक समय देवीजीने शतशृङ्ग नामक पर्वत पर सिंहसे कूद कर महिषपर सवार हो त्रिशूलसे महिषासुरका कण्ठ छेद खड्गसे उसके शिरको दो खण्ड कर दिया। महिष निज प्राणको त्याग स्वर्गको गया।

(मार्कण्डेयपुराणके ८२ और ८३ अध्यायमें और देवी भागवतके ५ वें स्कन्दके दूसरे अध्यायसे २० वें अध्याय तक देवीकी उत्पत्ति और महिषासुरके वधकी कथा है।)

स्कन्दपुराण–(केदारखण्ड, उत्तर भाग, २५ वाँ अध्याय) केदारके दक्षिण भागमें महिषखण्ड स्थान है। पूर्व कालमें श्रीदेवीजीने महिषासुरको काट कर उसके देहका खण्ड उसी पर्वतपर फेंक दिया। उसी स्थानमें महिषमर्दिनी देवी प्रकट हुई, जिसका दर्शन करने वाला मनुष्य शिवलोकमें निवास करता है। वहाँ भगवतीश्वर नामक महादेव और पद्मती नदी है। उसके दक्षिण भागमें कुंभिका धारा है।

फटा चट्टी—धामाकोटीसे आगे दो छोटे झरने और ½ मील पर महिखण्डा बस्ती है। इसमें पक्के मकान बने हैं, बस्तीसे थोड़े आगे दो झरने और एक जगह ईशानेश्वर शिवलिंग है, जिसके पास दो तीन पत्थरोंपर छोटी छोटी बहुतसी मूर्त्तियां बनी हैं। धामाकोटीसे १ मील आगे एक झरना और १⅜ मील पर फटा चट्टी है। वहाँ मोदियोंकी टट्टी फूससे बने हुए बहुत मकान, एक पक्की सरकारी धर्मशाला, लोहार और चमारकी दूकानें, एक छोटी नदी, दो झरने, कई पनचक्कियां और देवदारुके बड़े बड़े दो वृक्ष हैं। १⅛ मील पहलेसे धामाकोटी तक मार्ग सुगम है। फटाचट्टीके आस पास कई मीलों तक रामदाना उत्पन्न होता है।

फटाचट्टीसे ¼ मील पर एक छोटा झरना और एक छोटी गुफा; ½ मील पर एक झरना; १ मील आगे छोटी नदीपर शहतीरोंका पुल, १⅞ मील आगे छोटी नदीपर शहतीरोंका पुल; २⅜ मीलपर एक बस्ती; २⅞ मीलपर छप्परकी गोसाईंचट्टी; ३ मीलपर शेरसीचट्टीमें ३ मकान, कड़ेवाले लोहारकी दुकान और एक झरना; ३⅞ मीलपर एक छोटी कोठरीमें गणेशजीकी मूर्त्ति; ४ मीलपर कालडोंगी नदीपर शहतीरोंका पुल; और ४½ मीलपर रामपुरचट्टी है।

रामपुर—वहाँ थोड़ा मैदान, टट्टी और फूससे बनी हुई बड़ी बड़ी ६ दुकानें और २ झरने हैं।

रामपुरचट्टीसे १½ मील पाटीगाड़ नदीपर काठका पुल, पनचक्की और काठके प्याले, कठारीकी दूकान हैं। नदीसे थोड़ी दूर आगे शाकम्भरी और त्रियुगीनारायणकी राह सोनप्रयाग और केदारनाथकी सड़कसे अलग होजाती हैं। वहाँसे सोनप्रयाग सीधी राहसे १⅛ मील और त्रियुगीनारायण होकर ६ मील है। वहाँसे मन्दाकिनी दहिने छूट जाती है और त्रियुगीनारायणकी कठिन चढ़ाई आरम्भ होती है। रामपुरसे २ मीलपर कड़ा, अँगूठीवाले लोहारकी दूकान और एक झरना, २½ मीलपर एक झरना, ३ मीलपर केमारा बस्ती और ३½ मीलपर शाकम्भरी देवी हैं।

शाकम्भरी दुर्गा।

कोठरीके सामने एक छोटे मन्दिरमें ताँबेके पत्रमें शाकम्भरी देवीकी मूर्त्ति है, जिसके पास इसी तरहसे पत्तरोंपर बनी हुई देवियोंकी बहुतसी मूर्त्तियाँ हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत (वनपर्व ८४ वाँ अध्याय) तीनों लोकोंमें विख्यात शाकम्भरी देवीका स्थान है। वहाँ हजार वर्ष तक भगवतीने प्रति वर्षमें १ महीना शाक खाकर तप किया था। देवीकी भक्तिसे पूरित मुनीश्वर वहाँ आये। भगवतीने उसी शाकसे उनका भी सत्कार किया। उसी दिनसे उस देवीका नाम शाकम्भरी हुआ। शाकम्भरी देवीके स्थानमें जाकर पवित्र और ब्रह्मचारी होकर तीन दिन शाक खाकर रहना चाहिये। १२ वर्ष तक शाक खाकर रहनेसे जो फल प्राप्त होता है, उस स्थानपर केवल ३ दिन शाकाहार करके निवास करनेसे वही फल मिलता है।

देवीभागवत—(७ वाँ स्कन्द, २८ वाँ अध्याय) हिरण्याक्षके वंशमें अति बलवान् दुर्ग नामक दैत्य हुआ। वह हिमालय पर जाकर ब्रह्माका तप करने लगा। ब्रह्माके प्रकट

होनेपर उसने यह वरदान माँगा कि मैं देवताओंको जीतूँ । जब ब्रह्माजी एवमस्तु कहकर चले गये तब दैत्यने अमरावतीपुरीको जीतलिया । जगत्में बड़ा अनर्थ होने लगा । यज्ञ न होनेसे १०० वर्ष तक अनावृष्टि रही । तब ब्रह्माने हिमालय पर्वतके निकट जाकर समाधि ध्यान और पूजासे देवीको संतुष्ट किया उस समय भगवतीने प्रकट होकर अपने हाथसे अति स्वादयुक्त शाक, फल मूल आदि और नाना प्रकारके अन्न और पशुओंके भोजन करनेको चारा दिया और शाकसे सब जीवात्माओंका पोषण किया । उसी समयसे देवीजीका एक नाम शाकम्भरी हुआ ।

दुर्गासुर दूतोंके मुखसे यह वृत्तान्त सुनकर अपनी सेना ले देवीसे युद्ध करनेको पहुंचा अनन्तर देवीजीने अपने शरीरसे ३२ शक्तियाँ उत्पन्न कीं । इनके अतिरिक्त ६४ और प्रकट हुईं । १० दिनोंमें असुरकी अशेष सेना मारी गई । ग्यारहवें दिन वह बहुत पूजनादि कर युद्ध करने लगा और सब शक्तियोंको जीतकर महादेवी शताक्षीके आगे लड़नेको आया । अन्तमें भगवतीने दुर्ग दैत्यको मारडाला । इसके पश्चात् देवीजीने कहा कि हमने दुर्गदैत्यको मारा है, इससे हमारा नाम दुर्गा और असंख्य नेत्र हैं इसलिये शताक्षी नाम होगा । जो मनुष्य हमारे इन दोनों नामोंका स्मरण करेगा वह मायासे विमुक्त होकर परमपद पावेगा ।

स्कन्दपुराण—(केदारखण्ड, प्रथम भाग, ४६ वाँ अध्याय) परम पीठ शाकम्भरीक्षेत्र सब पापोंको नास करनेवाला है, जहां मुनियोंकी रक्षाके लिये शाकम्भरी देवी प्रकट हुई । वहाँ जाकर शाकम्भरीको नमस्कार करनेसे १० अश्वमेध यज्ञका फल मिलता है । वहाँ शाकका एक बड़ा वृक्ष है देवीके दक्षिण भागमें मरकतमणिका एक शिवलिंग है । उसके वाम भागमें नन्दिनी नदी बहती है । उसी प्रदेशमें रुरू नामक भैरवकी मूर्त्ति है । शाकंभरी पीठका प्रमाण ३ योजन लम्बा और २ योजन चौड़ा है । जो मनुष्य नियम पूर्वक वहाँ ५ रात्रि निवास करता है उसको विपुल सिद्धि प्राप्त होती है ।

त्रियुगीनारायण ।

शाकम्भरीसे ½ मीलपर ३ झरने, १ मीलपर बड़े झरनेका पुल, १ पनचक्की और एक झरना और १½ मीलपर त्रियुगीनारायणका स्थान है ।

त्रियुगीनारायणमें ब्रह्मकुण्ड नामक एक चतुष्कोण कुण्ड, उसके पास उससे छोटा रुद्रकुण्ड और रुद्रकुण्डके निकट कूपके समान गोलाकार विष्णुकुण्ड है । ब्रह्मकुण्ड और रुद्रकुण्डमें लोग स्नान करते हैं और विष्णुकुण्डका जल सब लोग पीते हैं । उसके पास एक स्थानमें झरनाका थोड़ा जल है, जिसको लोग सरस्वतीकुण्ड कहते हैं । उसमें पण्डे लोग यात्रियोंको तर्पण कराते हैं । झरनेका जल भीतरसे चारों कुण्डोंमें आता है और ब्रह्मकुण्डसे बाहर निकलता है । उन कुण्डोंके पास नारायणका एक साधारण शिखरदार मन्दिर है, जिसमें नारायणकी धातुकी मूर्त्ति स्थापित है । उसके पास धातुके पत्तरोंमें बनी हुई लक्ष्मी, अन्नपूर्णा, सरस्वती आदिकी पांच-सात मूर्त्तियाँ हैं । मन्दिरके आगे जगमोहनके स्थानपर एक चतुष्कोण गृह है, जिसमें एक चबूतरेपर कुण्ड बना है । कुण्डमें सर्वदा अग्नि रहता है । लोग कहते हैं कि शिवजी और पार्वतीके विवाहके समयका यह कुण्ड है । इसी स्थानपर शिवजीका विवाह पार्वतीसे हुआ । कई यात्री लकड़ी मोल लेकर कुण्डमें डालते हैं और कुण्डकी विभूति ले

जाते हैं। नारायणके मन्दिरमें अन्धकार रहता है इसलिये दिनमें भी दीपक जलता है। नारायणके मन्दिरके पश्चिम पूर्वोक्त चारों कुण्ड और पूर्व शिव, गरुड़ आदि देवताओंके अत्यन्त छोटे छोटे ५ मन्दिर हैं।

वहाँ कई पक्की धर्मशालायें एक सरकारी पक्की धर्मशाला, एक पूरीकी दुकान और तीन चार मोदी हैं। त्रियुगीनारायणकी चढ़ाई कड़ी है, इसलिये बहुतेरे यात्री पाटीगाड़ नदीसे त्रियुगीनारायणका मार्ग छोड़कर सीधी रास्तेसे केदारनाथ जाते हैं। झम्पानवाले चढ़ाईका इनाम यात्रीसे लेते हैं।

गङ्गोत्तरीके बहुतेरे यात्री, जो हृषीकेश, देवप्रयाग और श्रीनगरसे गङ्गोत्तरी जाते हैं; पगदण्डीसे यहाँ आकर केदारनाथकी राह लेते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत-(अनुशासनपर्व, ८४ वाँ अध्याय) हिमालय पर्वतपर भगवान् रुद्रके सहित रुद्राणी देवीका विवाह हुआ था।

स्कन्दपुराण—(केदारखण्ड, प्रथमभाग, ४३ वाँ अध्याय) केदारमण्डलमें त्रिविक्रमा नदीके तटके ऊपर डेढ़ कोसपर यज्ञपर्वतमें नारायण क्षेत्र है। वहाहीं ब्रह्मादिक देवताओंने हरिका यज्ञ किया था। वहाँ सर्वदा अग्नि विद्यमान रहते हैं। उसी स्थानपर गौरीसे महादेवजीका विवाह हुआ था। कोटिन पापसे युक्त मनुष्य क्यों न हो; वहाँ १० रात्रि उपवास करके प्राण त्यागनेसे वैकुण्ठमें बसता है। विष्णुकी नाभीसे परम पवित्र सरस्वतीकी धारा वहाँपर आई है। जो प्राणी मन्त्रसे युक्त होकर उसका जल पीता है, करोड़ कल्पतक उसकी पुनरावृत्ति नहीं होती और उसके २१ पुरुषोंका उद्धार होजाता है। जो मनुष्य वहाँ नारायणके मन्त्रसे हवन करता है वह सब पापोंसे छूट जाता है। वहाँका भस्म धारण करनेवाला सर्वदेव मय हो जाता है। वहाँ ब्रह्मकुण्ड नामक पवित्र तीर्थ है, जिसमें स्नान करनेसे ब्रह्मलोक मिलता है। उसके दक्षिण भागमें विष्णु तीर्थ है; जिसमें स्नान करने वाला वैकुण्ठमें निवास करता है। वहाँके सरस्वती कुण्डमें स्नान करनेसे सब पाप क्षय होता है। नारायण देवके दर्शन करनेसे शिवलोक मिलता है।

बाराहपुराण—(२२ वाँ अध्याय) शिव पार्वतीका विवाह तृतीयाको हुआ, इसलिये तृतीया उनका प्रिय दिन है।

सोनप्रयाग-त्रियुगीनारायणसे लौटते $1\frac{3}{4}$ मीलपर कुमारा वस्ती और १ झरना और $2\frac{3}{4}$ मीलपर सोनप्रयाग है। शाकम्भरीदेवीसे सोनप्रयाग तक कठिन उतराई है।

सोनप्रयागमें ऊपरसे नीचे मन्दाकिनीका जल जोरशोरसे गिरता है। वासुकी गङ्गा पश्चिमोत्तरसे आकर वहाँ मन्दाकिनीमें मिलगई है। सोनप्रयागसे १२ मील दूर कई मील लम्बा चौड़ा वासुकी तालाब है। उसीसे वासुकी गंगा निकली है। यात्री लोग आषाढ़ और सावनमें बर्फ गल जाने पर वहाँ जाते हैं। सोनप्रयागमें मन्दाकिनीका जल शुक्ल और बासुकी गङ्गाका जल हरित देख पड़ता है।

वासुकीगङ्गापर अङ्गरेजी सरकारका बनवाया हुआ १७० फीट लम्बा लोहेका हलका लटकाऊ पुल है। पुलके निकट एक कोठरीमें गरुड़की मूर्त्ति और एक मोदीका मकान है। उस स्थानको झिलमिलीचट्टीभी लोग कहते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा-स्कन्दपुराण-(केदारखण्ड, प्रथमभाग, ४२ वाँ अध्याय) कालिका नदी, जिसको बासुकी आदि नाग नित्य सेवन करते हैं, गङ्गाजीके अंगसे उत्पन्न है। वहाँ सरोवरमें शेषेश्वर महादेव स्थित हैं। नदीके निकासके स्थान पर कालिका देवी हैं, इसीसे नदीका कालिका नाम पड़ा है। मन्दाकिनी और त्रिविक्रमा नदीके संगमके पास कालीश नामक शिव बिराजते हैं।

सोनप्रयागसे आगे केदारनाथकी ओर सर्दी अधिक पड़ती है, जाड़ेके दिनोंमें रहने वाली बस्ती नहीं है और पानीमें दाल नहीं गलती। सोनप्रयागसे आगे मन्दाकिनीके दहिने किनारेसे चलनां होता है और $\frac{3}{4}$ मील पर मुण्डकटा गणेशजी मिलते हैं।

मुण्डकटा गणेश।

एक कोठरीमें विना शिरकी श्रीगणेशजीकी मूर्त्ति है। उसके दहिने ओर पार्वतीजी और बायें ओर एक शिवलिंग स्थित है। वहाँ एक पुजारी रहता है और छप्परके २ मकान हैं। जिस भांति श्रीमहादेवजीने गणेशजीका शिर काटा था वह कथा नीचे लिखी जाती है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा-स्कन्दपुराण-(केदारखण्ड, प्रथमभाग, ४२ वाँ अध्याय)। गौरीतीर्थसे १ कोस दूर विनायकद्वारपर गणेशजी स्थित हैं, जिनको पार्वतीजीने स्नानके समय अपने अंगरागसे बनाकर अपने द्वारपर बैठा दिया था और शिवजीने उनका शिर काट डाला। पीछे महादेवजीने हाथीका शिर जोड़ कर गणेशजीको जिला दिया। तबसे वह गजानन हो गये। जो मनुष्य नाना प्रकारके नैवेद्यसे गणेशजीकी पूजा करता है, उसको मरनेके पश्चात् शिवलोक मिलता है।

शिवपुराण-(ज्ञानसंहिता; ३३ वाँ अध्याय) एक समय श्रीपार्वतीजी गृहमें स्नान करती थीं। नन्दी द्वारपर स्थित था। उसके निषेध करने पर शिवजी उसको घुड़क कर भीतर चले आये। पार्वतीजी लज्जित होकर स्नानसे निवृत्त हो उठ बैठी। उस समय उन्होंने विचार किया कि एक ऐसा श्रेष्ठ गण होना चाहिये, जो मेरी आज्ञामें दृढ़ रहे। ऐसा विचार उन्होंने हाथके जलसे अपनी देहका मैल उतार कर उससे एक सुन्दर पुत्र निर्माण किया और द्वारपर बैठा कर उससे कह दिया कि तुम किसीको भीतर मत आने दो। बालक द्वारपर स्थित हुआ। पार्वतीजी सखियों सहित स्नान करने लगीं। उसी समय श्रीमहादेवजी अपने गणों सहित वहां आकर भीतर प्रवेश करने लगे। बालकने उनको रोका और नहीं मानने पर दण्डसे उनको ताड़न किया। शिवजी अपने गणोंसे बोले कि इसको निवारण करो और आप कैलाससे एक कोस दूर जा बैठे। बालकने शिवके गणोंपर दण्डसे प्रहार किया। तब उन्होंने शिवजीके निकट जाकर यह वृत्तान्त कह सुनाया। महादेवजीकी आज्ञासे वे गण बालकके पास फिर आये और उनको समझाने लगे। पार्वतीजीने कलबल शब्द सुनकर अपनी सखीको बालकके पास द्वारपर भेजा। सखीने देखकर सब वृत्तान्त पार्वतीसे कह सुनाया और यह भी कहा कि यदि द्वारपर हमारा गण नहीं होता तो शिवजीके सब गण भीतर आजाते। पार्वतीजीकी आज्ञासे सखीने द्वारपर जाकर बालकसे कहा कि हे भद्र! तुमने अच्छा काम किया कि इनको बलसे प्रवेश करने नहीं दिया। तुम ऐसा करो कि यों तो तुमको परास्त करके या विनय करके वे लोग भीतर आवें। बालक

शिवके गणोंसे बोला कि हे श्रेष्ठो ! मैं पार्वतीजीका पुत्र और तुम लोग शिवजीके गण हो; जो कर्तव्य हो सो करो । अब तुम या तो मुझे जीतकर या विनय करके मन्दिरमें जाओ । ऐसा सुन गणोंने शिवजीके पास जाकर सब वृत्तान्त कह सुनाया । (३३ वाँ अध्याय) शिवजीने उनको युद्ध करनेकी आज्ञा दी । वे आकर लड़ने लगे । बालकने सबको परास्त किया । शिवके सब गण भाग गये । उसी समय ब्रह्माजी, विष्णुजी और इन्द्र वहाँ आये । ब्रह्माजी बालकको समझानेके लिये उसके निकट गये । बालकने उनको शिवका अनुचर जानकर उनकी डाढ़ी मूँछ उखाड़ ली और उनपर परिघका प्रहार किया तब श्रीमहादेवजीकी आज्ञासे इन्द्रादिक देवता और षण्मुख आदिक गण जाकर चारोंओरसे बालक पर शस्त्र चलाने लगे । उस समय पार्वतीजीने दो शक्ति निर्माण कीं । उन्होंने शत्रुओंके सब आयुधोंको ग्रहण कर अपने मुखमें डाल लिया । बालकने हाथमें परिघ लेकर सबको परास्त किया । यह सुनकर शिवजी देवताओंकी सेनाके सहित संग्राममें आये । विष्णु भगवान् भी वहाँ उपस्थित हुए । विष्णुको माया करते हुए देखकर दोनों शक्तियाँ लीन होगई । विष्णु गणेशसे युद्ध करने लगे । दोनों परस्पर लड़ते थे; इसी अन्तरमें शिवजीने त्रिशूलसे उस बालकका शिर काट डाला । नारदने पार्वतीके पास जाकर सब समाचार कह सुनाया । (३४ वाँ अध्याय) पार्वतीने क्रोध करके सहस्रों शक्तियोंको उत्पन्न किया । वे प्रलय करनेकी इच्छासे देवताओंको पकड़कर अपने मुखमें डालने लगीं । भयके मारे ब्रह्मादिक देवता पार्वतीके पास जानेमें कोई समर्थ न हुए । तब नारद आदि ऋषिगण गिरिजाके पास जाकर विनय करके क्षमा माँगने लगे । पार्वतीजीने कहा कि यदि मेरा पुत्र जीवित होजाय और तुम लोगोंके बीचमें यह पूजनीय होय और सबका अध्यक्ष बने तो जगत्का विनाश नहीं होवेगा । ऋषियोंने विष्णु आदिक देवताओंके निकट जाकर यह वृत्तान्त कह सुनाया । सबकी सम्मति होनेपर देवता लोग विधिपूर्वक बालकके कलेवरको धोकर उसका पूजन करके उत्तर दिशामें गये । प्रथमही उनको एक दाँतका हाथी मिला । तब वे लोग उसका शिर काटकर लाये । उन्होंने उसको बालकके धड़में लगा दिया । ब्रह्मा, विष्णु और शिवजीने जब वेदके मन्त्रसे अभिमन्त्रित किया, तब सुन्दर अङ्ग युक्त श्रेष्ठ बालक उठ बैठा । पार्वतीजीने प्रसन्न होकर अपनी शक्तियोंको प्रलय करनेसे निवारण किया। सब शक्तियाँ उनकी देहमें लीन होगईं । ब्रह्मा,विष्णु और शिवजी बालकसे बोले कि बेटे अबसे तुम हम तीनोंके समान पूजित होगे और मनुष्य पहले तुम्हारा पूजन करके पीछे हम लोगोंकी पूजा करेंगे । इसके उपरान्त सब देवताओंने मिलकर पार्वतीपुत्रको गणोंका स्वामी अर्थात् गणेश बनाया ।

मुण्डकटा गणेशसे १¾ मीलपर एक झरना और और २¾ मीलपर गौरी है । गौरी कुण्डके पहले खडे पहाडसे गिरता हुआ एक झरना मिलता है । सोनप्रयागसे आगे ¾ मील तक कठिन चढ़ाई है । सोनप्रयागसे गौरीकुण्ड तक मन्दाकिनीके निकटके पहाड़ और उसकी घाटी बड़े बड़े वृक्षोंके हरे जङ्गलसे ऐसी भरी है कि दूरसे पर्वतके पत्थर नहीं देख पड़ते और करारेके ऊपरसे बहुतेरी जगह मन्दाकिनीका जल नहीं देख पडता ।

गौरीकुण्ड ।

गौरीकुण्ड चट्टीपर पत्थरसे बने हुए और फूसके छप्परसे छाये हुए मोदियोंके लगभग २० मकान हैं । तीन दूकानोंपर पूरी, मिठाई बिकती है ।

वहाँ गरम जलका एक झरना है, जिसका कुछ पानी मन्दाकिनीमें और कुछ जल पीतलके गोमुखी होकर तप्तकुण्डमें गिरता है और कुण्डसे निकल कर मन्दाकिनीमें चला जाता है। तप्तकुण्ड लगभग १७ फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा चौकुण्ठा कुण्ड है। कुंडका जल इतना गरम है कि बहुतेरे यात्री जल स्पर्श कर लेते हैं। जो साहस करके कुण्डके जलमें कूदता है। वह बहुत समय तक उसमें नहीं ठहर सकता, किन्तु उस जलसे जलनेका कुछ भय नहीं है। तप्तकुण्डसे दक्षिण गौरीकुण्ड नामक खारे जलका एक कुण्ड है जिसमें यात्रीगण प्रथम स्नान करते हैं।

कुण्डसे दक्षिण एक छोटे ओसारेमें पाँच छः हाथ लम्बा उमामहेश्वर नामक शिला है। उसके निकट गौरीके छोटे मन्दिरमें गौरी, महादेव, राधाकृष्ण और ज्वालाभवानीकी मूर्त्तियाँ स्थित हैं। उस मन्दिरके समीप दो तीन अत्यन्त छोटी कोठरियोंमें शिवजी, गरुड़जी आदि देवताओंकी प्रतिमायें और मन्दिरके पीछे अमृतकुण्ड नामक मीठे जलका अत्यन्त छोटा १ कुण्ड है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्दपुराण-(केदारखण्ड, प्रथमभाग ४२ वाँ अध्याय) । केदारेश्वरसे ६ कोस दक्षिण मन्दाकिनी नदीके तीरपर सब सिद्धियोंको देनेवाला गौरी तीर्थ है। जिस स्थानपर पूर्वकालमें श्रीगौरीजीने ऋतुस्नान किया, वह स्थान गौरी तीर्थ करके प्रसिद्ध होगया। स्कन्दकी उत्पत्तिके स्थानपर थोड़ासा गर्म जल है और सिन्दूरके समान मृत्तिका है। उसी स्थानपर गौरीश्वर महादेव विराजित हैं। जो मनुष्य वहाँ स्नान करके उस स्थानकी मृत्तिका अपने शिरपर लगाता है, वह महादेवजीका बड़ा प्रिय होताहै। उसके दक्षिण गोरक्षाश्रम तीर्थमें सिद्ध गोरखनाथ नित्य निवास करते हैं। वहाँका जल सर्वदा तप्त रहता है।

स्वामिकार्त्तिकजीके जन्मकी कथा महाभारत वनपर्व २२५ वें अध्याय, शल्यपर्व ४४ वें अध्याय और अनुशासनपर्व ८५ वें अध्याय; वाल्मीकिरामायण–बालकाण्ड ३६ वें सर्ग, मत्स्यपुराण १५७ वें अध्याय; पद्मपुराण स्वर्गखण्ड १४ वें अध्याय और लिङ्गपुराणके ७१ वें अध्यायमें है। (भारतभ्रमण चौथे खण्डके कुमारस्वामीकी प्राचीन कथा देखो)

चीरवासा भैरव।

गौरीकुण्डसे आगे एक झरना और मन्दाकिनीके उस पार एक बहुत बड़ा झरना; १¼ मीलपर छोटे छोटे ४ झरने और २ मीलपर एक कोठरीमें चीरवासा भैरवकी मूर्त्ति है। कोठरीके पास कपड़ेके टुकड़े लगे हुए बहुतेरे रिङ्गाल, जो बांसकी कइनीके समान होते हैं, खड़े किये हुए हैं। गौरीकुण्डसे आगे बायेंके पर्वतपर छप्पर छाने योग्य खर, कतरे और दहिने मन्दाकिनीके उस पारके पर्वतपर हरे वृक्षोंका सघन वन देख पड़ता है।

सांक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्दपुराण–(केदारखण्ड, प्रथमभाग, ४२ वाँ अध्याय) गौरीतीर्थके पूर्व भागमें चीरवासा नामक भैरव क्षेत्रकी रक्षा करते हैं। जो मनुष्य उनको चीर चढ़ाता है, उसको सम्पूर्ण पुण्य करनेका फल मिलता है। वस्त्र नहीं चढ़ानेसे उसका सम्पूर्ण फल भैरव हरलेते हैं; इसलिये प्रयत्नसे भैरवजीका पूजन करके केदार क्षेत्रमें जाना चाहिये। उसी पर्वतपर कालीजीकी मूर्त्ति है; उनको नमस्कार करके क्षेत्रमें जाना उचित है।

चीरवासा भैरवसे आगे साधुकी एक गुफा और १ छोटा झरना, ३/४ मीलपर पर्वतके शिखरसे गिरता हुआ १ बड़ा झरना, उससे आगे १ गुफा; १ १/४ मीलपर १ छोटा झरना और साधुकी झोपड़ी; १ १/२ मीलपर छोटा झरना; १ ३/४ मीलपर पर्वतके शिखरसे गिरते हुए २ बड़े झरने और २ मीलपर भीम गोड़ा नामक स्थानपर एक पत्थरपर खोदी हुई भीमकी बड़ी मूर्त्ति है। उससे आगे १ बड़ा झरना और चट्टानके नीचे बड़ी बड़ी ४ गुफा हैं। भीमगोड़ासे १/४ मीलें आगे शिखरसे गिरता हुआ बड़ा झरना; उससे आगे तीन चार छोटे बड़े झरने और १/२ मीलपर रामवाड़ा चट्टी है। चट्टीपर पहुँचनेसे पहले एक बहुत बड़ा झरना मिलता है। चीरपट भैरवसे रामवाड़ा तक मन्दाकिनीके उस पार आठ जगह पर्वतके ऊपरसे खुले हुए बड़े बड़े झरनोंका पानी गिरता है।

रामबाड़ा चट्टी—वहाँ पत्थरकी दीवार और फूसके छप्परवाले मोदियोंके पन्द्रह बीस मकान और एक बड़ा झरना है। मन्दाकिनीकी धारा ऊँचेसे नीचे जोर शोरसे गिरती है। पानी चट्टीके पास है। पूरी, मिठाईकी कई दुकानें हैं। वहाँ जाड़ेके दिनोंमें कोई नहीं रहता।

गौरीकुण्डसे रामबाड़ा तक प्रायः सर्वत्र कठिन चढ़ाई और पत्थरीली और ठोकर वाली राह है। उस ओर मन्दाकिनीकी घाटीमें विचित्र लतावृक्ष और पुष्प देखनेमें आते हैं। बुरांस (विलायती गुलाबके समान), सेवती,मालती, पीतचम्पक, कर्णिकार, गुलचीनी आदि पुष्प जंगलकी छबिको बढ़ाते हैं।

रामबाड़ासे थोड़े आगे कई झरने, १ १/४ मीलपर एक झरना; २ मीलपर खुला हुआ बड़ा झरना और इससे आगे ऐसाही एक बड़ा झरना, २ १/२ मीलपर एक बड़ा झरना और मन्दाकिनीके उस पार पर्वतके ऊपर कुबेर भण्डार; ३ १/४ मीलपर खुला हुआ एक बड़ा झरना; ३ १/२ मीलपर एक बड़ा झरना; ४ १/४ मीलपर मन्दाकिनी और सरस्वतीका संगम; और ४ १/२ मीलपर केदारनाथ हैं।

रामबाड़ासे २ मील तक पत्थरीली, ठोकरवाली और चढ़ाईकी सड़क है,उससे आगेकी सड़क सुगम है और दो तीन जगह पर्वतके शिखरसे गिरते हुए बड़े बड़े झरनोंके पानी पर दो तीन हाथ ऊँचा बर्फ जम गया है। चौड़ी बर्फके नीचे पानी बहता है और ऊपरसे सम्पूर्ण यात्री जाते हैं। उसके आगेसे मन्दाकिनीकी घाटीमें भोजपत्रके वृक्ष देख पड़ते हैं। जहांसे बर्फिस्तान आरम्भ होता है उसी जगह भोजपत्रके वृक्ष होते हैं; कम ऊँचे पहाड़ों पर इसके वृक्ष कदापि नहीं होते। केदारनाथ पहुँचनेसे एक मील पहले केदारनाथका मन्दिर देख पड़ता है और उससे आगे नीचा ऊँचा मैदान मिलता है, जिस पर जगह जगह पानी बहता है। रामबाड़ासे चलने पर जितने आगे जाते हैं उतने पर्वतके शिखरों पर अधिक बर्फ देख पड़ता है। बर्फके पास लता वृक्ष कुछ नहीं हैं। रामबाड़ासे केदारनाथ तक मन्दाकिनीके उस पारके पर्वतसे बहुतेरे झरनोंका पानी नदीमें गिरता है।

सोनप्रयागसे केदारनाथ तक कोई बस्ती नहीं है, जाड़ेके समयमें गौरीकुण्ड पर एक पुजारी रहता है। यात्राके दिनोंमें चट्टियोंपर मोदी आजाते हैं। गुप्तकाशीसे केदारनाथकी तरफ क्रम क्रमसे सर्दी अधिक होती है। गौरीकुण्डसे आगे पानीमें दाल नहीं गलती और जलसे प्यास नहीं बुझती। जाड़ेके दिनोंमें सोनप्रयागसे ऊपरके सब लोग उखीमठ, शोणितपुर आदि बस्तियोंमें चले आते हैं।

कुबेरभण्डार—रामबाड़ा और केदारनाथके मध्यमें मन्दाकिनी नदीके बायें पर्वतके ऊपर, जिसको कुबेरपर्वत कहते हैं, कुबेरभण्डार नामक एक गुफा है, जिसमें पत्थरके कई तख्तोंपर पुराने समयके अक्षर लिखे हुए हैं, जो पढ़े नहीं जाते। उससे उत्तर थोड़ी दूर पर पत्थरका हाथी है! लोग उस स्थानको इन्द्रपर्वत और हाथीको अर्जुनका लाया हुआ ऐरावत हाथी कहते हैं। दोनों स्थानोंकी निशानी मन्दाकिनीके दहिनेसे देख पड़ती है। वहाँ आषाढ़ श्रावणमें बर्फ गल जाने पर कमलका फूल और जटामांसी होतीहै। उस समय पण्डे लोग और कोई कोई यात्री वहाँ जाते हैं। निर्मल आकाश रहने पर वहाँसे गुप्तकाशी ऊखीमठ और शोणितपुर देख पड़ता है।

केदारनाथ।

पांच नदियोंका सङ्गम—केदारनाथ पहुँचनेसे $\frac{1}{8}$ मील पहले सङ्गम मिलता है, जिसमें सम्पूर्ण यात्री स्नान करते हैं। वहां सरस्वती, मन्दाकिनी, दूधगङ्गा, स्वर्गद्वारी और महोदधि इन पांच धाराओंका सङ्गम है। स्नानके स्थानके पास दूधगङ्गा, उससे उत्तर सरस्वती और आधा मील दक्षिण महोदधि और स्वर्गद्वारी मन्दाकिनीमें मिलगई हैं। वहां मन्दाकिनी पर छोटा पुल है। मन्दाकिनी और सरस्वतीके सङ्गमके पास संगमेश्वर शिव लिंग है। मन्दाकिनी नदी केदारनाथके पीछे वाले कैलास नामक पहाड़से निकल कर ५० मील दक्षिण बहनेके उपरान्त रुद्रप्रयागमें अलकनन्दा नदीमें मिलगई है। केदारनाथके यात्री रुद्रप्रयागसे १८ मील भीरी चट्टी तक मन्दाकिनीके बायें किनारे और वहाँसे केदारनाथ तक ३२ मील दहिने किनारे आते हैं। मन्दाकिनीके किनारेपर बहुतेरी छोटी छोटी गुफा और बड़े बड़े ढोंके और घने, हरित और मनोहर जङ्गल हैं। अगस्त्यचट्टी, भीरी चट्टी, कुण्ड चट्टी गौरीकुण्ड, रामबाड़ा, केदारनाथ और इनके सिवाय और दो चार जगह मन्दाकिनीका पानी मिलता है। दूसरी जगहोंमें पानीके पास जानेका रास्ता नहीं है।

मैं हरिद्वारसे चलने पर १७ वें दिन हरिद्वारसे १४६$\frac{3}{8}$ मील केदार पुरीमें पहुँचा गढ़वाल जिलेमें समुद्रके जलसे ११००० फीटसे अधिक उँचाई पर बर्फदार महापन्थ नामक चोटीके नीचे मन्दाकिनी और सरस्वती दोनों नदियोंके मध्यमें अर्धाकार भूमिपर केदार पुरी है। दक्षिणसे उत्तर तक करीब २०० गज लम्बी सड़कके दोनों ओर लगभग ६० बड़े बड़े पक्के मकान बने हैं। मकानोंके ऊपर लकड़ीके तख्ते बिछाकर खरके छप्पर दिये गये हैं। इनमें १८ धर्मशालायें हैं। बहुतेरे मकानोंके भीतर सरदीसे बचनेके लिये तख्ते बिछाये गये हैं। किसी किसी मकानके पास भूमि पर वैशाख जेष्ठ तक बर्फ जमा रहता है। वहाँ एक इन्दौरके महाराजका और दूसरा झुंझुनुवाले सूर्य्यमलका सदावर्त और पांच छः पूरी और पेड़ेकी दूकानें हैं। इस वर्ष वहाँ पूरी आठ आने सेर, आटा छः आने सेर, चावल सात आने सेर पड़ा एक रुपये सेर है लकड़ी बड़ी महँगी बिकती है।

केदारपुरीके उत्तर छोरपर केदारनाथका सुन्दर मन्दिर है। मन्दिरके शिरपर छोटी बारहदरीकी तरह २० द्वारकी चकूटी है। चकूटीके ऊपर सोनहुला कलश और उसके भीतर मध्यमें मन्दिरके शिखरका कलश है। मन्दिरके भीतर दीवारोंके पास ४ पाये हैं और मध्यमें तीन चार हाथ लम्बा और डेढ़ हाथ चौड़ा केदारनाथका अनगढ़ स्वरूप है। उसके ऊपर एक जगह भैंसेके ढीलके समान ऊँचा है। ऊपरसे बड़ी जलधरी और चाँदीका बड़ा

छत्र लटका है। यात्रीगण केदारनाथपर आगेकी तरफ जल, चढ़ाकर उनको स्पर्श करके चन्दन, मेवा, अक्षत, पेड़ा, बेलपत्र, रुपये पैसेसे इनकी पूजा करते हैं। पण्डे लोग श्रावणमें कमलके फूल चढ़ानेका संकल्प यात्रियोंसे कराते हैं। श्रावणमें कुबेर पर्वत पर कमलका फूल होताहै। केदारनाथके स्वरूपके पीछेके भागपर घी मलकर अंकमालिका की जाती हैं। यात्रीलोग कड़ा, अँगूठी और कंगन जो खरीद करके अपने साथ ले जाते हैं, उनको केदारनाथका स्पर्श कराकर अपने घर ले आते हैं।

मन्दिरके आगे पत्थरका ऊँचा जगमोहन बना हुआ है उसकी छत ढालू और पाखवाली है। उसके चारों ओर एक एक दरवाजे और मध्यमें ४ पाये हैं। जगमोहनकी दीवारमें पश्चिमोत्तर युधिष्ठिर, पूर्वोत्तर नकुल और सहदेव, पूर्व-दक्षिण भीम और दक्षिण-पश्चिम द्रौपदी और अर्जुनकी बड़ी बड़ी मूर्त्तियाँ हैं जगमोहनके मध्यमें पीतलका छोटा नन्दी और दक्षिणके द्वारपर बड़े बड़े घण्टे और बाहर पत्थरका पुराना बड़ा नन्दी, और दोनों ओर २ द्वारपालक हैं। जगमोहनके आस पास दश पन्द्रह देव मूर्त्तियाँ हैं।

मन्दिर और जगमोहनके बीचमें एक छोटा देवगढ़ है, जिसमें पूर्व ओर पार्वती आर गणेश और पश्चिम लक्ष्मीकी मूर्त्ति है। मन्दिरमें अन्धकार रहता है, इसलिये दिनमें भी दीप जलाये जाते हैं। केदारनाथकी शृङ्गार मूर्त्ति पांच मुखवाली है। वह समय समय पर वस्त्र भूषणोंसे भूषित कर केदारनाथके ऊपर रक्खी जाती है।

मन्दिरके पीछे दो तीन हाथ लम्बा अमृतकुण्ड है, जिसमें दो शिवलिंग स्थित हैं और पूर्वोत्तर बहुत छोटा एक हंसकुण्ड और दूसरा रेतस कुण्ड है। रेतसकुंडमें तीन आचमन दहिने हाथसे, तीन बायें हाथसे और तीन अंजुलीसे और जंघा पृथ्वीपर रखकर किया जाता है। उस कुण्डके समीप ईशानेश्वर महादेव हैं। उससे पश्चिम एक बहुत छोटा सुफलक कुंड है। केदारनाथके मन्दिरके आगे थोड़ी दूर पर सोनहरे कलशवाले एक छोटे मन्दिरमें दो अढ़ाई हाथ लम्बा उदक कुंड है, जिसमें रेतसकुंडके समान आचमन किया जाता है। उस मन्दिरके पीछे घड़ा डुबानेके योग्य मीठे पानीका एक छोटा कुण्ड है, जिसका पानी सब लोग पीते हैं।

केदारपुरी जाड़ेके दिनोंमें वर्फसे ढकी रहती है। मेष (वैशाख) की संक्रांतिसे पन्द्रह दिन पीछे केदारनाथके मन्दिरका पट खुलता है और वृश्चिक (अगहन) की संक्रांतिके लगभग बन्द होजाता है। वहाँके रावल अर्थात् पुजारी उखीमठमें और पंडेलोग शोणितपुर अपने घरोंको चले जाते हैं। इस वर्षमें मेषकी संक्रान्तिसे १२ दिन पीछे वैशाख सुदी १२ को मन्दिर खुला है। मन्दिर बन्द होनेपर केदारनाथकी पूजा ऊखीमठमें होती है। मन्दिरका खर्च जागीर और पूजाकी आमदनीसे चलता है। केदारनाथके रावल दक्षिणी जङ्गम हैं। इनके पुत्र मरवाल जाति कहे जाते हैं। केदारनाथकी आमदनी लेनेका इनको स्वतन्त्र अधिकार है। यात्राके दिनोंमें भी रावल उखीमठहीमें रहते हैं। उनके कर्मचारी केदारनाथके कामको करते हैं। रावल धनी हैं। रावलके बाद उनका चेला रायल होता है। केदारलिंगके मरनेपर गणेशलिंग रावल हुआ है।

वहाँ नदियोंके ऊँचे नीचे मैदानके चारों ओर बर्फ मय पहाड़ है। केदारनाथ पहाड़की सबसे ऊँची चोटी समुद्रसे २२८५० फीट ऊँची है। वैशाख जेष्ठमें भी भूमिपर जगह

जगह बर्फ रहती है । जाड़ेके कारण रातमें मकानसे बाहर आदमी नहीं रह सकते हैं; बहु-तेरे यात्री दर्शन करके उसी दिन रामबाड़ाचट्टीको लौट आते हैं । कोई २ एक रात्रि वहाँ रह जाते हैं। वहाँ भैरवझांप करके प्रसिद्ध पर्वतके नीचे एक स्थान है, जहां पहले ऊपरसे कूदकर कोई २ यात्री आत्मघात करते थे । सन् १८२९ ई० से अङ्गरेजी सरकारने इस चालको रोक दिया है । पूर्ववाले बर्फमय पर्वतके उस पारसे बासुकी गङ्गा निकल कर सोनप्रयागमें मन्दाकिनीसे जा मिली है ।

हिमालय पर गढ़वाल जिलेमें ५ केदार हैं–(१) केदारनाथ, (२) मध्यमेश्वर (३) तुङ्गनाथ, (४) रुद्रनाथ और (५) कल्पेश्वर । इनका वृत्तान्त आगे लिखा जायगा ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–व्यासस्मृति–(चौथा अध्याय) केदारतीर्थ करनेसे मनुष्य सब पापोंसे छूट जाता है ।

महाभारत–(शल्यपर्व, ३८ वाँ अध्याय) जगत्में ७ सरस्वती हैं;–(१) पुष्करमें सुप्रभा, (२) नैमिषारण्यमें काञ्चनाक्षी, (३) गयामें विशाला (४) अयोध्यामें मनो-रमा,(५)कुरुक्षेत्रमें ओघवती, (६) गङ्गाद्वारमें सुरेणु और (७) हिमालयमें विमलोदका । (शान्तिपर्व्व—३५ वाँ अध्याय) महाप्रस्थान यात्रा अर्थात् केदाराचल पर गमन करके हिमालयपर चढ़के प्राण त्याग करनेसे मनुष्य सुरापानके पापसे विमुक्त हो जाता है । वनपर्व ८३ वाँ अध्याय) कपिस्थल (केदार) कुण्डमें स्नान करनेसे सब पाप भस्म हो जाता है । वहाँसे शरक तीर्थपर जाना चाहिये । वहाँ कृष्ण पक्षकी चतुर्दशीमें शिवके दर्शन करनेसे स्वर्ग मिलता है । जलरहित स्थानमें ऊँचे पहाड़के ऊपरसे गिरनेसे या जलती हुई अग्निमें प्रवेश करने अथवा महाप्रस्थान यात्रा अर्थात् केदाराचल पर गमन करके हिमालयमें चढ़ कर प्राण त्याग करनेसे मनुष्य सुरापानके पापसे छूट जाता है ।

लिङ्गपुराण–(९२ वाँ अध्याय) जो पुरुष संन्यास ग्रहण करके केदारमें निवास करता है; वह दूसरे जन्ममें पाशुपत योगको प्राप्त करता है ।

वामनपुराण–(३६ वाँ अध्याय) जहां साक्षात् वृद्धकेदार संज्ञक देव स्थित हैं, उस कपिस्थल तीर्थमें स्नान करके पीछे डींडी नामसे विख्यात रुद्रके पूजन करनेसे मनुष्य शिवलोकमें अनायास जाता है । जो मनुष्य वहाँ तर्पण करके डींडी देवको नमस्कार करता है वह केदारके फलको पाता है ।

पद्मपुराण–(पातालखण्ड–९१ वाँ अध्याय) कुम्भराशिके सूर्य्य और बृहस्पति होने-पर अर्थात् गुर्वादित्य योगके समय केदारका स्पर्श मोक्षदायक होताहै ।

गरुड़पुराण–(पूर्वार्द्ध, ८१ वाँ अध्याय) केदारतीर्थ सम्पूर्ण पापोंका नाश करनेवाला है ।

कूर्मपुराण—(उपरिभाग, ३६ वाँ अध्याय) महालयतीर्थमें स्नान करके महादेवजीके दर्शन करनेसे रुद्रलोक मिलता है । शंकरजीका दूसरा सिद्ध स्थान केदारतीर्थ है, जहां स्नान करके श्रीमहादेवजीका अर्चन करनेसे प्राणीको स्वामित्वपदवी प्राप्त होती है । और श्राद्ध, दान आदि कर्म करनेसे अक्षय फल मिलता है ।

सौरपुराण—(६९ वाँ अध्याय) केदार नामक स्थान भगवान् शङ्करजीका महातीर्थ है। जो मनुष्य वहाँ स्नान करके शिवजीका दर्शन करता है, वह गणोंका राजा होता है ।

ब्रह्मवैवर्त्तपुराण–(कृष्णजन्मखण्ड, १७ वाँ अध्याय) केदार नामक राजा सतयुगमें सप्तद्वीपका राज्य करता था। वह बहुत काल राज्य करनेके पश्चात् जैगीषव्यके उपदेशसे अपने पुत्रको राज्य दे वनमें जाकर श्रीहरिका तप करने लगा और बहुत काल तप करनेके उपरान्त गोलोकमें चला गया, उसीके नामके अनुसार वह तीर्थ केदार नामसे प्रसिद्ध होगया। राजा केदारकी पुत्री वृन्दाने, जो कमलाके अंशसे थी; अपना व्याह नहीं किया, वह गृह छोड़ वनमें जाकर तप करके लगी और सहस्र वर्ष तप करके श्रीकृष्ण भगवान्के सहित गोलोकमें चली गई। जिस स्थान पर वृन्दाने तप किया, वही स्थान वृन्दावनके नामसे प्रसिद्ध होगया।

शिवपुराण–(ज्ञान संहिता; ३८ वाँ अध्याय) शिवजीके १२ ज्योतिर्लिङ्ग बिराजमान हैं उनमेंसे केदारेश्वर लिङ्ग हिमालय पर्वत पर स्थित हैं। (४७ वाँ अध्याय) भरतखण्डके बदरिकाश्रम मण्डलमें भगवान् नरनारायण रूपसे सर्वदा निवास करते हैं और लोकके कल्याणके निमित्त नित्य तप करते हैं। एक समय उन्होंने हिमालयके केदार नामक शृंगपर शिवलिङ्ग स्थापन करके बड़ा तप किया। शिवजी प्रगट होकर बोले कि हे आर्यो ! तुमलोगोंकी जो इच्छा हो वह वर माँगो। तब नर और नारायण बोले कि हे देव ! यदि तुम प्रसन्न हो तो जगत्के मंगलके लिये इस स्थानपर विराजो। ऐसा सुन सदाशिवने ज्योतीरूप होकर केदारमें निवास किया। उसी दिनसे वह केदारेश्वर नामसे प्रसिद्ध हुए। वहाँ सम्पूर्ण ऋषीश्वर और देवता उनकी पूजा करते हैं। जो मनुष्य केदारेश्वरका दर्शन करता है उसे स्वप्नमें भी दुःख नहीं होता। जो केदारेश्वरका खडुआ अर्थात् कंकण धारण करता है वह शिवजीका प्रिय होता है। उसके दर्शनसे मनुष्य सब पापोंसे छूट जाते हैं। केदारेश्वरका दर्शन करने वाला मनुष्य जीवनमुक्त हो जाता है। जिसने केदारेश्वरका दर्शन नहीं किया उसका जन्म निरर्थक है।

बड़ा शिवपुराण–(उर्दू अनुवाद, ८ वाँ खण्ड, २७ वाँ अध्याय) जब युधिष्ठिर आदिक पाण्डव अपने गोत्र वधके पाप छुटानेके लिये केदारेश्वरके दर्शन करनेके अर्थ केदारतीर्थमें गये, तब शिवजी भैंसेका रूपधर वहाँसे भाग चले। पाण्डवोंने अति प्रेमसे शिवजीसे विनय किया कि हे नाथ ! तुम कृपा करके हम लोगोंका पाप दूर करो और इस स्थानमें स्थित हो जाओ। तब महाराज शंकर अपने पिछले धड़से उसी स्थानपर स्थित हुए, जिनके दर्शनसे पाण्डुके पुत्रोंका सब दुःख निवृत्त हो गया और अगले धड़से नैपालमें जा विराजे।

स्कन्दपुराण–(केदारखण्ड, प्रथम भाग, ४० वाँ अध्याय) युधिष्ठिर आदि पाण्डवगण गोत्र हत्या और द्रोणादिक गुरुजनोंके मारनेके अपराधसे पीड़ित और सन्तप्त हृदय होकर व्यासजीके शरणमें गये और बोले कि हे भगवन् ! हम लोग गोत्र हत्या और गुरु वधके पापसे किस भांति विमुक्त होंगे। व्यासदेव बोले कि हे पाण्डव ! शास्त्रमें गोत्र हत्या करने वालोंका प्रायश्चित्त नहीं है। विना केदार भवनमें जानेसे यह पाप नहीं छूटेगा; तुम लोग वहाँ ही जाओ; वहाँ अनेक धाराओंसे गङ्गा नदी बहती है और उमा और गणोंके सहित साक्षात् महादेवजी निवास करते हैं, वहाँ मृत्यु होनेसे मनुष्य शिवरूप हो जाता है; वही महापथ ब्रह्महत्यादिक पापोंका निवारण करता है। पाण्डव लोग व्यासदेवके आदेशानुसार केदारमें जाकर उस तीर्थके सेवनसे शुद्ध हो गये।

गंगाद्वारसे लेकर श्वेत पर्यन्त तमसा नदीके तटसे पूर्व बौद्धाचल तक५० योजन लम्बा और ३० योजन चौड़ा स्वर्गका मार्ग केदारमण्डल है, जिसमें मृत्यु पानेसे पशु भी शिवलोकमें निवास करता है। केदार मण्डलमें अनेक तीर्थ, सैकड़ों शिवलिङ्ग, सुन्दरवन, नाना प्रकारकी नदियाँ; बहुतेरे नदियोंके संगम, बहुतेरे पुण्यक्षेत्र तथा पुण्यपीठ विद्यमान हैं।

महाक्षेत्रमें ये धारा प्रधान हैः–(१) मधुवर्णधारा, जिसको लोग मधुगङ्गा कहते हैं, (२) क्षीरके समान बहने वाली क्षीरधारा, (३) श्वेतवर्णकी स्वर्गद्वारधारा, (४) मन्दाकिनी नदी और (५) केदारालयमें केदारधारा, जो शेष धारासे निकली है।

(४१ वाँ अध्याय) मनुष्य केदारपुरीमें मृत्यु पानेसे निःसन्देह शिवरूप हो जाता है। केदारपुरीमें जानेकी इच्छा करनेवाले मनुष्य भी लोकमें धन्य हैं; उनके पितर ३०० कुलोंके सहित शिवलोकमें चले जाते हैं। केदारक्षेत्र सब क्षेत्रोंमें उत्तम है।

(४२ वाँ अध्याय) शिवजीकी दक्षिण दिशामें रेतसकुण्ड है, जिसका जल पीनेसे मनुष्य शिवरूप हो जाता है। महातीर्थके नीचेके भागमें मन्दाकिनीके तटपर शिवकुण्ड है, जिसमें स्नान करनेसे शिवलोक मिलता है। कपिल नामक शिवके दर्शन करनेसे मोक्ष मिलता है। मनुष्य वहाँ ७ रात्रि उपवास करके प्राण त्यागनेसे शिव सायुज्य पाता है। जिस स्थानसे धारा निकली है उससे ऊपर पापियोंको मुक्ति देनेवाला भृगुतुङ्ग तीर्थ है। महापातकी मनुष्य भी भृगुतुङ्गसे श्रीशिलापर गिरकर प्राण छोड़नेसे परब्रह्मको पाता है। उस तीर्थके ऊपरी भागमें २ योजनपर हिरण्य गर्भ तीर्थमें बूलेके समान रक्तवर्ण गुप्त जल निकलता है, जिसके स्पर्शमात्रसे लोहादिक धातु स्वर्ण हो जाते हैं। उसके उत्तर स्फटिक लिङ्ग है, जिसके पूर्व ७ पदपर वह्नितीर्थमें बर्फके बीच अग्नि मय जल विद्यमान है। उसमें घृतकी आहुति करनी चाहिये। उससे उत्तर ओर आश्चर्य दृश्य है। वहाँ पर्वतके अग्र शिखरसे भूतलमें जल गिरता है, जिसके कण शरीर पर पड़नेसे मनुष्य मुक्त हो जाता है। उसी स्थान पर भीमसेनने मुक्ताओंसे श्रीमहादेवजीकी पूजा की थी। वहाँ पुण्यात्मा पुरुष जाते हैं। उससे आगे महापथ है, जहां जानेसे मनुष्य आवागमनसे रहित होजाता है। वहाँही सात प्राकारोंसे वेष्टित सदाशिवजीका धाम है, महाभैरव हाथमें दण्ड लेकर गणोंका पालन करते हैं और महादेवजी सर्वदा निवास करते हैं। जो मनुष्य सर्वदा कहता है कि मैं महापथमें जाकर प्राण त्याग करूंगा वह महाराज शंकरका बड़ा प्रिय है।

मधुगंगा और मन्दाकिनीके संगमके पास क्रौंच तीर्थ और क्षीरगङ्गा और मन्दाकिनीके सङ्गम पर ब्राह्मय तीर्थ है। उसके दक्षिण बुदबुदाकार जल देख पड़ता है। शिवजीके वाम भागमें इन्द्र पर्वत है। उसी स्थानपर इन्द्रने अपनी स्थितिके लिये महादेवजीका तप किया था। वहाँ एक शिवलिङ्ग है। केदारनाथके स्थानसे १० दण्डपर हन्सकुण्ड है, जहां ब्रह्माने हन्स रूपसे जाकर रेतः पान किया था। तभीसे वह हन्सकुण्डके नामसे प्रसिद्ध हुआ, उसमें पितरोंके श्राद्ध करनेसे वे परम पदको जाते हैं। जो मनुष्य केदारनाथका दर्शन करके रेतसकुण्डका जल पीता है, उसके हृदयमें शिवजी स्थित हो जाते हैं, वह पापी भी हो, किसी स्थानमें किसी समयमें मरे; किन्तु शिवलोकमें निवास करेगा। केदारपुरीसे भीमशिला तक महादेवजीकी शय्या है।

चौथा अध्याय।

(गढ़वाल जिलेमें) उखीमठ, मध्यमेश्वर, तुङ्गनाथ, मण्डलगांव, रुद्रनाथ, गोपेश्वर, चमोली, आदि-बदरी, कल्पेश्वर, वृद्धबदरी, जोशीमठ, भावि-ष्यबदरी, विष्णुप्रयाग, पांडुकेश्वर, योगबदरी और बदरीनाथ।

ऊखीमठ।

मैं एक रात्रि केदारपुरीमें निवास कर दूसरे दिन वहाँसे लौटा। केदारपुरीसे सोन-प्रयाग १२ मील, पाटीगाड़ नदी (त्रियुगीनारायणका मार्ग छोड़कर) १३¼ मील, और नालाचट्टी २५½ मील है। यात्री-गण नालाचट्टीसे जिस मार्ग होकर केदारपुरी जाते हैं उसी राहसे नालाचट्टी लौट आते हैं। नालाचट्टीसे गुप्तकाशीकी सड़क दाहिने छूटजाती है।

नालाचट्टीसे ¾ मील छोटा झरना, १¼ मील एक बड़ा झरना और १½ मील पर १३० फीट लम्बा और ३½ फीट चौड़ा मन्दाकिनी नदी पर लोहेका पुल है। छोटे झरनेसे पुल तक कड़ी उतराई है। वहाँसे मन्दाकिनीके बायें किनारे चलना पड़ता है। पुलसे १¼ मील और नालाचट्टीसे १¾ मील पर ऊखीमठ है। पुलसे ऊखीमठ तक कड़ी चढ़ाई है।

ऊखीमठ—पहले सफाखाना और डाकखाना मिलते हैं, जिनके पास तीन चार हाथ ऊँचे ११ शिव मन्दिर हैं। सफाखानासे बहुत सीढ़ियाँ लांघकर बड़े मन्दिरके पास पहुँचना होता है।

गुप्तकाशीके विश्वनाथके मन्दिरके समान ऊखीमठमें एक शिखरदार मन्दिर है। उसका द्वार दक्षिण मुख वाले जगमोहनमें पश्चिम मुखसे है। मन्दिरमें ओंकारनाथ शिव लिङ्ग हैं। उनके पूर्व राजा मान्धाताकी बड़ी मूर्त्ति और आस पास कई देव मूर्त्तियाँ हैं। जगमोहन पत्थरके सुन्दर टुकड़ोंसे छाया हुआ है, जिसमें उत्तरकी ओर तीन सिंहासनोंमें बदरीनाथ, केदारनाथ; तुङ्गनाथ, पार्वती आदिकी सुन्दर शृङ्गार युक्त धातु मूर्त्तियोंका दर्शन होता है। मन्दिर और जगमोहनमें अन्धकार रहता है। दीपक द्वारा देवताओंका दर्शन होता है। जगमोहनके आगे चार खम्भोंके गुम्बजदार मण्डपमें नन्दीकी पुरानी मूर्त्ति है।

मन्दिरसे पूर्व उत्तर मुखकी कोठरीमें, जिसका द्वार पश्चिम मुखकी कोठरीमें है; ऊषा और आनिरुद्धकी मूर्त्तियां और धातुके पत्तर पर चित्ररेखाकी मूर्त्ति है। आगे वाली कोठरीमें पांच सात शिव लिङ्ग और कई देव मूर्त्तियां और कोठरीसे बाहर बहुत प्राचीन मूर्त्तियां हैं।

ओंकारनाथके मन्दिरसे पश्चिम केदारनाथके रावलका दो मञ्जिला मकान है। उसके नीचेके एक कमरेमें केदारनाथकी गद्दी है। गद्दीके पास विचित्र सोनहले सिंहासनपर पंच मुखी महादेव हैं जिनका एक मुख मण्डल सोनाका और एक चाँदीका और छत्र सुनहला

है। शिवके पासमें वस्त्र और भूषणोंसे सजी हुई पार्वतीजीकी सुन्दर मूर्त्ति विराजमान है। जाड़ेके दिनोंमें केदारनाथके पट बन्द होजानेपर उनकी पूजा उसी जगह होती है। दूसरे कमरेमें कुन्ती और द्रौपदीकी मूर्त्तियाँ और धातुके पत्तरोंपर युधिष्ठिर आदि पाण्डवोंकी मूर्त्तियाँ हैं और ऊपर एक कमरेमें गरुड़की मूर्त्ति है।

ओंकारनाथके मन्दिरके पश्चिम रावलका मकान है और तीन ओर दो मञ्जिले दोहरे मकान और धर्मशालायें बनी हैं। बीचमें बड़ा आँगन है। मकानोंमें सोना, चाँदी, बर्तन, कपड़ा और जिन्सकी दुकानें रहती हैं।

ऊखीमठमें सफाखाना; डाकखाना, पुलिसकी चौकी, छोटी बाजार, कड़े और कंगन बनाने वाले लोहार और कई झरने हैं। बस्तीके समीप मैदान नहीं है बस्तीसे थोड़ा दक्षिण दस पन्द्रह घरकी दूसरी बस्ती है। ऊखीमठका रावल केदारनाथ, गुप्तकाशी, ऊखीमठ, तुङ्ग-नाथ आदि मन्दिरोंका अधिकारी है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–स्कन्दपुराण–(केदारखण्ड, उत्तर भाग, २४ वाँ अध्याय) गुप्त काशीके पूर्व मन्दाकिनी नदीके दूसरे पार (अर्थात् बायें) राजा नलने राज सुख त्यागकर तप और राज राजेश्वरी देवीका पूजन किया था। वहाँके नलकुण्डमें स्नान करनेसे जन्म भरका संचित पाप नष्ट होजाता है। सूर्यवंशी राजा युवनाश्वके पुत्र राजा मान्धाताने उस स्थानपर तप करके परम सिद्धि प्राप्त की थी।

मध्यमेश्वर।

पंचकेदारोंमेंसे एक मध्यमेश्वर हैं। ऊखीमठसे लगभग १५ मील मध्यमेश्वरका मन्दिर है। राहमें अहरियाकोटके पास कालीनदी; उससे आगे कालीमठ, कालशिला और राशी-देवीका मन्दिर मिलता है। मध्यमेश्वरका पक्का मन्दिर बना हुआ है। मन्दिरके निकट धर्मशाला है। मार्गमें खानेका सामान नहीं मिलता। साथमें जिन्स लेजाना पड़ता है और फिर ऊखमिठ आकरके बदरीनाथकी ओर जाना होता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्दपुराण—(केदारखण्ड; प्रथमभाग, ४७ वाँ अध्याय) शिवजीके ५ क्षेत्र हैं;—(१) केदारनाथ, (२) मध्यमेश्वर, (३) तुङ्गनाथ, (४) रुद्रा-लय और (५ वाँ) कल्पेश्वर। इनमेंसे केदारेश्वरका वर्णन हो चुका। केदारपुरीसे ३ योजन दक्षिण मध्यमेश्वर क्षेत्र है, जिसके दर्शन मात्रसे मनुष्य स्वर्गमें निवास करता है।

पूर्व समयमें गौड़देशका एक ब्राह्मण मध्यमेश्वरके दर्शनकी इच्छा करके गङ्गाद्वारमें गया, वह वहाँसे गङ्गाजल लेकर मन्दाकिनीके तटमें अगस्त्य आदि मुनियोंको नमस्कार और अनेक तीर्थोंका दर्शन करता हुआ शिव क्षेत्रमें पहुँचा; उसने वहाँसे मध्यमेश्वर क्षेत्रमें जाकर मध्यमेश्वरजीके समीप ३ रात्रि जागरण और सरस्वतीमें स्नान और पितरोंका तर्पण किया। मार्गमें उस ब्राह्मणके दर्शनसे एक राक्षस शिवरूप होकर कैलासमें चला गया। ब्राह्मणने अपने घर जाकर सब भोगोंको भोगनेके पश्चात् अन्तकालमें ब्रह्म सायुज्य पाया।

(४८ वाँ अध्याय) मनुष्य मध्यमेश्वर क्षेत्रमें सरस्वतीके दर्शन मात्रसे पापोंसे छूट जाता है और उसमें स्नान करनेसे आवागमनसे रहित हो जाता है। उस स्थानमें पितर लोगोंको जल और पिण्डदान देनेसे सब पितर मुक्ति पाते हैं।

पोथीबाँसा चट्टी—ऊखीमठसे $\frac{१}{२}$ मील एक झरना; १$\frac{१}{४}$ मील एक वस्ती, जहाँसे मन्दाकिनीके दहिने पर्वतके ऊपर शोणितपुर देख पड़ता है १$\frac{१}{२}$ मीलपर मन्दाकिनी और गङ्गाका संगम, जहाँसे मन्दाकिनी छोड़कर आकाश गङ्गाके दहिने किनारे चलना होता है २$\frac{१}{२}$ मीलपर बहुत छोटा एक मन्दिर; २$\frac{३}{४}$ मीलपर ४ छप्परकी गणेशचट्टी; ३ मीलपर झरना, ३$\frac{३}{४}$ मीलपर बड़ा झरना, ४ मीलपर एक झरना और कठारी प्यालावाले बढ़ईकी दुकान; ४$\frac{१}{२}$ मीलपर आठ दस छप्परकी दुर्गा चट्टी, जहां एक बड़ा झरना और आकाश गङ्गा नदीपर काठका पुल है, जिससे नदी पार होते हैं; ५$\frac{१}{४}$ मील तीन छप्परकी छोटी दुर्गाचट्टी, एक झरना और शिखरपर दो बस्ती; उससे आगे कठारी प्यालेकी दूकान, ६$\frac{१}{४}$ मील बस्ती और खेतका मैदान और ऊखीमठसे ७$\frac{१}{४}$ मीलपर पोथी वाँसा चट्टी है।

ऊखीमठसे गणेशचट्टी तक सुगम चढ़ाई; गणेशचट्टीसे दुर्गाचट्टी तक सुगम उतराई और दुर्गाचट्टीसे छोटी दुर्गाचट्टी तक कडी चढ़ाई है। छोटी दुर्गाचट्टीसे जङ्गलकी बिचित्र हरियाली, राहके दोनों ओर बड़े बड़े घने वृक्ष और सेवती और जङ्गली सेमल आदि कई तरहके वृक्षोंका जङ्गल मिलता है। इस तरफ भालूका कुछ भय रहता है। छोटी दुर्गाचट्टीसे पोथी बाँसा तक जगह जगह कड़ी चढ़ाई; ठोकरवाकी राह और छोटी २ गुफा हैं।

पोथीबाँसा बड़ी चट्टी है। वहाँ मोदियोंकी बड़ी बड़ी पक्की दूकानें और एक झरना है। वहाँसे तुङ्गनाथ पर्वतकी सर्दी आरम्भ होती है और आकाशगङ्गा नदी बायें छूट जाती है।

पोथीबाँसासे $\frac{१}{४}$ मील आगे छोटा झरना, १$\frac{१}{२}$ मील एक झरना और २ मीलपर एक पहाड़की चोटीपर कुन्दन चट्टी है। वहाँ ऊँचा नीचा मैदान और एक झरना है।

वहाँ वर्षा अधिक होती है, इसलिये वहाँके बहुतेरे वृक्षोंपर सेवार और बारना नामक बँवर लग गये हैं। बरसातमें वहाँके वृक्ष बादलोंसे ढँप जाते हैं। वहाँ पर्वतके नीचे बादल देख पड़ते हैं। कुन्दन चट्टीसे आगे पोथीबाँसासे २$\frac{१}{२}$ मीलपर वनके मैदानमें दो झरने और ३ मीलपर चौपत्ता चट्टी है।

चौपत्ताचट्टी—चौपत्ताचट्टीपर मैदानमें एक पक्की धर्मशाला, मोदियोंके बारह चौदह पक्के मकान और दो एक झरने हैं। पोथीबाँसासे चौपत्ताचट्टी तक जगह जगह कड़ी चढ़ाई है। उससे आगे दहिने चमोलीको और बायें तुङ्गनाथको सड़क गई है।

तुंगनाथ।

यह पंच केदारमेंसे तीसरा है। तुङ्गनाथकी चढ़ाई कड़ी है। अधिकांश यात्री तुङ्गनाथको छोडकर सीधी राहसे चमोली जाते हैं। झम्पानवाले सवारसे तुङ्गनाथकी चढ़ाईका इनाम लेते हैं।

चौपत्ताचट्टीसे आगे एक मीलपर बायें ओर नीचे मैदान और भेड़वालोंके दो छप्पर हैं। उससे आगे सर्दीसे पेड़ नहीं जमे हैं। चट्टीसे १$\frac{३}{४}$ मील आगेसे पर्वतके शिखरके पास तुङ्गनाथका मन्दिर और शिखरके शिरपर चन्द्रशेखरका मन्दिर देख पड़ता है। समीपमें ऊपर और पहाड़के नीचे धुआँके समान बादल देख पड़ते हैं। चट्टीसे २$\frac{१}{४}$ मीलपर ढाई हाथ ऊँचे मन्दिरमें गणेशकी मूर्त्ति और २$\frac{१}{२}$ मीलपर तुङ्गनाथका मन्दिर है। सड़क चौड़ी है, पर चढ़ाई बहुत कड़ी है। रास्तेमें पानी नहीं मिलता।

तुङ्गनाथका प्राचीन मन्दिर पत्थरके मोटे मोटे ढोकोंसे पश्चिम मुखका बना हुआ है। मन्दिरके शिखरपर १६ द्वारकी बारहदरीके भीतर मन्दिरका गुम्बज है। तुङ्गनाथ पतला अनगढ़ शिवलिङ्ग है। लिंगके पूर्व डेढ़ दो हाथ ऊँची शङ्कराचार्य्यकी मूर्त्ति स्थित है। मन्दिरके आगे पत्थरके बड़े बड़े टोकोंसे बना हुआ और पत्थरके मोटे तख्तोंसे छाया हुआ जगमोहन, जिसका द्वार आगेके पाखमें है, बना हुआ है। जगमोहनके आगे पुराना नन्दी और गणेशजी हैं। मन्दिरसे पूर्व दो कोठरी, एक छोटा शिवमन्दिर; दक्षिण एक कोठरी, एक छोटा मन्दिर, ६ अत्यन्त छोटे मन्दिर और १ धर्मशाला और पश्चिम एक कोठरी, दो बड़े घर और एक बहुत छोटा मन्दिर है। मन्दिरके पासही दाक्षिण-पश्चिम एक छोटे मन्दिरमें पार्वतीकी मूर्त्ति और ईशान कोणपर नीचे एक छोटा झरना है। लोग कहते हैं कि तुङ्गनाथका मन्दिर शङ्कराचार्य्यका बनाया है।

वहाँ ३ ब्राह्मण पुजारी हैं। वह स्थान ऊखीमठके रावलके अधीन है। जाड़के दिनोंमें वहाँके पुजारी मन्दिरका पट बन्द करके वहाँसे १२ मीलपर मकूमठको चले जाते हैं। पहाड़के नीचे, ऊपर और मन्दिरके आस पास धुँआके समान बादल देख पड़ते हैं। वहाँ जाड़ा अधिक पड़ता है। मन्दिरके पास एक गुफा है, जिसमें वर्षाके पानीसे बहुत आदमी बच सकते हैं। वहाँ कोई मोदी नहीं रहता। उस स्थानसे उत्तरकी ओर ऊँचे पहाड़ोंपर बर्फ देख पड़ता है। उस पर्वतकी चोटीपर तुङ्गनाथसे एक मील दूर चन्द्रशेखर शिवका मन्दिर है।

पश्चिमसे तुङ्गनाथ जाकर दक्षिण ओर उस पहाड़से उतरना होता है। उतराईकी राह खड़ी और साँकरी है। झम्पानके सवार झम्पानसे उतर कर चलते हैं। २½ मील उतरनेके पीछे चार पांच छप्परवाली तुङ्गनाथ चट्टी मिलती है। वहाँही नीचेकी चौपत्ताचट्टीवाली सड़क मिल जाती है। उस स्थानसे १½ मील पीछेकी ओर चौपत्ताचट्टी है।

संक्षिप्तप्राचीन कथा—स्कन्दपुराण—(केदारखण्ड, प्रथमभाग, ४९ वाँ अध्याय) मान्धाताक्षेत्र (अर्थात् ऊखीमठ) से दक्षिण ओर २ योजन लम्बा और ३ योजन चौड़ा तुङ्गनाथ क्षेत्र है, जिसके दर्शन मात्रसे मनुष्यका सब पाप छूट जाता है और उसको शिवलोक मिलता है। प्रथम भैरवको नमस्कार करके क्षेत्रमें प्रवेश करना उचित है। तुङ्गनाथके पूजन करनेवालोंको तीनों लोकमें कोई वस्तु दुर्लभ नहीं है। वहाँ ब्रह्मादिक देवता सर्वदा महेश्वरकी स्तुति करते हैं। मनुष्य जलकी जितनी कणिका शिवलिंगपर चढ़ाते हैं वह उतने हजार वर्ष तक शिवलोकमें निवास करते हैं। बिल्वपत्रसे तुङ्गनाथकी पूजा करनेवाले एक कल्प तक शिवलोकमें बसते हैं अगम्यागमन करनेवाला मनुष्य भी तुङ्गनाथ क्षेत्रमें जानेसे विमुक्त होजाता है।

(५० वाँ अध्याय) तुङ्गनाथ क्षेत्रके आकाशगंगाके तीरपर पितरोंका तर्पण करनेसे २१ कुल शिवलोकमें निवास करते हैं और वहाँ पिण्डदान करनेसे पितरगण कृतकृत्य होजाते हैं। वहाँ दान करनेसे असंख्य फल लाभ होता है। जो मनुष्य तुङ्गेश्वरके ऊँचे शिखरपर ३ उपवास करके अपने प्राणोंको त्यागता है वह अवश्य शिवरूप होजाता है। शिवजीके पासही पश्चिम स्फटिकका लिंग है, उसके दक्षिण गरुड़ तीर्थ है, उससे चौथाई कोस पश्चिम मानसर नामक सरोवर है, जिसके उत्तर भागमें मर्कटेश्वर शिव स्थित हैं। जिनके दर्शन

मात्रसे मनुष्य शिवलोकमें निवास करता है। उसके दक्षिण भागमें मृकण्डऋषिके आश्रममें महेश्वरी देवी विराजती हैं।

पाँगरचट्टी—तुङ्गनाथचट्टीसे ½ मीलपर भीमचट्टी और एक झरना; १½ मीलपर जङ्गलीचट्टी और २ झरने और ३¼ मीलपर पांगरचट्टी है। वह बड़ी चट्टी है। वहाँ एक पक्की धर्मशाला, मोदियोंके बहुत मकान, कठारी, प्याले बेचनेवालोंकी ३ दूकानें और २ झरने हैं। तुङ्गनाथचट्टीसे पांगरचट्टी तक मार्गके दोनों तरफ बड़े बड़े वृक्षोंका जङ्गल है।

पाँगरचट्टीसे आगे एक मीलपर कई झरने २ मीलपर जगह जगह छोटे छोटे ४ झरने और २¾ मीलपर कई झरने और बालासोती नदीका किनारा है। उसके थोड़े आगेसे दो रास्ते हैं। यात्रीको ऊपरकी राह छोड़ कर नीचेके रास्तेसे जाना चाहिये। पांगरचट्टीसे ३¼ मीलपर बालासोती नदीके किनारे मण्डलचट्टी है। तुङ्गनाथ चट्टीसे वहाँ तक उतराईका मार्ग है।

मण्डलचट्टी—मण्डलचट्टीपर मोदियोंके बहुत मकान, मैदान, झरना और कड़े अँगूठी बेचनेवाले लोहार हैं। दो पर्वतोंके नीचे बड़े मैदानमें बालासोती नदी बहती है। नदीके किनारे पर खेतका मैदान है। यात्री लोग काठका पुल पार हो नदीके बायें किनारे चलते हैं।

मण्डलगाँव।

मण्डलचट्टीसे ½ मील आगे एक दूसरी नदीपर पुल है। वह नदी अनसूया और अमृतकुण्डसे आकर मंडल ग्रामके पास बालासोती नदीमें मिल गई है। मण्डलचट्टीसे ¾ मील आगे दोनों नदियोंके सङ्गमके निकट मण्डलगांव, जिसको ब्रह्मकोटी भी कहते हैं, बसा हुआ है। वहाँके सङ्गमको लोग व्योमप्रयाग कहते हैं। ऐसा प्रसिद्ध है कि पूर्व कालमें राजा सगरने वहाँ अश्वमेध यज्ञ किया था। पहले वहाँ बहुत मन्दिर थे अब भी एक देवीका मन्दिर एक कुण्ड और पांच छः बड़े छोटे मन्दिर हैं। उस स्थानको मण्डल तीर्थ कहते हैं। उस स्थानसे ¼ मील आगे मण्डोली गाँवके पास एक पक्की सरकारी धर्मशाला है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—वाल्मीकि रामायण—(बालकाण्ड—७० वाँ सर्ग) सूर्य्यवंशमें राजा असित हुए, जिनको हैहय, तालजंघ और शशबिन्दु ये तीनों राजाओंने युद्धमें पराजित करके राज्यसे निकाल दिया। तब राजा असित अपनी दो पत्नियोंके सहित थोड़ीसी सेना सङ्गले हिमवान् पर्वत पर जाकर रहने लगे और कुछ समयके पश्चात् काल धर्मको प्राप्त हुए। उसकालमें उनकी दोनों स्त्रियां गर्भिणी थीं। एकने दूसरीका गर्भ नाश करनेके लिये उसको गरल अर्थात् विष दिया। उस समय उस पर्वतपर भार्गव च्यवन नामक मुनि तप करते थे। उन स्त्रियोंमेंसे एकने, जिसका नाम कालिन्दी था, जाकर मुनिको प्रणाम किया। मुनिके आशीर्वादसे गरके सहित कालिन्दीका पुत्र उत्पन्न हुआ, इसलिये उस पुत्रका सगर नाम पड़ा। (३८ वाँ सर्ग) अयोध्याके अधिपति राजा सगर सन्तति हीन थे। राजाकी केशिनी और सुमती नामक २ स्त्री थीं। महाराज सगर दोनों पत्नियोंके साथ हिमवान् पर्वतके भृगुप्रस्रवण प्रदेशमें जाकर तप करने लगे। १०० वर्ष तप करनेके पश्चात् भृगुमुनिने प्रसन्न हो सगरको वर दिया, जिससे अयोध्यामें आने पर केशिनीके एक पुत्र और सुमतीके ६० सहस्र पुत्र हुए।

शिवपुराण–(११ वाँ खण्ड २१ वाँ अध्याय) जब अयोध्याके राजा बाहु पर हैहय, तालजंघ और शक ये तीनों राजा राक्षसोंके सहाय सहित चढ़ धाये और राजाको परास्त कर आप राज्य करने लगे, तब राजा बाहु ऊर्जमुनिके शरणमें जाकर रहने लगे और वहीं मर गये। राजाकी बड़ी रानी गर्भवती थी। छोटी रानीने डाहसे उसको विष दे दिया, लेकिन रानी न मरी; उसके ऊर्जमुनिके आश्रम पर एक पुत्र जन्मा। मुनिने बालकको विष सहित जन्मा हुआ देख कर उसका नाम सगर रक्खा। राजा सगर शिवजीकी प्रसन्नता और ऊर्जमुनिकी सहायतासे शत्रुओंका विनाश कर उनपर प्रबल हुआ। फिर सगर ऊर्जमुनिको गुरु बना कर अश्वमेध यज्ञ करने लगे, जिसमें उनके ६० हजार पुत्र कपिलजीकी दृष्टिसे जल गये।

(यह कथा स्कन्दपुराण, केदारखण्ड, प्रथमभागके २७ वें और २८ वें अध्यायमें और विष्णुपुराण, चौथे अंश; के चौथे अध्यायमें भी है)।

रुद्रनाथ।

यह पंचकेदारोंमेंसे चौथा है। मण्डलगाँवके पासवाले पुलके पाससे एक पहाड़ी राह गई है। उस राहसे अनुसूयादेवीका मन्दिर दो मील पर और रुद्रनाथका मन्दिर १२ मील पर है। वहाँ बर्फ बहुत है, इससे बदरीनाथके विरले यात्री वहाँ जाते हैं। रुद्रगङ्गा रुद्रनाथके पाससे निकलकर उस स्थानसे दक्षिणकी ओर जाकर पीपलकोटी चट्टीसे २¼ मील आगे अलकनन्दामें मिलगई है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा–स्कन्दपुराण–(केदारखण्ड प्रथम भाग, ५१ वाँ अध्याय) सदाशिवजी रुद्रालय क्षेत्रका त्याग कभी नहीं करते हैं। क्षेत्रके दर्शन मात्रसे मनुष्यका जन्म सफल होजाता है। मनुष्य वहाँ शिवजीके दर्शन करनेसे संसारमें नाना प्रकारके सुख भोगकर अन्तकालमें शिवलोकमें निवास करता है।

पूर्व कालमें देवताओंने अन्धकासुरसे पराजित हो हिमालय पर रुद्रालयमें जाकर शिवसे अपना दुःख कह सुनाया और उनसे यह वर मांगा कि तुम सर्वदा इस स्थान पर निवास करो। महादेवजी बोले कि हे देवताओ! मैं अन्धकासुरको मारकर तुम लोगोंको सुखी करूंगा और अपने गणों और पार्वतीजीके सहित सर्वदा यहाँ निवास करूंगा। उसके पश्चात् देवता सब अपने अपने स्थानको चले गये।

(५२ वाँ अध्याय) महालय (अर्थात् रुद्रक्षेत्र) में पितरोंको तारने वाली वैतरणी नदी बहती है; वहाँ पितरोंके पिण्डदान देनेसे कोटि गयाके समान फल मिलता है। उसी क्षेत्रमें सम्पूर्ण आभरणोंसे विभूषित शिवजीका सुन्दर मुखमंडल है, जिसके दर्शन मात्रसे मनुष्य मुक्त होजाता है।

पूर्व कालमें युधिष्ठिर आदि पाण्डवगण गोत्र हत्याके पापसे छुटकारा पानेके अर्थ शिवजीको ढूँढ़ते हुए केदारपुरीमें आये। शिवजी उनको पाप युक्त देख कर पृथ्वीमें प्रवेश करके दूर देशमें चले गये; किन्तु वे लोग उनके पवित्र पृष्ठका स्पर्श करके सब पापोंसे विमुक्त होगये। वही पृष्ठ भाग अद्यापि केदारपुरीमें स्थित है और उनका मुखमण्डल महालय अर्थात् रुद्रक्षेत्रमें विराजमान है, जिनके दर्शन करनेसे मनुष्य सब पापोंसे छूटकर शिव-सायुज्य पाते हैं।

गोपेश्वर ।

मण्डल गाँवसे आगे २ मीलपर झरना, ३$\frac{1}{4}$ मीलपर झरना, ३$\frac{1}{2}$ मीलपर वीरभद्र नामक छोटीचट्टी, ४ मीलपर एक छोटा झरना, ४$\frac{1}{4}$ मीलपर बड़ा झरना, ४$\frac{3}{4}$ मीलपर बीरा नदी और बालासोती नदीका संगम और ५$\frac{1}{4}$ मील गोपेश्वर हैं। मण्डलगाँवके १$\frac{1}{4}$ मील आगेसे नदीकी घाटीका मैदान छोड़कर पहाड़पर चढ़ना होता है। वीरभद्र चट्टी बीरागङ्गा नामक नदीके किनारे है; वहाँसे बीरानदीके बायें किनारेपर चलना होता है। घाटीसे गोपेश्वर तक सुगम चढ़ाई, उतराई है।

गोपेश्वरका शुद्ध नाम गोस्थल है। उस देशकी बड़ी बस्तियोंमेंसे गोपेश्वर एक बस्ती है। उसमें एक मञ्जिले दो मञ्जिले बीस पचीस पक्के मकान, मोदियोंकी २ दुकानें; १ दो मञ्जिली धर्मशाला, गोपेश्वरका बड़ा मन्दिर और चण्डीका १ छोटा मन्दिर है। बदरीनाथ और केदारनाथके रास्तेमें हृषीकेश और काठगोदामके बीचमें केवल उसी जगह ९ हाथका गहरा एक कूप है। उसमें लोटा डुबाने लायक खारा पानी है। बस्तीसे $\frac{1}{4}$ मील उत्तर (पीछेकी तरफ) एक छोटे मन्दिरके पास ३ झरने हैं। सब लोग उन्हीका पानी पीते हैं। चमोलीचट्टी पासमें होनेके कारण वहाँ यात्री कम टिकते हैं। मन्दिरका पुजारी उसी बस्तीका रहने वाला है।

गोपेश्वरका मन्दिर एक बड़े चौगानके मध्यमें खड़ा है। चौगानके चारोंओर मकान और धर्मशालायें हैं और भीतर पत्थरका फर्श लगा है। वह पुराना मन्दिर लगभग ३० फीट लम्बा और उतनाही चौड़ा सादे बनावटका पूर्वमुखसे स्थित है। मन्दिरके शिखरपर २४ द्वारकी बारहदरी है। गोपेश्वर शिव लिङ्गके पासमें चांदीकी शृङ्गार मूर्त्ति, पश्चिम पार्वतीकी मूर्त्ति और धातुके पत्तरोंपर बहुतेरी देव मूर्त्तियाँ हैं और बाहर पीतलका बड़ा गरुड़ और कई देवता हैं। आगेके जगमोहनमें, जो लम्बे पाखवाले घरके समान है; गणेश और पुराना बड़ा नन्दी है। मन्दिरके बाहर पश्चिमोत्तर चिन्तामणि गणेशके पास खरिकके मोटेवृक्षपर और पदुमके पतले पेड़पर लपटी हुई कल्पलता नामक बँवर है। बँवर बहुत पुरानी है और सब ऋतुओंमें फूल देती है, इस लिये उसको लोग कल्प लता कहते हैं। मन्दिरसे बाहर चौगानके भीतर पूर्वोत्तरके कोनेके पास लगभग ९ हाथ ऊँचा लोहेका या मिले हुए धातुओंका शिवका त्रिशूल खड़ा है। उसके खड़े डण्डेमें एक फरसा लगा है। त्रिशूलके डण्डेपर एक पुराने अक्षरका और दूसरा देवनागरी अक्षरका लेख है। देवनागरी अक्षर पीछेका जान पड़ता है और साफ है। त्रिशूलके समीप गङ्गाजीकी छोटी मूर्त्ति है।

एक चढ़ावकी नई राह गोपेश्वरसे पूर्व ओर हाटचट्टीके निकट जाकर चमोलीवाली राहमें मिलगई है। बदरीनाथके यात्री गोपेश्वरसे दक्षिण चमोलीमें जाकर चमोलीसे पूर्वोत्तर घुमावकी राहसे हाटचट्टी पहुँचते हैं। पंचकेदारोंमेंसे रुद्रनाथ गोपेश्वरसे केवल १२ मील दूर हैं; किन्तु वह पगडण्डीका कठिन मार्ग है, इस कारणसे केवल पहाड़ी लोग उस मार्गसे रुद्रनाथ जाते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्दपुराण-(केदारखण्ड, प्रथम भाग, ५५ वाँ अध्याय) आमितीर्थके पश्चिम भागमें गोस्थल नामक स्थान है, जहाँ पार्वतीजीके सहित श्रीमहादेवजी

सर्वदा निवास करते हैं । वहाँ महादेवजी पञ्चीश्वर नामसे प्रसिद्ध हैं । उस स्थानमें शिवजीका आश्चर्यजनक त्रिशूल है, जो बल पूर्वक हिलानेसे नहीं डोलता और एक पुष्पवृक्ष है, जो अकालमें भी सदा पुष्पित रहता है । उस स्थानमें सावधानता पूर्वक ५ रात्रि जप करनेसे देवदुर्लभ सिद्धि प्राप्त होती है और प्राणत्याग करनेसे शिवलोकमें निवास होता है । उसस्थानकी पूर्व दिशामें झषकेतं नामक महादेव हैं । पूर्वकालमें शिवजीने उसी स्थानपर कामदेवको भस्म किया था और कामकी स्त्री रतिने शिवजीको प्रसन्न करके दूसरे जन्ममें कामको रूपवान् किया था; तभीसे उस स्थानपर शिवजी रतीश्वर नामसे प्रसिद्ध होगये । वहाँ रतिकुण्ड है जिसमें स्नान करनेसे शिवलोक मिलता है ।

चमोली ।

गोपेश्वरसे आगे $\frac{1}{2}$ मीलपर बायें और एक बहुत छोटा मन्दिर और दहिनी ओर बालासोती नदीके किनारे पर एक वस्ती; १ मीलपर अलकनन्दा और कुछ दूर दहिनी ओर अलकनन्दा और बालासोतीका संगम; १$\frac{1}{2}$ मीलपर अलकनन्दाके दहिने किनारेपर कोटाल गाँव नामक छोटी वस्ती और २ मीलपर चमोली है, जिसको लोग लालसांगा भी कहते हैं ।

गोपेश्वरसे चमोली तक मार्ग उतराईका है । केदारनाथको छोड़कर बदरीनाथ जानेवाले यात्री रुद्रप्रयागसे अलकनन्दाके किनारे किनारे चमोली जाते हैं । वहाँसे अलकनन्दाके दहिने किनारेसे चलना पड़ता है । चमोलीसे पीछेकी और नन्दप्रयाग ७ मील, कर्णप्रयाग १९$\frac{1}{2}$ मील और रुद्रप्रयाग ४०$\frac{1}{2}$ मील और आगेकी ओर बदरीनाथ ४४$\frac{1}{4}$ मीलपर हैं ।

चमोलीमें पक्का बाजार, अस्पताल, मान्दिर और अलकनन्दापर लोहेका लटकाऊ पुल था, जो सन् १८९४ ई० में गोहना झीलके टूटनेपर बिरही नदीके पानीसे सब बह गये, अब किसीका चिह्न नहीं है । उस समय चमोलीमें अलकनन्दाका जल १६० फीट ऊँचा हुआ था । अब अलकनन्दापर बरहेका झूला बना है । झूलेका महसूल झंपानका चारआने और आदमीका एक पाई लगता है । झम्पानके सवार पैदल झूलेसे नदी पार होते हैं और पहाड़ी आदमी असबाबकी गठरी पारकर देते हैं । झूलेसे $\frac{1}{2}$ मील आगे अलकनन्दाके किनारेपर मोदियोंके मकान बन रहे हैं । वहाँ अलकनन्दा और एक झरनाका पानी है । दुकानोंपर साधारण वस्तुओंके अतिरिक्त कस्तूरी, शिलाजित आदि पहाड़ी चीजें भी मिलती हैं । कोई कोई यात्री जरूरतसे अधिक अपना असबाब वहाँ मोदियोंके पास रख देते हैं। अलकनन्दाके उस पार डिपुटीकलक्टरकी कचहरी, पुलिस, डाकखाना, अस्पताल और एक मोदी है ।

केदारनाथसे बदरीनाथ जानेवाले यात्रियोंको चमोलीके पास अलकनन्दाके पार उतरना नहीं पड़ता; किन्तु बदरीनाथसे लौटनेपर उतरना होता है । चमोलीसे २ मील आगे तक ३ झरने, उस पार खड़े पहाड़से गिरता हुआ बड़ा झरना और २$\frac{1}{2}$ मीलके आगे एक छोटी नदीके पास, जिसपर काठका पुल है; मठचट्टी है । पुलके पार एक वस्ती, १ दुकान और १ झरना है। उससे आगे चमोलीसे ३$\frac{1}{4}$ मील आगेपर दो छप्परकी १ छोटी चट्टी और १ झरना; ४ मील आगे बौलानी नामक ४ छप्परकी छोटी चट्टी, १ छोटी नदी और पनचक्कीका घर; और ४$\frac{3}{4}$ मील आगे विरही और अलकनन्दाका संगम है । चमोलीसे २ मील आगे तक तङ्ग रास्ता है । चमोलीसे मठचट्टी तक रास्तेके किनारे छोटे छोटे वृक्षोंका जंगल है ।

बिरही नदी और अलकनन्दाका संगम—बिरही नदी पूर्वसे आकर अलकनन्दाके बायें किनारे पर मिल गई है। संगमके पास बालूका मैदान होगया है। इसी नदीके पानीसे यहाँसे हरिद्वार तकके अलकनन्दा और भागीरथीके किनारोंके प्रायः सब वस्ती, बाजार, मन्दिर, सड़क और पुल बह गये।

संगमसे ७ मील पूर्व बिरही नदीके किनारेपर गोहना गाँव है। यह छोटी नदी गोहनासे पांच सात मील उत्तरसे आई है। सन् १८९३ ई० की ता० ६ सितम्बरके दिन गोहना गाँवके पास पर्वतका ४०० गज ऊँचा शृङ्ग बिरही नदीमें गिरगया। उसीके गिरनेसे नदीका प्रवाह रुक गया। बिरहीके एक किनारेसे दूसरे किनारे तक प्राय: $1\frac{1}{2}$ मील चौड़ा और २ मील लम्बा पत्थर और मट्टीका ढेर होगया। पानी रुक जानेसे एक बड़ा तालाब बन गया और दिन दिन उसका पानी बढ़ने लगा। उस तालको कोई बिरही ताल और गोहनागाँवके पास रहनेसे कोई कोई गोहना ताल कहने लगे। सरकारने भयंकर तालकी भविष्य दशा विचारकर इंजीनियर साहबोंको भेजकर लोगोंके प्राण बचानेका पूरा प्रबन्ध किया। तालके पास इञ्जीनियर आदिके बङ्गले, जगह जगह तार घर, बाढ़की ऊँचाई जनानेके लिये आधे मीलके फासिले पर पर्वतके किनारोंपर ६ फीट ऊँचे चबूतरे और गोहनासे हरिद्वार तक तार बने। खबर देनेवाले जगह जगह बैठाये गये। जुलाईके अन्तमें नीचेके लोग उठाकर ऊँचे पहाड़ पर बसाये गये। गोहना ताल बढ़ते बढ़ते दो तीन मील चौड़ा, छः सात मील लम्बा और पानीके रोकावके शिर तक ऊँचा हो गया।

सन् १८९४ ई० की तारीख २५ अगस्त शनिवारको $12\frac{1}{2}$ बजे रातको ८५० फीट ऊँचा डाट अर्थात् पानीके रोकावमेंसे ३२० फीट डाट एकदम बह गया। पानी विकराल रूपसे आगे दौड़ने लगा। पानी आने पर अलकनन्दाकी धारा १२ मील तक पीछे लौट गई। एक घण्टेमें लगभग २० मील पानी दौड़ने लगा। वह चमोली १ बजे रातमें, नन्दप्रयाग १ बजके १९ मिनट पर, कर्णप्रयाग २ बजे, रुद्रप्रयाग $2\frac{3}{4}$ बजे, श्रीनगर ३ बजके ५० मिनट पर और देवप्रयागमें $4\frac{3}{4}$ बजे पहुँच गया। रविवार सुबहको बिरही ताल शान्त हो गया। इस बाढ़से कोई आदमी और पशु नहीं मरे, पर स्थावर धनका सर्वनाश होकर गोहनासे हरिद्वार तक हाहाकार मच गया।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्दपुराण—(केदारखण्ड, प्रथम भाग, ५८ वाँ अध्याय) नन्दप्रयागसे १ योजन दूर वशिष्ठेश्वर शिवलिङ्ग है। उससे उत्तर ओर त्रिहिका नामक पवित्र नदी बहती है। उससे आगे पापोंके विनाश करने वाली विरहवती नदी (जिसको बिरही कहते हैं) का दर्शन होता है। महादेवजीने पूर्व कालमें सतीके विरहसे संतप्त होकर उसीके निकट तप किया था, तभीसे उसका नाम विरहवती हो गया। शिवजीके तप करने पर चंडिकाने प्रकट होकर शिवजीसे कहा कि देवेश! मैं हिमवान् पर्वतके गृह जन्म लेकर फिर तुम्हारी पत्नी हूँगी। उसके उपरान्त महादेवजी कैलासमें चले गये, किन्तु उस स्थान पर एक अंशसे विरहेश्वर नामसे स्थित हो गये। वहाँ स्नान, दान और मृत्यु तीनोंका विशेष माहात्म्य है। उसके पूर्व भागमें मणिभद्रसर और दक्षिण भागमें महाभद्रा नदी है। उससे २ कोस पर दण्डाश्रम है; जहां दण्डनामक सूर्यवंशी राजाने, जिनके नामसे दण्डकारण्य लोकमें प्रसिद्ध है; तप किया था। अलकनन्दाके उत्तर तीर पर बिल्वेश्वर महादेव हैं; उसी स्थान पर विना कांटेका एक बेलका वृक्ष है, जिसके फल बैरके समान होवे हैं।

हाटचट्टी और बिल्वेश्वर महादेव–अलकनन्दा और विरहीके संगमसे आगे ¼ मील पर एक झरना और ढोकोंके नीचे ३ गुफा; ¾ मील आगे पहाड़से गिरता हुआ झरना; १¼ मील आगे पर्वतसे गिरता हुआ बड़ा झरना, उससे आगे एक छोटा झरना और पीपलके २ वृक्ष और २¼ मील आगे हाटचट्टी है। संगमसे हाटचट्टी तक अलकनन्दाका पानी गहरा और गम्भीर है ।

हाटचट्टी पर मोदियोंके केवल ३ छप्पर हैं; वहां ३ झपने और पीपलका १ वृक्ष है। गोहना झीलके बढ़नेके समय पर्वतके कटि स्थान पर हाटचट्टीसे गोपेश्वर तक सीधी सड़क बनाई गई; पर कड़ी चढ़ाईके कारण यात्री उस सड़कसे नहीं आते ।

हाटचट्टीसे आगे बायें तरफ कुछ दूर पर पक्के मकानोंके साथ १ बड़ी बस्ती और सड़कके पास १ छोटी कोठरी में १ देवता और दहिनेकी तरफ एक कोठरीमें बिल्वेश्वर शिव और ½ मील आगे ५२ फीट लम्बा और ५ फीट चौड़ा अलकनन्दा नदी पर लोहेका पुल है, जो गोहना झील टूटनेके पीछे सन् १८९५ ई० में फिर बना। वहाँसे पुल पार होकर अलकनन्दाके बायें किनारे चलना होता है । चमोलीसे अलकनन्दाके बायें किनारे एक पगदण्डी मार्ग आकर वहाँ यात्रियोंकी सड़कसे मिल गई है। पुलके पास ३ झरने हैं। चट्टीसे ¾ मील आगे दहिनी ओर १ गुफा, १¼ मील आगे दो जगह २ झरने, २ गुफा और थोड़ा मैदान और हाटचट्टीसे २ मील पर पीपलकोटी है। ऊखीमठसे वहाँतक तीन आने सेर आटा बिकता था।

पीपलकोटी चट्टी–चमोलीसे पुल तक सुगम चढ़ाव उतारकी राह है। पुलसे मैदान तक ¾ मील कड़ी चढ़ाई है । पीपलकोटी उस देशकी बड़ी बस्तियोंमेंसे एक है। इसकी दूकानें बारहों मास खुली रहती हैं, श्रीनगरके बाद पीपलकोटीहीमें सब जरूरी चीजें मिल सकती हैं। वहाँ कपड़ा, बरतन, मेवे, मशाला, कागज, पिंसिल आदि मनेरीकी चीजें, चँवर, शिलाजीत, कस्तूरी, निर्विषी, जहरमोहरा आदि पर्वती चीजें और पूरी, मिठाई इत्यादि भोजनकी वस्तुयें मिलती हैं। कस्तूरी और चँवर भोटसे आते हैं। शिलाजीत उस जगह तय्यार होता है। दूकानदारोंके पास नोट बिकजाता है। वहाँ एक मञ्जिले, दो मंजिले पचीस तीस पक्के मकान हैं। चट्टीसे बाहर दो तीन धर्मशालायें १ नया छोटा शिव मन्दिर; १ नाला, कई झरने, दो तीन गुफोंमें गरीब लोगोंका घर, पनचक्की और चिट्ठी डालनेका बक्स है। आस पास खेतका मैदान है। वहाँके पहाड़में स्लेटके पत्थर बहुत हैं। पीपलके नामसे इस चट्टीका यह नाम पड़ा है। एक पीपलके वृक्षके नीचे एक कोठरीमें चतुर्भुज भगवान्की मूर्त्ति है। चट्टीसे थोडी दूर ऊपर एक दूसरी बस्ती है। पीपल कोटीसे बर्फवाले पहाड़ देख पड़ते हैं और उससे आगे क्रम क्रम सर्दी अधिक पड़ती है।

पीपलकोटीसे आगे ½ मीलपर झरना और २¼ मीलपर इस पार १ दूकान और १ झरना और अलकनन्दाके उस पार रुद्रगंगाका सङ्गम है। रुद्रगंगा; उत्तरकी ओर रुद्रनाथसे आकर अलकनन्दाके दहिने किनारे मिल गई है। रुद्रनाथ पंचकेदारोंमेंसे हैं। पीपलकोटीसे ½ मील आगे गरुड़गंगा हैं । पीपलकोटीसे ३ मील तक सुगम चढ़ाई उतराईकी सड़क और अन्तमें ½ मील कड़ी उतराई है।

गरुड़गङ्गा—गरुड़गंगाकी धारा पर्वतसे नीचे जोर शोरसे गिरती है, जिसमें यात्री स्नान करते हैं बहुत लोग गरुड़को पेड़ा चढ़ाते हैं और सर्पके भयसे बचनेके लिये नदीके पत्थरके टुकड़े अपने घर ले जाते हैं। केदारनाथ और बदरीनाथके यात्रियोंमेंसे कई आदमी जगह जगह चट्टियोंपर गुड़ आदि गरुड़का प्रसाद यात्रियोंको बांटते हैं और यात्री लोग पहाड़ी रास्ता सुगम होनेके लिये गरुड़का नाम लेते हैं। जगह जगह गरुड़की मूर्त्ति देख पड़ती हैं। महाभारत-शांतिपर्वके ३२७ वें अध्यायमें लिखा है कि हिमालय पर्वतपर गरुड़जी सदा निवास करते हैं। गरुड़गंगाके पास खड़ी पहाड़ीमें एक गुफा है और एक कोठरीमें दहिने गरुड़ और बायें विष्णुकी मूर्त्ति है। वहाँ नदीपर काठका पुल बना है। यह नदी थोड़ा आगे जाकर अलकनन्दामें मिलगई है।

गरुड़गंगासे थोड़े आगे पर्वतसे ओरीके समान पानी चूता है; $\frac{१}{४}$ मील आगे खड़े पर्वतसे बड़ा झरना गिरता है, जिसपर काठका पुल बना है और $\frac{१}{२}$ मील आगे गरुड़गङ्गा-चट्टी है। चमोलीसे गरुड़गंगाचट्टी तक मार्गके किनारोंपर क्रम क्रमसे जङ्गली वृक्षोंकी घटती देख पड़ती है। नदियोंमें सफेद, गुलाबी, नील इत्यादि रङ्गके पत्थरके बहुत चट्टान और टुकड़े देखनेमें आते हैं।

गरुड़गङ्गाचट्टी—चट्टीपर आठ दश बड़ी बड़ी पक्की दूकानें कई एक झरने, जिनमें एक बहुत बड़ा है; और एक सरकारी पक्की धर्मशाला है, जिसकी दीवार पर सन् १८७९ ई० लिखा हुआ है। दूकानोंपर पूरी, मिठाई भी मिलती है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्दपुराण—(केदारखण्ड, प्रथमभाग, ५७ वाँ अध्याय) विश्वेश्वरके बाद अलकनन्दाके दहिने किनारे पर गरुड़गंगा है, जिसमें स्नान करके गरुड़जीकी पूजा करनेसे विष्णुलोकमें निवास होता है। जिस स्थानमें गरुड़गंगाकी शिला रहती है। वहाँ सर्पका भय नहीं होता, उस नदीके टुकड़ेको जलमें घिस कर पीनेसे सर्पका विष उतर जाता है। उसके बाद गणेश नदी मिलती है, जिसमें स्नान करनेसे पापोंका नाश होजाता है। वहाँ सिन्दूरके समान मृत्तिका है।

पातालगंगाचट्टी—गरुड़गङ्गाचट्टीसे आगे १$\frac{१}{४}$ मीलपर झरना और १$\frac{१}{२}$ मीलपर बेलचट्टी है जिसको देवदारु चट्टी भी कहते हैं। उसके आस पास पर्वतके ऊपर देवदारुके बहुत वृक्ष हैं, इससे उसका नाम देवदारुचट्टी पड़ा है। वहाँ मोदियोंके बड़े बड़े ६ मकान, झरना और डोलची बनानेवाला है और गरुड़चट्टीसे ३$\frac{१}{४}$ मीलपर पातालगंगा चट्टी है। देवदारुचट्टीके आगे $\frac{३}{४}$ मील चढ़ाई और ९ मील कड़ी उतराई है। पातालगङ्गासे २ मील आगे घुमावकी सड़क है।

पातालगङ्गा नदी पर पुल बना है। नदीके किनारे बड़े बडे ५ पक्के मकान; ३ छप्परसे बने हुए मकान, एक कोठरीमें गणेशजीकी मूर्त्ति, झरना और नदीका पानी और कई पनचक्की हैं। वह नदी वहाँसे १ मील आगे जाकर अलकनन्दासे मिल गई है।

पातालगङ्गासे १$\frac{१}{२}$ मील आगे पर्वतके ऊपर गुलाबगढ़ बस्ती और गुलाबगढ़का मन्दिर दूरसे दिखाई पड़ता है। लोग कहते हैं कि टिहरीके गुलाबसिंहने बस्तीको बसाया और मन्दिर बनाया था। पातालगङ्गासे १$\frac{३}{४}$ मील आगे एक झरना और २ मील आगे गुलाबकोटी चट्टी है। गरुड़गङ्गाचट्टीसे वहाँ तक चीड़के पेड़ोंका जङ्गल है।

गुलाबकोटीचट्टी—वहाँ २ दो मञ्जिले मकान, २ फूसके छप्परवाले मकान और २ झरने और नीचे १ बस्ती है।

कुम्भारचट्टी—गुलाबकोटी चट्टीसे १¾ मील आगे छोटी कुँभारचट्टी पर मैदानमें १ मोदीका मकान और २¾ मील आगे बड़ी कुँभारचट्टी है। गुलाबकोटी चट्टीसे ½ मील कड़ी चढ़ाई, ½ मील उतराई, बाद सुगम चढ़ाई, उतराई है।

कुँभारचट्टीपर बारह चौदह बड़े बड़े पक्के मकान, १ सरकारी पक्की धर्मशाला और कई झरने हैं। वहाँ कपड़े, बरतन, मेवा, मसाले और कस्तूरी, शिलाजीत, चँवर आदि पहाड़ी चीजें बिकती हैं। भेड़, बकरों और गदहों पर जिन्स लादे हुए भोटिये व्यापारी देख पड़े थे। कुँभारचट्टीके उस पार एक नदी आकर अलकनन्दामें मिली है।

आदिबदरी।

कुँभारचट्टीसे ६ मील पश्चिमोत्तर अलकनन्दाके उस पार ऊर्जम गाँव है, जहां ऊर्ज-मुनिने तप किया था। उसी स्थान पर पंच बदरीमेंसे एक आदिबदरी विराजते हैं। ऊर्ज-मुनिकी कथा मण्डल गाँवके वृत्तान्तमें देखो।

कल्पेश्वर।

आदि बदरीसे २ मील आगे पंच केदारोंमेंसे कल्पेश्वर महादेवका मन्दिर है। कुँभारचट्टीसे आदिबदरी और कल्पेश्वरका दर्शन करके फिर कुँभारचट्टी पर लौटकर आगे जाना होता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्दपुराण—(केदारखण्ड, प्रथम भाग; ५३ वाँ अध्याय) शिवजीके ५ स्थानोंमेंसे पांचवां स्थान कल्पस्थल करके प्रसिद्ध है। उसी स्थान पर देवराज इन्द्रने दुर्वासाजीके शापसे श्रीहत होनेके पश्चात् महादेवजीका पूजन किया था और पार्वती-जीके सहित महादेवजीकी आराधना करके कल्पवृक्ष पायाथा। तभीसे शिवजी कल्पेश्वर नामसे प्रसिद्ध हुए। कथा ऐसी है कि एक समय इन्द्र ऐरावत हस्तीपर चढ़कर कैलासमें गया। वहाँ महर्षिदुर्वासाने एक स्त्रीसे फूलकी माला मांगकर इन्द्रको दी। इन्द्रने अभि-मानसे उस मालाको हाथीके मस्तक पर रखदिया। तब दुर्वासा ऋषिने मालाका तिरस्कार देखकर इन्द्रको शाप दिया कि तुमने लक्ष्मीसे प्रमत्त हो मेरा अपमान किया इसलिये तुम्हारी लक्ष्मी तीनों लोकसे नष्ट होजायगी। उस समय इन्द्र दण्डके समान पृथ्वीमें प्रणत होकर महर्षिसे बोला कि हे विप्र! मैंने अज्ञानसे तुम्हारा अपमान किया इसलिये तुम इस अपरा-धको क्षमा करो। दुर्वासा बोले कि हे दुर्बुद्धे इन्द्र! मेरा शाप अमोघ है। तुम महादेवजीकी आराधना करके फिर अपना पद प्राप्त करो। उसके पश्चात् इन्द्र अपने शत्रुओंसे पराजित होकर राज्यपदसे च्युत होगया। तीनों लोकोंसे उनकी लक्ष्मी नष्ट होगई। जगतमें हाहाकार मचगया। सब राजा दरिद्र होगये। तब ब्रह्माजीने सब देवताओंके साथ क्षीरसागरके तटपर जाकर विष्णुजीसे जगत्का दुःख कह सुनाया। विष्णुने देवताओंसे कहा कि तुम लोग इन्द्रको खोजो; हम लोग उनके साथ शिवजीकी आराधना करेंगे। वायुने कैलास पर्वतपर अलकनन्दाके उत्तर तीरपर श्रीक्षेत्रमें मशकके रूपमें इन्द्रको देखा। इन्द्र कीलित होकर वहां

निवास किये था, इस कारणसे उस पर्वतका नाम इन्द्रकील होगया । ब्रह्मादिक सब देवता इन्द्रके पास आये । इन्द्र मशक रूप छोड़कर देवताओं सहित शिवजीके स्थानमें गया ।

(५४ वाँ अध्याय) इन्द्रने सब देवताओंके सहित उस पर्वतपर १० हजार वर्षतक शिवजीकी आराधना की । ब्रह्मा और विष्णुने भी महादेवजीकी बड़ी स्तुति की । तब शिवजी प्रकट हुए । ब्रह्मादिक देवताओंने अपना दुःख उनसे कह सुनाया । महादेवजीकी आज्ञानुसार देवताओंने शिवजीके नेत्रका जल समुद्रमें डाल समुद्रको मथकर लक्ष्मी, कल्पवृक्ष आदि रत्नोंको पाया और सब जगत् पूर्ववत् लक्ष्मीसे युक्त होगया । जिस स्थान पर इन्द्रादिक देवताओंने शिवजीका तप किया, उस स्थान पर शिवजी कल्पेश्वर नामसे विख्यात होगये ।

(५५ वाँ अध्याय) कल्पेश्वरमें शिवलिंगके दक्षिण ओर कपिल लिंग है, जिसके दर्शन मात्रसे मनुष्य शिवलोकमें पूजित होता है । उसके नीचे हिरण्यवती नदी बहती है, जिसके दक्षिण तीरपर भृङ्गीश्वर महादेव हैं, जिसके दर्शन मात्रसे एक कल्प तक शिवलोकमें वास होता है । उस क्षेत्रका विस्तार २ कोस है ।

(५६ वाँ अध्याय) केदार, मध्यमेश्वर, तुङ्गनाथ, कल्पेश्वर और महालय, अर्थात् रुद्रनाथ ये ५ शिवजीके महान् स्थान हैं । जो मनुष्य भक्तिसे अथवा बलात्कारसे ज्ञानसे अज्ञानसे इन क्षेत्रोंमें जाते हैं, उनके दर्शन मात्रसे पापी मनुष्य पवित्र होजाते हैं और दर्शन करनेवाले मनुष्य इसलोकमें सुन्दर भोगोंको भोगकर मरनेपर मोक्ष पाते हैं ।

वृद्धबदरी ।

कुँभारचट्टीसे $\frac{1}{2}$ मील आगे १ झरना और दूसरा १ बहुत बड़ा झरना और $1\frac{1}{2}$ मील आगे छोटा झरना है । उससे थोड़ेही आगे बाईं ओर एक पगदंडी राह बहुत नीचे पैनीमठको गई है । पैनीमठमें २ मकान और वृद्धबदरीका मन्दिर है । दहिने और ऊपर पहाड़पर पैनीगाँव है । कुँभारचट्टीसे $2\frac{1}{8}$ मील आगे बड़ा झरना और $2\frac{1}{2}$ मील आगे पैनी चट्टी ।

पैनीचट्टी–उस चट्टीपर मोदियोंके चार मकान और १ बड़ा झरना है । चट्टीसे $\frac{1}{2}$ मील नीचे पैनीमठमें वृद्धबदरी है, पर चट्टीसे वहाँ जानेकी राह नहीं है ।

पैनीचट्टीसे आगे २ मीलपर बड़ी गुफा और उस पार अलकनन्दा और एक नदीका संगम है उससे आगे जगह जगह चार पांच गुफाओंके बाद बहुत बड़ा झरना आर ३ मील आगे १ गुफा और १ मोदीका मकान है । उस जगहसे नीचे विष्णुप्रयागकी और ऊपर जोशीमठकी राह गई है । वहाँसे विष्णुप्रयाग नीचेकी राहसे $1\frac{3}{4}$ मील और जोशीमठ होकर $2\frac{3}{4}$ मील है । पैनीचट्टीसे $3\frac{1}{2}$ मील आगे बाईं ओर एक नया छोटा मन्दिर और २ पक्के घर और जगह जगह बहुत झरने और $4\frac{1}{4}$ मील आगे जोशीमठ है । कुँभारचट्टीसे जोशीमठतक सुगम चढ़ाई, उतराईकी राह है ।

जोशीमठ ।

जोशीमठ उस देशकी बड़ी बस्तियोंमेंसे एक है । श्रीशंकराचार्य स्वामीने; जो नवीं शतकमें थे, जोशीमठको कायम किया था । श्रीनगरके बाद इतनी बड़ी बस्ती कोई नहीं मिलती है । जोशीमठमें पत्थरके टुकड़ोंसे छाये हुए करीब ५० पक्के मकान, कई धर्मशालायें

झरने और पनचक्कियां हैं और पश्चिम ऊंची जमीन पर एक सरकारी बंगला, सड़कके पास पुलिसकी चौकी और मन्दिरोंसे दक्षिण डाकखाना और सफाखाना है। कपड़े मेवे, मसाले, जिन्स, पूरी, मिठाइयां, कागज, चँवर आदि सब वस्तुएँ मिलती हैं। बस्तीके उत्तर भागमें नृसिंहजीके मन्दिरसे पश्चिम एकही जगह दो किते बदरीनाथके रावल अर्थात् प्रधान पुजारीके मकान हैं। मकान पत्थरके तख्तोंसे छाये हुए हैं। पूर्व द्वार पर काष्ठका नकाशीदार चौकठ लगा है। जाड़ेके आरम्भमें जब बदरीनाथका पट बन्द होता है तब लगभग ६ मास तक बदरीनाथकी पूजा जोशीमठमें होती है। पट खुलनेके समय रावल बड़ा उत्सव करके जोशीमठसे बदरीनाथ जाते हैं और लगभग ६ मास वहाँ रहते हैं।

नृसिंहजीका मन्दिर—रावलके मकानसे पूर्व पत्थरके तख्तोंसे छाया हुआ दक्षिण मुखका दो मञ्जिला नृसिंहजीका मन्दिर है। उसके दोनों ओर २ पाख और शिरपर तीन जगह तीन कलश हैं। कलशोंके पास एक एक ध्वजा खड़ी हैं। नीचेके मञ्जिलमें पूर्व ओर दक्षिण मुखकी कोठरीमें नृसिंहजीकी सुन्दर(मूर्त्ति पश्चिम मुखसे बैठी है। इनका मुकुट और छत्र सोनहुला है। इनके बायें राम और लक्ष्मण और दहिने बदरीनाथ, उद्धवजी और चण्डीकी मूर्त्तियाँ हैं। नृसिंहजीकी कोठरीसे पश्चिम अर्थात् मन्दिरके मध्य भागमें पुजारीकी कोठरी और उस कोठरीसे दक्षिण शेषशाई भगवान् और पश्चिम-दक्षिण लक्ष्मणजीकी मूर्त्ति है। मन्दिरसे बाहर चारों तरफ मकान और पूर्व ओर दरवाजा है। नृसिंहजीके मन्दिरके दरवाजेसे पूर्व एक दालानमें दो जगह पीतलके नल लगे हैं। जिनसे झरनेका पानी निकलकर नीचे एक छोटे कुण्ड में गिरता है। उनको लोग दण्डधारा कहते हैं।

वासुदेवका मन्दिर—नृसिंहजीके मन्दिरसे पूर्व चार दिवालोंके भीतर वासुदेवका पुराना मन्दिर पश्चिम मुखसे खड़ा है। मन्दिरके शिखरपर बीस द्वारकी बारहदरी है। वासुदेव अर्थात् कृष्णकी श्यामल मूर्त्ति मनुष्यके समान ऊँची और उसके दहिने उससे छोटी बलदेवजीकी मूर्त्ति है। दोनों मूर्त्तियाँ बहुत पुरानी हैं। वहाँके लोग कहते हैं कि शंकराचार्य्यने इनको स्थापित किया था। मन्दिरके घेरेके भीतर पश्चिमोत्तरकी कोठरीमें आठ भुजाओंमें आठ हथियार लिये हुए गणेशजीकी विचित्र मूर्त्ति, जिसके साथ छोटी छोटी कई मूर्त्तियाँ हैं, पूर्वोत्तरकी कोठरीमें सत्यनारायण, पूर्व-दक्षिणकी कोठरीमें ध्यान बदरी; दक्षिणकी कोठरीमें गणेश और एकही पत्थरमें विचित्र तरहकी बनी हुई ९ दुर्गाओंकी ९ मूर्त्तियाँ और दक्षिण-पश्चिमकी कोठरीमें एकही साथ शिव और पार्वतीकी मूर्त्ति है, जिसको लोग तांडव शिव कहते हैं। मन्दिरके घेरेके बाहर पश्चिम ओरके चबूतरेपर पीतलका गरुड़ है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्दपुराण-(केदारखण्ड, प्रथम भाग; ५८ वाँ अध्याय) विष्णुकुण्डसे २ कोसपर ज्योतिर्धाम है, जहाँ नृसिंह भगवान् और प्रह्लादजी निवास करते हैं। इस पीठके समान सिद्धि देनेवाला और सम्पूर्ण कामनाओंको पूर्ण करनेवाला कोई दूसरा पीठ नहीं है।

भविष्य बदरी।

जोशीमठके सफाखानेके पाससे एक मार्ग जोशीमठके मन्दिर होकर आगेकी ओर श्रीबदरीनाथको और दूसरा मार्ग दहिनी ओर तपोवन, नीतीको और भोट होकर काठगोदामको गया है। जोशीमठसे ६ मील पूर्व तपोवन और तपोवनसे दक्षिणकी ओर काठगोदा

है। उस मार्गसे भोटिये व्यापारी, जो खास करके शोके कहलाते हैं और पुराणोंमें शक लिखे गये हैं, सैकड़ों भेड़, बकरे, गदहे, खच्चर, जोबरा (जो एक प्रकारकी गौ हैं, उनकी पूंछपर बहुत बाल होते हैं) इत्यादि जानवरोंपर जिन्स लादकर व्यापार करते हैं। भोटिये लोग अङ्गरेजी, नेपाल और तिब्बत इन तीनों राज्योंकी सीमाओंपर और सीमाओंके निकट बसे हैं। भोट देशमें व्यासजीने तप किया था, इसलिये उस देशको व्यासखण्ड भी कहते हैं। कैलास पर्वत और मानसरोवर उस देशके निकट है। महाभारत-शान्तिपर्वके ३२७ वें अध्यायमें लिखा है कि व्यासदेव हिमालयकी पूर्व दिशाको अवलम्बन करके विविक्त पर्वतपर शिष्योंको वेद पढ़ाते थे; उनके पुत्र शुकदेवजी उस आश्रममें गये।

जोशीमठसे ६ मील पूर्व पर्वतपर तपोवन है। उस देशके लोग कहते हैं कि हनुमान्-जीने उसी स्थानपर कालनेमि राक्षसको मारा था। तपोवनसे ५ मील दूर धवली गङ्गाके निकट पंच बद्रीमेंसे एक भविष्यबद्रीका मन्दिर है; जिसको तपबद्री भी कहते हैं। राह सुगम है; किन्तु खानेका सामान साथमें ले जाना पड़ता है और जोशीमठमें लौटकर बद्री-नाथ जाना होता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्दपुराण—(केदारखण्ड, प्रथमभाग, ५८ वाँ अध्याय) गन्धमादनके दहिने भागमें धवली गङ्गाके तटपर भविष्यबद्री है। पूर्वकालमें महर्षि अगस्त्यने उस स्थानपर हरिकी आराधना की थी; उस समयसे बद्रीनाथ वहाँ निवास करते हैं। उस स्थानपर दो पवित्र धारा हैं, जिनमेंसे एक धाराका जल गर्म है, जिसमें स्नान करनेसे मनुष्यको विष्णुलोक प्राप्त होता है। उस स्थान पर अग्निने तप किया था। वहाँ महादेवजी मुनीश्वर नामसे प्रसिद्ध हैं, जिनके दर्शन मात्रसे शिवलोक मिलता है। भविष्यबद्री महापातकोंको नाश करने वाला है। उसके बाद अगस्त्य मुनिका पवित्र स्थल मिलता है वह ४ योजन चौड़ा और ५ योजन लम्बा है। जहां महात्माओंने बहुत शिवलिङ्ग स्थापित किये हैं और देवी तथा देवताओंके मन्दिर बनाये हैं; उसी स्थान पर मानसोद्भेदन पर्वतसे धवलीगङ्गा निकली है। पूर्व कालमें राजा धवलने वहाँ गङ्गाकी सेवा की थी, इसलिये उसका नाम धवलीगङ्गा हो गया; वह गङ्गाकी ९ वीं धारा है। धवलीगङ्गाके दर्शन मात्रसे मनुष्य निष्पाप होजाते हैं।

विष्णुप्रयाग।

जोशीमठसे १½ मील आगे तिर्मुहानी सड़क और १ झरना और १¾ मील आगे विष्णुप्रयाग है। सङ्गमके समीप धवलीगङ्गाके ऊपरका लोहेका पुल टूट गया है। गङ्गाके मध्यमें एक बहुत बड़ा पत्थरका ढोका पड़ा है; उसके ऊपरसे दोनों ओर धवलीगङ्गाके दोनों किनारों तक तख्तोंसे पाटकर १३० फीट लम्बा काठका पुल बना है। यात्रीगण उस पुलसे चट्टीपर जाते हैं। वहाँ उत्तरसे अलकनन्दा आई है और पूर्व नीतीघाटीसे धवलीगङ्गा जिसको लोग विष्णुगङ्गाभी कहते हैं, आकर अलकनन्दामें मिलगई है। सङ्गम पर नदियों की धारा बड़ी तेजीसे गिरती है। चट्टीसे ७० सीढ़ियोंके नीचे एक गुम्बजदार छोटा मन्दिर हालमें बना है, जिसमें ६० सीढ़ियोंके नीचे संगम है। सहारेसे उतरनेके लिये सीढ़ियोंके दोनों बगलोंमें सीकड़ लगे हैं। वहाँकी धारा बड़ी तेज है। यात्रीगण लोटेमें जलभर कर सङ्गम पर स्नान करते हैं; उसी स्थानको विष्णुकुण्ड कहते हैं।

सङ्गम पर संकीर्ण स्थानमें विष्णुप्रयागकी चट्टी है। वहाँ चार पांच छोटे छोटे मकान और १ कोठरीमें विष्णु भगवान्, बदरीनाथ और दूसरे कई एक देवताओंकी मूर्त्तियां हैं। दूकानों पर जिन्सोंके अलावे; पूरी मिठाई और चंवर, कस्तूरी आदि पहाड़ी चीजेंभी बिकती हैं। विष्णुप्रयाग गढ़वाल जिलेके पंचप्रयागोंमेंसे एक है। जोशीमठसे विष्णुप्रयाग तक कड़ी उतराई है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्दपुराण—(केदारखण्ड, प्रथमभाग, ५८ वाँ अध्याय) ज्योतिर्धामसे २ कोस पर विष्णुप्रयाग है, जिसमें स्नान करनेवाला विष्णुलोकमें पूजित होता है। उसके समीप अनेक तीर्थ विद्यमान हैं; जिनमेंसे १० प्रधान कहे जाते हैं;—ब्रह्म-कुण्ड, शिवकुण्ड, गणेशकुण्ड, भृङ्गीकुण्ड, ऋषिकुण्ड, सूर्यकुण्ड, दुर्गाकुण्ड, धनदकुण्ड, और प्रह्लादकुण्ड,। उन कुण्डोंमें स्नान करनेवाला मनुष्य कृतकृत्य हो जाता है। महर्षि नारदने उस प्रयागमें विष्णु भगवान्की आराधना करके सर्वज्ञत्व लाभ किया, तभीसे विष्णुकुण्ड प्रसिद्ध होगया। उस स्थान पर स्नान और जप करके बदरिकाश्रम जाना उचित है। सम्पूर्ण पापोंकी हरनेवाली धवलीगङ्गाकी धारा महादेवजीके समीपसे आई है। सङ्गमसे १ बाणकी दूरी पर धवलीगङ्गाके उत्तर तट पर ब्रह्मकुण्ड, उससे १४ दण्ड पर शिवकुण्ड और शिवकुण्डसे आधे बाण पर गणेशकुण्ड; और अलकनन्दाके किनारेपर विष्णुकुण्डसे १ बाण पर भृङ्गीकुण्ड, उससे आधे बाण पर ऋषिकुण्ड, उसके बाद सूर्यकुण्ड, उससे ४ दण्ड पर दुर्गाकुण्ड, उसके बाद धनदा यक्षिणीका तीर्थ (धनदकुण्ड) और बाद प्रह्लादकुण्ड है।

घाटचट्टी—विष्णुप्रयागसे आगे पूर्ववत् अलकनन्दाके बायें किनारे चलना पड़ता है।

विष्णुप्रयागसे आगे $\frac{1}{2}$ मील पर बड़ा झरना और एक गुफा, उससे थोड़ेही आगे काठके पुलके साथ बहुत बड़ा झरना; $\frac{3}{4}$ मील आगे छोटा झरना और एक कोठरी, १ मील आगे टूटे हुए पुलके पास बड़े बड़े ढोकोंके नीचे ऊपर बड़े बेगसे विचित्र तरहसे अलक-नन्दाका पानी गिरता है और १$\frac{1}{2}$ मील आगे १६० फीट लम्बा और ५ फीट चौड़ा लोहेका पुल है। पुल पार होकर अलकनन्दाके दहिने किनारे चलना होता है। पुलके बाद ऊपर दो झरने हैं। विष्णुप्रयागसे २ मील आगे बड़ी गुफा, ३$\frac{1}{4}$ मील आगे अलकनन्दाके बायें एक नदीका सङ्गम ३$\frac{3}{4}$ मील आगे दो झरने और बड़े ढोकेके नीचे १ गुफा और ४$\frac{1}{4}$ मील आगे घाटचट्टी है।

विष्णुप्रयागसे घाटचट्टी तक संकीर्ण सड़क है। अलकनन्दाके दोनों तरफ ऊँचे खड़े पत्थरीले पर्वत हैं, जिनपर वृक्ष और पौधे बहुत कम हैं। राह नीची ऊँची ठोकरवाली और जगह जगह सीढ़ियोंकी कड़ी चढ़ाई उतराई है।

यह छोटीचट्टी अलकनन्दाके पानीके पास है, इससे इसका नाम घाटचट्टी या गटचट्टी पड़ा है। पहाड़ी भाषामें घाटको गट कहते हैं। वहाँ मैदानमें मोदियोंके २ बड़े बड़े पक्के मकान और १ पनचक्की है।

घाटचट्टीसे $\frac{1}{4}$ मील आगे बड़ा झरना और उस पार पर्वतके ऊपरसे गिरता हुआ झरना, $\frac{3}{4}$ मील आगे वस्तीके३मकान और वस्तीवालोंके लिये अलकनन्दापर काठका पुल १$\frac{1}{2}$ मील आगे छोटा झरना और २ मील आगे पाण्डुकेश्वर चट्टी है। घाटचट्टीसे पाण्डुकेश्वर तक बायेंके पहाड़पर हरियाली है; किन्तु दहिनेके पर्वतपर नहीं। घाटोंके जंगलमें फूली हुई सेवतीं बहुत देख पड़ी थीं।

पाण्डुकेश्वर।

पाण्डुकेश्वरचट्टी गढ़वाल जिलेकी बड़ी वस्तियोंमेंसे एक है वहाँ छोटे बड़े चालीस पञ्चास मकान बने हुए हैं, जिनमेंसे बहुतेरे कड़ियोंके ऊपर पत्थरके तख्तोंसे और बहुतेरे लकड़ीके तख्तोंपर फूससे छाये गये हैं। वहाँके बहुतेरे निवासी मोदीके काम करते हैं। वहाँ सरकारी धर्मशाला, कई एक पनचक्कियाँ, अलकनन्दा और एक बड़े झरनेका पानी और योगबदरी और वासुदेवजीका मन्दिर है। पूर्वकालमें राजा पाण्डुने मृगरूपी मुनिके शापसे दुःखी होकर इसी स्थानपर तप किया था।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(आदिपर्व, ११८ वाँ अध्याय) हास्तिनापुरके राजा पाण्डु हिमालय पर्वतके दहिने छोरमें घूमघाम कर कुन्ती और माद्री अपनी स्त्रियोंके सहित पर्वतकी पीठपर बसकर आखेट खेलने लगे। एक समय उन्होंने मैथुन धर्ममें आसक्त एक मृगको देखा; तब पाँच बाणोंसे उस मृग और मृगीको मारा। कोई तेजस्वी ऋषिकुमार मृगका स्वरूप धारण करके मृगीसे मिला था, उसने पाण्डुको शापदिया कि जब तुम काम युक्त होकर अपनी स्त्रीसे मिलोगे, तब मृत्युको प्राप्त होगे। ऐसा कह वह मृग मर गया। (११९ वाँ अध्याय) उसके उपरान्त राजा पाण्डुने अपने और अपनी स्त्रियोंके सब वस्त्र और भूषण ब्राह्मणोंको देकर सारथियों और नौकरोंको हस्तिनापुर भेज दिया। उसके पश्चात् वह अपनी दोनों स्त्रियोंके साथ नागशत पर्वतको पधारे और हिमालयसे होते हुए गन्धमादनमें जा पहुँचे। अन्तमें वह इन्द्रद्युम्न तालको पाकरके हंसकूटको पीछे छोड़ शतशृङ्ग नामक पर्वतपर पहुँच कठोर तप करने लगे। (१२३ वाँ अध्याय) अनन्तर शतशृङ्ग पर्वतहीपर पाण्डुके युधिष्ठिर आदिक ५ पुत्र जन्मे। (१२५ वाँ अध्याय) एक समय वसन्त ऋतुमें माद्रीको देखकर पाण्डु कामासक्त होगये। वह शापकी बात भूलकर माद्रीको पकड़ मैथुन धर्ममें प्रवृत्त हुए। उसी समय उनका देहान्त होगया और माद्री उनके संग गई। (१२६ वाँ अध्याय) वहाँके महर्षिगण कुन्ती, उसके बेटे और दोनों मृतकोंको लेकर हस्तिनापुर आये। कौरवोंने पाण्डु और माद्रीकी देहको गङ्गाके तट पर लेजाकर चितामें जलाया।

स्कन्दपुराण—(केदारखण्ड, प्रथमभाग, ५८ वाँ अध्याय) राजा पांडुने मृगरूपधारी मुनिके शापसे दुःखी होकर तप किया; तभीसे वह स्थान पांडुस्थानके नामसे प्रसिद्ध होगया। उस समय विष्णु भगवान् प्रकट होकर बोले कि हे पाण्डो ! तुम्हारे क्षेत्रमें धर्मादिकोंके अंशसे बलवान् पुत्र उत्पन्न होंगे; ऐसा कहकर विष्णु चले गये। उस स्थानपर पाण्डीश्वर महादेव विराजते हैं।

योगबदरी।

पांडुकेश्वरमें योगबदरीका शिखरदार मन्दिर पश्चिम मुखसे खड़ा है। यह मन्दिर बड़े बड़े ढोकोंसे बना हुआ है और प्राचीन होनेके कारण जर्जर हो गया है। योगबदरी पांच बदरियोंमेंसे एक है, जिसको लोग ध्यानबदरी भी कहते हैं। इनकी धातुकी मूर्त्ति, सोनहले मुकुट, छत्र और वस्त्रोंसे सुशोभित है। मन्दिर आगेके जगमोहनमें, जिसके आगे पाखमें द्वार है, किसी धातुके बड़े बड़े ४ तख्तोंपर खोदे हुए लेख हैं, जो पढ़े नहीं जाते हैं। पूछने

पर पुजारीने मुझसे कहा कि यह लेख पाण्डवोंके समयके हैं । जगमोहनसे बाहर छोटी कोठरीमें एक शिवलिंग और एक दूसरा देवता है ।

वासुदेवका मन्दिर—योगबदरीके मन्दिरके पासही दक्षिण उसी मन्दिरके आकारका वासुदेवजीका मन्दिर है, जिसकी मरम्मत पटियालेके महाराजने करवादी है। वासुदेवजीकी धातु प्रतिमा, सुन्दर वस्त्र, सुनहले छत्र और मुकुटसे सुशोभित है। दोनों मन्दिरोंमें केवल एकही पुजारी है ।

शेषधारा—पाण्डुकेश्वरचट्टीसे ½ मील आगे एक नाला होकर झरनेका पानी भूमिपर बहता है; उसीको लोग शेषधारा कहते हैं । वहाँ एक कोरी कोठरीमें १½ हाथ ऊँचा अनगढ़ लिंगके समान शेषजी हैं और पांच छः पक्के मकान, जिनमेंसे कई एक रीवांके महाराजके हैं; बने हुए हैं । वहाँ महाराजका सदावर्त जारी है और एक दो दूकान भी रहती हैं ।

शेषधारासे आगे ⅜ मीलपर जोर शोरसे ऊपरसे गिरता हुआ एक बड़ा झरना, नीचे ३ झरने और १ पनचक्की; आगे बड़े बड़े ४ झरने; १ मीलपर ३ मकान और उस पार एक बस्ती और बहुत बड़ा झरना; १½ मीलपर एक झरना; १½ मीलपर बहुत बड़ा झरना; १⅜ मीलपर कई झरने; २ मीलपर बहुत बड़ा झरना; बाद १ झरना; उसके बाद पनचक्की, उसके आगे बड़ा झरना; और १ गुफा २⅛ मील आगे लामबगड़ चट्टीपर मोदीके २ पक्के मकान और झुँझुनूवाले रायसूर्यमलकी पक्की धर्मशाला; २½ मील आगे अलकनन्दापर ७० फीट लम्बा और ७⅛ फीट चौड़ा काठका पुल; जिसको पार होकर अलकनन्दाके बायें किनारे चलना होता है, ३⅜ मीलपर एक झरना और ५½ मीलपर हनूमानचट्टी है ।

एक मील पहलेसे हनूमान चट्टीतक पत्थरके बड़े बड़े सैकड़ों ढोंके पड़े हैं, जिनसे जगह जगह बहुतेरी गुफायें बन गई हैं और भोटिये व्यापारियोंने अनगढ़ पत्थरके टुकडोंकी दीवार और डाढ़पातके छप्परसे छोटे छोटे घर बनाये हैं । घाटचट्टीसे हनूमानचट्टी तक अलकनन्दाके किनारोंपर लतावृक्षोंकी विचित्र हरियाली देखनेमें आती है ।

हनूमानचट्टी—उस चट्टीको अमलागाड़चट्टी भी लोग कहते हैं । वहाँ मोदियोंके चार पांच पक्के मकान, पूरी, मिठाईकी भी दूकानें, एक कोठरीमें हनूमानजीकी छोटी मूर्त्ति, एक छोटी धर्मशाला और अलकनन्दा तथा घृतगङ्गाका जल है । यात्री लोग घृतगङ्गाका जल पीते हैं । पहाड़ी लोग उसके आस पासके जङ्गलसे सूखी लड़कियां अपनी पीठपर बदरीक्षेत्र लेजाते हैं, उससे आगे बर्फ अधिक रहनेके कारण जङ्गल नहीं है ।

बैखानस मुनिका स्थान—हनूमानचट्टीके पास अलकनन्दाके उस पार क्षीरगंगा और उस पार घृतगंगा, अलकनन्दामें मिली है । उसी स्थानपर पूर्व कालमें बैखानस मुनिने तप किया था । लोग कहते थे कि यज्ञकी राखी अब तक पाई जाती है और राजा मरुतने भी इसी स्थानपर यज्ञ किया था ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्दपुराण—(केदारखंड, प्रथमभाग ५८ वाँ अध्याय) बदरिकाश्रमसे २ कोसपर बैखानस मुनिका आश्रम और यज्ञभूमि है, जिसके हवनके स्थानपर बिन्दुमती नदी बहती है और अबतक जले हुए जव और तिल तथा अङ्गार देख पड़ते हैं।

उसके ऊपर पर्वतपर योगीश्वर नामक भैरव रहते हैं; उनका पूजन करके बदरिकाश्रममें जाना उचित है ।

महाभारत—(द्रोणपर्व, ५३ वाँ अध्याय) राजा मरुतके यज्ञमें, जिसकी सम्पूर्ण वस्तु सुवर्ण भूषित बनी थीं, बृहस्पतिके सहित सम्पूर्ण देवता हिमालय पर्वतके सुवर्ण मय शिखरपर एकत्र हुए थे । (अश्वमेध पर्व ६४ वाँ अध्याय) युधिष्ठिर आदिक पाण्डवगण व्यासदेव-जीकी आज्ञानुसार राजा मरुतके यज्ञस्थानसे रत्न लानेके लिये अपनी सेनाओंके सहित वहाँ जा पहुँचे और शिवजीकी पूजा करके ऊँट, घोड़ों, हाथी, शकट, रथ, गदहों और मनुष्योंपर नानाप्रकारके धन और रत्न लदवा कर हस्तिनापुर लेगये ।

कुबेरशिला–हनूमानचट्टीसे ¾ मील आगे अलकनन्दापर ३६ फीट लम्बा काठका पुल है । पुल पार होकर अलकनन्दाके दहिने किनारे चलना होता है । पुलसे आगे तीन चार झरने १ मील आगे कई झरने और एक बड़े झरने पर, जो पर्वतके ऊपरसे गिरता है, बर्फ जमीहुई है, जिसके ऊपर चलना होता है और १¼ मील आगे अलकनन्दा पर ६५ फीट लम्बा काठका पुल है । पुल पार कई झरने, जहांसे अलकनन्दाके बायें किनारे चलना होता है, देख पड़ते हैं, उस पुलसे उत्तर बदरीनाथ तक कोई वृक्ष नहीं है, किन्तु हनूमानचट्टीसे वहाँ तक छोटे वृक्षोंका जङ्गल है । हनूमानचट्टीसे १½ मील आगे अलकनन्दा पर इस किनारेसे उस किनारे तक ज्येष्ठ महीनेमें भी बर्फ जमी थी । दोनों किनारों पर पर्वतके ऊपरसे एक बड़ा झरना अलकनन्दामें गिरता है । चट्टीसे १¾ मील आगे एक बड़े झरने पर बर्फ जमी हुई है; जिसपर होकर यात्री आगे जाते हैं; २¾ मील आगे दोनों तरफ पर्वतके ऊपरसे अलकनन्दामें झरना गिरता है; जिसके ऊपर बर्फ जमी है; ३ मील आगे अलकनन्दा और कांचनगङ्गाका सङ्गम, ३¼ मील आगे अलकनन्दा पर इस किनारेसे उस किनारे तक और दो तीन सौ गज लम्बी बर्फ जमी हुई है, जिसके ऊपर आदमी चल सकते हैं; परन्तु यात्रियोंको उधर जानेका काम नहीं पड़ता; और हनूमानचट्टीसे ३½ मील आगे कुबेरशिला है । हनूमानचट्टीसे कुबेरशिला तक जगह जगह संकीर्णमार्ग और स्थान स्थान पर कड़ी चढ़ाई है ।

कुबेरशिलाके पाससे श्रीबदरीनाथजीका मन्दिर देख पड़ता है । वहाँ गणेशजीका एक छोटा मन्दिर है । बहुतेरे यात्री वहाँ ढोकोंके नीचे अपना जूता रखकर बदरीनाथकी पुरीमें जाते हैं ।

कुबेरशिलासे थोड़े आगे तक ढोकोंका मैदान; उसके आगे बदरीनाथकी पुरी तक सुन्दर ढालू मैदान है । कुबेरशिलासे ½ मील आगे अलकनन्दा पर ४२ फीट लम्बा काठका पुल है, जिसको पार करके अलकनन्दाके दहिने किनारेसे चलना होता है । थोड़े आगे ऋषिगङ्गा पर लकड़ीका छोटा पुल है, जिससे नदीपार होकर अलकनन्दाके पुलसे ¼ मील और कुबेरशिलासे ¾ मील आगे बदरिकाश्रम बस्तीमें पहुँचते हैं । ऋषिगङ्गाके दक्षिण एक बस्ती और उत्तर बदरीनाथकी बस्ती है, जिसके उत्तर भागमें श्रीबदरीनाथका मन्दिर सुशो-भित है । मैं हरिद्वारसे चलने पर २७ वें दिन और केदारनाथसे चलने पर १० वें दिन ज्येष्ठ सुदी एकमके दिन हरिद्वारसे २४९ मील और केदारनाथसे ९९¼ मील पर बदरीनाथकी पुरीमें पहुँच गया ।

घाटचट्टीसे बदरीनाथ तक अलकनन्दाका जल मार्गके पासही है । ढालू भूमिपर जोर-शोरसे अलकनन्दाका पानी गिरता है । किसी किसी स्थान पर बहुतही जोरसे बड़े बड़े ढोकोंके नीचे ऊपर होकर विचित्र तरहसे पानी दौड़ता है ।

बदरीनाथ ।

बदरीनाथमें अलकनन्दा नदी उत्तरसे आई है । अलकनन्दाके दहिने किनारेपर गढ़वाल जिलेमें बदरीनाथकी बस्ती है । नदीके ढालू भूमि पर उत्तरसे दक्षिण तक तीन चारपंक्ति नीचे ऊपर एक मञ्जिले दो मञ्जिले १०० से कुछ अधिक मकान बने हैं; उनमें बहुतेरी धर्मशालायें हैं । कुल मकान पक्के हैं । उनके ढालू छप्परोंपर काठके तख्ते जड़े हुए हैं । किसी किसी मकानके छप्पर पर भोजपत्र बिछाकर ऊपरसे मिट्टी दी गई है । बहुतेरे मकानोंमें यात्री टिकते हैं और बहुतेरे में दूकानें हैं । बहुतेरे पहाड़ी लोग दूकानके लिये मकान बनाये हैं और बहुतेरे लोग श्रीनगर आदि दूरकी बस्तियोंसे आकर किरायेके मकानोंमें दूकान करते हैं । वहाँकी दूकानोंमें कपड़ा, बरतन, मेवे, मसाले, पूरी, मिठाई, हर तरहकी जिन्स, आलू पहाड़ी चीजें; चीनी; मिश्री सब वस्तुयें मिलती हैं । भोटिये लोग भेड़; बकरे आदि जानवरों पर आटा आदि जिन्स वहाँ पहुँचाते हैं । लकड़ी ४ मील दक्षिणसे आकर वहाँ महँगी बिकती हैं । पानी बहुत ठण्ढा रहता है । वहाँ सैकड़ों यात्री प्रति दिन पहुँचते हैं । साधारण लोग तीन या पांच अथवा सात रात्रि वहाँ बास करते हैं; परन्तु गरीब लोग तो जाड़ेके भयसे उसी दिन या एक रात्रि निवास करके वहाँसे चल देते हैं । जिसको ब्राह्मण साधु खिलाना होता है वह बाजारसे पूरी, मिठाई मोल लेकर उनको खिलाता है । वहाँ बड़े बड़े कई झरने, एक कोठरीमें डाकखाना, काश्मीरके महाराज; पटियालेके महाराज, इन्दौरके महाराज और झुंझुनू वाले रायसूर्य्यमल बहादुरका एक एक सदावर्त है । वहाँ इस वर्ष आटा ४ आने सेर, पूरी ५ आने सेर, चावल ५ आने सेर और घी १ रुपयेका तीनपाव बिकता है ।

वहाँ चारों तरफ पर्वतके ऊपर सर्वत्र वर्फ जमी है; जाड़ेके दिनोंमें भूमि और मकानों-पर सर्वत्र बर्फका ढेर लग जाता है । बदरीनाथकी सबसे ऊँची चोटी समुद्रके जलसे २३२०० फीट ऊँची है । पूर्व और पश्चिमवाले पहाड़ोंको लोग जय और विजय कहते हैं । पर्वतोंके बीचमें समुद्रसे १०४०० फीटकी ऊँचाई पर उत्तरसे दक्षिण लम्बा ढालू मैदान है, जिसमें अलकनन्दा बहती है और बदरीनाथकी पुरी है । पुराणोंमें इस स्थानका नाम मन्दराचल और बदरिकाश्रम लिखा है । यहाँ जाड़ा बहुत है; दिनमें भी धुस्सा, दोलाई ओढ़नेका काम रहता है, पर केदारपुरीकी जाड़ासे यहाँ जाड़ा कम है । भारतवर्षके प्रसिद्ध ४ धामोंमेंसे इसके उत्तरीय सीमाके निकट बदरिकाश्रम एक धाम है ।

बदरीनाथजीका मन्दिर–यह मन्दिर बस्तीके उत्तर अलकनन्दाके दहिने पत्थरसे बना हुआ ४५फीट ऊँचा (पूर्वमुखका) है । मन्दिरके शिखरपर दोहरी चकूटी है । निचली चकूटी टीन या ताम्रपत्रसे छाई हुई है । उसमें चारोंओर तीन तीन द्वार हैं । उससे ऊपरकी दूसरीचकूटीमें भी जो पहलीसे छोटी है, चारों तरफ १२ द्वार हैं । उसकी ढालुए छतपर पटियालेके महाराजने ताम्बेका पत्तर जड़वाकर सोनेका मुलम्मा करवा दिया है । उसके सिरपर सुनहला कलश

है। मन्दिरके भीतर द्वारके सामने एक हाथ ऊँची बदरीनारायणकी द्विभुजी श्यामल मूर्त्ति विराजमान है। बहुमूल्य वस्त्र, भूषण और विचित्र मुकुटसे सुशोभित ध्यानमें मग्न वह बैठे हैं। उनके ललाटपर हीरा लगा हुआ है उनके ऊपर सोनेका छत्र लगा है। बदरीनारायणके पास लक्ष्मीजी, नर, नारायण, नारद, गणेशजी, सोनेके कुबेर, गरुड़ और चान्दीके उद्धव हैं। कुबेरका मुखमण्डल मात्र स्वरूप है। कहा जाता है कि बदरीनारायण पहले गुप्त थे सन् ई० के नवीं सदीमें महाराज शंकराचार्य्यने इनकी मूर्त्तिको नदीमें पाया और मन्दिर बनवाकर मूर्त्तिको स्थापित किया। कूर्म्मपुराण-ब्राह्मीसंहिताके २९ वें अध्यायमें है कि नीललोहित शंकर भक्तोंके मंगलके लिये प्रकट होंगे और श्रौत और स्मार्त मतकी प्रतिष्ठाके लिये सकल वेदान्तका सार ब्रह्मज्ञान और निर्दिष्ट धर्म्म, शिष्योंको उपदेश देंगे और शिवपुराणके सातवें खण्डके प्रथम अध्यायमें भी शंकराचार्य्यको शिवका अवतार लिखा है।

मन्दिरके आगेके कमरेकी ढालू छतकी ओरी मन्दिरके दहिने और बायें है। कमरेके पूर्व खास मन्दिरके समान ऊँचा सुनहला कलशवाला गुम्बजदार जगमोहन है। मन्दिर और जगमोहनके बीचवाले कमरेमें बदरीनारायणके सन्दूक आदि असबाब रक्खे हुए हैं और पुजारी और पार्षद बैठते हैं। जगमोहनमें कमरेके द्वारके दोनों ओर पत्थरके जय और विजय खड़े हैं। मन्दिरके परात, घड़े आदि वर्तन और आसा; सोटा चान्दीके हैं। खास मन्दिर और बीचवाले देवढ़के आगेके किवाड़ोंमें रुपहला काम है।

बदरीनाथजीका पट नियत समय पर दिन रातमें तीन चार बार खुलता है। यात्रीलोग किसी समय बीचवाले देवढ़में जाकर और किसी समय जगमोहनमें रहकर दूरहीसे दर्शन करते हैं। साधारण यात्री अनेक भाँतिके मेवे और चनेकी दाल हरिद्वारसे साथमें लाकर पुजारी द्वारा बदरीनाथको चढ़ाते हैं। धनीलोग वस्त्र, भूषण, रुपये, सोने, भूमि आदि बदरीनाथको अर्पण करते हैं और रावलको अपनी रुचिके अनुसार अटका अर्थात् भोगकी सामग्रीका मूल्य देते हैं। यात्रीगण ताम्बे और लोहेके कंकण अर्थात् कड़े, अंगूठी और बदरीनारायण इत्यादि मान्दिरके भीतरकी देवमूर्त्तियोंके पट अर्थात् ताम्बेके पतरोंपर बने हुए बदरीनाथ आदिकी मूर्त्तियोंको पुजारी द्वारा बदरीनाथसे स्पर्श कराकर अपने घर लेजाते हैं। भगवान् बदरीनारायणजीको प्रातःकाल कुछ जलपान और शामको कच्ची रसोंई भोग लगता है। प्रति दिन ३ मनका भोग लगता है, जिसको यात्रीलोग जाति भेदके विचारके विना जगन्नाथपुरीके प्रसादके समान भोजन करते हैं। बदरीनाथ आदिके गलेंकी माला, जो पुष्प और तुलसी पत्रके बनते हैं, और चनेकी कच्चीदाल प्रसाद मिलता है। वहाँके यात्री जगन्नाथपुरीके यात्रीके समान प्रतिदिन प्रसाद नहीं खाते, वे लोग अपने डेरेपर रसोंई बनाते हैं, अथवा बाजारसे पूड़ी लेकर भोजन करते हैं। पूर्व समयकी अपेक्षा अब पहाड़ी मार्ग सुगम होगया है, इससे यात्रियोंकी संख्या बढ़ती जाती है प्रतिवर्ष भारतवर्षके प्रत्येक विभागोंसे लाखों यात्री बदरीनाथमें जाते हैं।

बदरीनाथके मन्दिरके पीछे धर्मशिला नामक एक पत्थरका टुकड़ा; मन्दिरके बायें १ हाथ लम्बा चौड़ा चरणोदक कुण्ड, जिसमें मोरीसे मन्दिरका पानी आता है; जगमोहनसे उत्तरकी ओर एक कोठरीमें घण्टाकर्ण और पूर्व मैदानमें पाषाणका गरुड़ है। मन्दिरके आस पास दूसरे कई देव मूर्त्तियाँ हैं और चारोंओर दीवार और साधारण मकान बने हैं। पूर्वके

फाटककी बाहरी दोनों ओर कोठरियाँ और छोटे छोटे कई दालान और फाटकके भीतर एक ओरकी दीवारके ताखोंमें ब्रह्मा, विष्णु, और शिव और एक ओर सूर्य्यकी मूर्त्ति है ; फाटकमें बड़ा घण्टा लटका है। फाटकके आगे तप्तकुण्ड और अलकनन्दा हैं।

लक्ष्मीजीका मन्दिर—बदरीनाथके जगमोहनसे दक्षिण लक्ष्मीजीका एक गुम्बजदार छोटा मन्दिर पत्थरसे बना हुआ है। लक्ष्मीजीकी एक श्यामवर्ण छोटी मूर्त्ति उत्तम वस्त्रोंसे सुसज्जित की हुई है। उस मन्दिरका पुजारी दूसरा है। मन्दिरके पासही पूर्व भण्डार घरमें प्रति दिन ३$\frac{3}{4}$ मन चावलका भात और इसके अतिरिक्त दाल, भाजी, आदि भोगकी सामग्री बनाकर बदरीनाथको भोग लगाया जाता है। एकही बड़े चूल्हे पर बीचमें १ बड़ा और चारों ओर छोटे छोटे भांड़े चढ़ते हैं।

पंचतीर्थी—बदरिकाश्रममें ऋषिगङ्गा, कूर्मधारा, प्रह्लादधारा, तप्तकुण्ड और नारदकुण्ड इन्हीं पांचोंका नाम पंचतीर्थ है। (१) ऋषिगंगा;—यह बदरीनाथके मन्दिरसे $\frac{3}{4}$ मीलपर और बदरीनाथकी बस्तीसे थोड़ेही दक्षिण अलकनन्दासे मिली है। यात्रीगण सङ्गमपर स्नान या मार्जन और आचमन करते हैं। ऋषिगङ्गाका जल साफ है। (२) कूर्मधारा;—बदरीनाथके मन्दिरसे कुछ दक्षिण एक दीवारमें कूर्मका मुख बना है। उससे ३ हाथ लम्बे और २ हाथ चौड़े हौजमें झरनेका पानी गिरता है। (३) प्रह्लादधारा;—कूर्मधारासे उत्तर एक चबूतरेके नीचे एक नलके द्वारा कूर्मधाराके हौजसे छोटे हौजमें झरनेसे गरम जल गिरता है। उसको लोग प्रह्लादधारा कहते हैं। यात्रीलोग दोनों धाराओंके जलसे मार्जन करते हैं। (४) तप्तकुण्ड;—बदरीनाथके मन्दिरके सामने पूर्व, ६५ सीढियोंके नीचे अलकनन्दाके दहिने किनारेपर खुले हुए मकानमें पन्द्रह सोलह हाथ लम्बा और बारह तेरह हाथ चौड़ा तप्तकुण्ड है कुंडके पश्चिमकी दीवारमें पश्चिमोत्तरके कोनके पास पीतलके २ नल लगे हैं। एक झरनेका गरम जल कुछ बाहर और कुछ उन दोनों नलों द्वारा तप्तकुण्डमें गिरता है। उनमेंसे एक नलको गरुड़धारा और दूसरीको लक्ष्मीधारा कहते हैं कुंडमें ३$\frac{1}{2}$ हाथ ऊँचा गरम जल रहता है। अधिक पानी निकला करता है। दोनों नलोंका गरमपानी देहपर सहा नहीं जाता, कुण्डके जलकी गरमी कम हानेके लिये इनके मुख बन्द रहते हैं नलोंके मुख बन्द करके एक एक ब्राह्मण बैठे रहते हैं और यात्रियोंसे पैसा लेनेपर नलोंका पानी उनकी देह पर छिड़कते हैं। कुंडका पानी देहके सहने योग्य है। यात्रियोंको उस बर्फ मय देशमें तप्तकुंडके गरम पानीमें स्नान करते समय बड़ा सुख होता है। कुंडसे ऊपर छोटे छोटे नलोंसे झरनेका गरम पानी बाहर गिरता है। उसको यात्री लोग हाथ पैर धोनेके लिये लेजाते हैं। तप्तकुण्डके उत्तर गौरीकुण्ड और सूर्य्यकुण्ड नामक बहुत छोटे छोटे २ कुण्ड हैं, जिनमें झरनेका गरम पानी गिरता है। उनसे भी छोटे एक हौजमें विष्णुधारा नामक नलद्वारा झरनाका गरम पानी गिरता है। तप्तकुण्डके पश्चिम एक कोठरीमें अनगढ़ शिवलिंगके समान शंकराचार्य्य हैं और रास्तेके उत्तर एक छोटे मन्दिरमें लिंगस्वरूप आदि केदार स्थित हैं उनके आगे नन्दी है। (५) नारदकुण्ड;—तप्तकुण्डके पासही पूर्वोत्तरके कोनेपर अलकनन्दामें नारदकुण्ड है। वहाँ नारदशिला नामक पत्थरका एक बड़ा ढोंका है, जिसके नीचे अलकनन्दाका पानी संकीर्ण गुफासे गिरता है; उसीको नारदकुण्ड कहते हैं। उस जगह यात्रीगण स्नान या मार्जन करते हैं।

पंचशिला—बद्रिकाश्रममें नारदशिला बाराहशिला, मार्कण्डेयशिला, नृसिंहशिला और गरुड़शिला ये पांचों प्रसिद्ध हैं;-(१) नारदशिलाका वृत्तान्त ऊपर नारदकुण्डके साथ लिखाहै । (२) बाराहशिला नारदशिलासे पूर्व अलकनन्दामें है । (३) मार्कंडेयशिला और (४) नृसिंहशिला ये दोनों एकही जगह नारदशिलासे दक्षिण अलकनन्दामें हैं । (५) गरुड़शिला तप्तकुण्डसे पश्चिम रावलके मकानसे पूर्व एक कोठरीमें है । ये पांचों शिला पत्थरके बड़े बड़े ढोंके हैं ।

ब्रह्मकपाली—बद्रीनाथके मन्दिरसे लगभग ४०० गज उत्तर अलकनन्दाके दहिने किनारेपर ब्रह्मकपाली चट्टान है, जिसपर बैठकर यात्रीगण पितरोंको पिण्डदान करते हैं । बद्रीनाथजीके प्रसाद (भात) की बहुत छोटी छोटी १६ गोलियाँ बनाई जाती हैं, जिनको यात्रीलोग एक एक करके अपने मरे हुए पिता, पितामह, प्रपितामह और मातामह, प्रमातामह और वृद्धप्रमातामह और इनकी स्त्रियोंको देते हैं; और शेष ४ गोलियोंको वे अपने गुरु, मित्र, तथा अपने कुलके मरे हुए लोगोंके नाम लेकर भूमिपर रखते हैं । पीछे वे लोग पिंडोंको अलकनन्दामें डालकर नदीमें पितरोंको जल अंजुलि देते हैं । ब्रह्मकपालीपर काम कराने और वहाँके दक्षिणा लेनेवाले बदरिकाश्रमके पण्डे नहीं हैं, वहाँ दूसरे ब्राह्मण रहते हैं ।

अलकनन्दा नदी—यह नदी उत्तरकी ओर सतपथ अलकापुरके पहाड़से बदरिकाश्रममें आकर वहाँसे दक्षिण और कुछ पश्चिमकी ओर १२१$\frac{3}{4}$ मीलपर देवप्रयागके पास गङ्गामें मिली है । अलकनन्दाके किनारेपर पाण्डुकेश्वर, विष्णुप्रयाग, जोशीमठ, कुम्भारचट्टी, पीपलकोटी-चट्टी, चमोली, नन्दप्रयाग, कर्णप्रयाग, रुद्रप्रयाग, श्रीनगर और देवप्रयाग प्रसिद्ध स्थान है ।

वसुधारा—बद्रीनाथसे १$\frac{3}{4}$ मील उत्तर मानागाँव वस्ती और २$\frac{3}{4}$ मीलपर वसुधारा तीर्थ है । आषाढ़ और श्रावणके महीनोंमें बर्फ कम होनेपर कोई कोई यात्री वसुधारामें स्नान करने जाते हैं । वहाँ पूर्वकालमें अष्टवसुओंने तप किया था । वहाँ ऊँचे पहाड़से वसुधारा नामक बड़ीधारा गिरती है । वसुधारासे आगे बर्फमय पर्वत है, किन्तु बर्फ कम होनेपर अङ्गरेजी राज्य और तिब्बतके सीमाके आस पासके रहनेवाले और मानसरोवरकी तरफके लोग उस मार्गसे इधर आते जाते हैं ।

बदरीनाथके मन्दिरका प्रबन्ध—बदरीनाथके मन्दिरका पट वृष (जेष्ठकी संक्रान्तिसे दो चार दिन पहले शुभ सायतमें खुलता है और वृश्चिक (अगहन) की संक्रान्तिके कई दिन पीछे अच्छी सायतमें बन्द होता है इस वर्ष मेष मासकी २९ तिथि मिती ज्येष्ठ वदी १३ रविवारको पट खुला था । पट बन्द होजानेपर छः महीनेके लगभग बदरीनाथकी पूजा बदरीनाथके रावल जोशीमठमें करते हैं और जाड़के भयसे सब लोग पाण्डुकेश्वरमें और उससे नीचे चले जाते हैं । पाण्डुकेश्वरसे उत्तर कोई नहीं रहता ।

अङ्गरेजीसरकार और टिहरीके राजाकी अनुमतिसे सुयोग्य दक्षिणी नम्बोरी ब्राह्मण बदरीनाथका पुजारी बनाया जाता है, जिसको रावल कहते हैं । रावल विवाह नहीं करता । पाण्डुकेश्वर, जोशीमठ, टिहरी, आदि पहाड़ी वस्तियोंका कोई कोई ब्राह्मण या क्षत्री अपनी पुत्रीको बदरीनाथको पूजा चढ़ाता है । वहाँके परम्परा नियमके अनुसार वही लड़की रावलकी स्त्री होती है । रावल अपनी स्त्रीका बनाया हुआ अन्न भोजन नहीं करता । ब्राह्मणीसे जो सन्तान होता है ब्राह्मण और क्षत्रियाकी सन्तान क्षत्री कही जाती है । रावलके मरनेपर

रावलके पुत्र रावल नहीं होते किन्तु नया रावल दक्षिणसे मँगाया जाता है। पद्मपुराण—स्वर्गखण्डके २२ वें अध्यायमें लिखा है कि जो कोई स्त्री मोल लेकर किसी देवताको चढ़ाता है वह कल्प भर स्वर्गमें बसता है और फिर पृथ्वीपर राजा या धनी होता है। महाभारत—अनुशासन पर्वके ४७ वें अध्यायमें लिखा है कि ब्राह्मणका धन १० हिस्सोंमें बटेगा। ब्राह्मणीका पुत्र उस पितृ धनमेंसे ४ भाग, क्षत्रिया स्त्रीके गर्भसे उत्पन्न हुआ पुत्र ३ हिस्से वैश्या स्त्रीसे उत्पन्न हुआ पुत्र २ भाग और शूद्रासे उत्पन्न ब्राह्मणका पुत्र एक भाग पावेगा। वर्तमान रावल पुरुषोत्तम नम्बोरी अति वृद्ध हैं वह कई वर्षोंसे मन्दिरके प्रबन्धसे इस्तीफा देकर १०० रुपये मासिक लेकर पूजा करते हैं। बदरीनाथकी आमदनी, जो जागीर, पूजा और अटकेसे आती है। सालाना तीस चालीस हजार है। इसमेंसे लगभग ४ हजार रुपया प्रतिवर्ष गढ़वाल और कमाऊं जिलोंके बहुतेरे गांवोंसे मालगुजारी आती है। २ वर्षसे अङ्गरेजी सरकारकी तरफसे हयातसिंह, जो तीसरे दरजेका मजिष्ट्रेट था, ७५ रुपये माहवारी तनख्वाह पर मन्दिरके प्रबन्धके लिये मनेजर हुआ है। वह यात्रियोंके साथ पण्डे लोगोंको मन्दिरके भीतर जाने नहीं देता। पण्डोंने मिलकर सरकारमें अर्जी दी है और मोकदमा चलरहा है।

बदरीनाथके सब पण्डे देवप्रयागके रहने वाले हैं। ये लोग सुफल करनेके समय अपने यात्रीके दोनों हाथोंको फूलकी मालासे बांध देते हैं। हाथ बांधे हुए यात्री घण्टों तक गिड़-गिड़ाते रहते हैं। पण्डे लोग जहां तक होसक्ता है दक्षिणा कबूल करवाकर तब अपने यात्रीको फूल मालाके बन्धनसे मुक्त करते हैं। केदारनाथके पण्डेभी इन्हींके रास्तेसे चलते हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—पाराशरस्मृति—(पहला अध्याय) ऋषिगण धर्मके तत्त्वको जाननेके लिये व्यासजीको आगे करके बदरिकाश्रममें गये थे। वह नानाप्रकारके पुष्प लता-ओंसे परिपूर्ण, फलफूलोंसे सुशोभित, नदी और झरनोंसे युक्त और देवताओंके मन्दिर तथा पवित्र तीर्थोंसे प्रकाशित था। व्यासदेवजीने वहाँ ऋषियोंको सभामें बैठे हुए महर्षि पराशरकी पूजा करके उनसे पूछा कि हे पितः ! मैंने मनु, वशिष्ठ, कश्यप, गर्ग, गौतम उशनस, अत्रि; विष्णु, संवर्त, दक्ष, अंगिरा, शातातप, हारीत, याज्ञवल्य, आपस्तम्ब, शंख, लिखित, कात्यायन; प्राचेतस इन स्मृतियोंके कहे हुए धर्मोंको जाना है। इस मन्वंतरके कलियुगमें कृतयुग; त्रेता आदिका धर्म नष्ट हो गया है। आप चारों वर्णोंके करने योग्य उनका साधारण आचार मुझसे कहिये। ऐसा सुन पाराशरजीनें धर्मका निर्णय कहा।

महाभारत—(वन पर्व्व–१२ वाँ अध्याय) अर्जुन बोले कि हे कृष्ण (पूर्व जन्ममें) तुम१००वर्ष तक वायु भक्षण करके ऊर्ध्व बाहु होकर,विशाल बदरिकाश्रममें एक चरणसे खड़े रहे थे। कृष्ण बोले हम तुम हैं और तुम हमारे रूप हो अर्थात् तुम नर हो औह हम नारायण हैं हम दोनों नरनारायण ऋषि समय पाकर जगत्में प्राप्त हुए हैं। (४७ वाँ अध्याय) इन्द्रने लोमशऋषिसे कहा कि जो पुराने ऋषियोंमें उत्तम थे, वही दोनों नर नारायण ऋषि किसी कार्य्यके वशसे पृथ्वीमें कृष्ण और अर्जुनके अवतार लेकर पवित्र लक्ष्मीको धारण कर रहे हैं। जिस पवित्र आश्रमको देवता और महात्मा मुनिभी नहीं देख सकते हैं, वही जगत् विदित बदरिकाश्रम नरनारायणका स्थान है। वहाँसे सिद्ध चरणोंसे सेवित गङ्गा चली है।

(८९ वा अध्याय) बदरिकाश्रमके बसुधार तीर्थमें जानेसेही अश्वमेधका फल मिलता है। वहां बसुओंका तड़ाग है, जिसमें स्नान करनेसे मनुष्य बसुओंका प्यारा होता है। (९० वाँ अध्याय) विष्णुकी पवित्र शिला, बदरिकाश्रमके पास है। उसी देशमें तीन लोकोंमें विख्यात और पवित्र आश्रम है, जहां गङ्गाका उष्ण (गर्म) जल बहता है। बदरिकाश्रमके पास सुवर्ण सिकता नामक तीर्थ है, जहां जाकर ऋषि और देवतागण परमेश्वर नारायणको प्रणाम करते हैं।

(१४० वाँ अध्याय) (राजा युधिष्ठिर; भीम, नकुल, सहदेव, द्रौपदी, और लोमश ऋषिके साथ अर्जुनको खोजनेके लिये हिमालय पर गये।) वे कुलिन्द देशके राजा सुबाहु की रक्षामें सारथी, नगर निवासी; रसोइयाँ और दासियोंको छोड़कर आगे चले। (१४१ वाँ अध्याय) युधिष्ठिर बोले अब हम लोग इस उत्तम पर्वतको देखेंगे, जहां विशाल बदरिकाश्रम तथा नरनारायणका स्थान है। (१४२ वाँ अध्याय) लोमश बोले यह महानदी अलकनन्दा बदरिकाश्रमसे आती है इसीके जलको शिवने अपने शिरपर धारण किया है। यही नदी गङ्गाद्वारमें गई है। (१४३ वाँ अध्याय) जिस समय पाण्डव लोग गन्धमादन पर्वतपर पहुँचे उस समय महावर्षा और भारी आँधी आई। वे लोग धीरे २ गन्धमादनकी ओर फिर चले। (१४४ वाँ अध्याय) जब पाण्डव लोग १ कोस चले तब द्रौपदी थक कर कांपने लगी और पृथ्वीमें गिरगई। (१४५ वाँ अध्याय) पाण्डवोंकी आज्ञासे भीमके पुत्र घटोत्कच राक्षसने द्रौपदी और पाण्डवोंको अपने कन्धों पर बैठाया, दूसरे राक्षसोंने ब्राह्मणोंको अपने ऊपर चढ़ालिया और लोमश ऋषि योग मार्गसे आपही आकाशमें चलने लगे। अनेक वन और बागोंको देखते हुए वे लोग बदरीनारायणकी ओर चले। दूर जाने पर उन्होंने कैलास पर्वतके नीचे नर और नारायणके आश्रमको देखा, जहां स्वाभाविक समान भूमि; सुन्दरस्थान और हिमसे शीतल कंटक रहित पृथ्वी थी। वहाँ वे सब राक्षसोंके कन्धोंसे धीरे धीरे उतरे। अनन्तर पाण्डवोंने गङ्गाके तटपर नर नारायणके रमणीय आश्रमको देखा और वे ब्राह्मणोंके साथ उसी स्थानपर रहने लगे। अत्यन्त दुःखसे आने योग्य देवऋषियोंसे सेवित उसी देशमें भागीरथीके पवित्र जलमें पाण्डव लोग पितरोंका तर्पण करने लगे। (१५५ वाँ अध्याय) पाण्डव लोग कुवेरकी सम्मतिसे अर्जुनका मार्ग देखते हुए थोड़े दिन गन्धमादन पर्वतपर रहे। (१५७ वाँ अध्याय) आगे वे उत्तर दिशाको चले और चौदहवें दिन वृषपर्वाके आश्रममें पहुँचे। उसके पश्चात् उन्होंने माल्यवान् पर्वतपर पहुँच कर आगे गन्धमादनको देखा। (१६४ वाँ अध्याय) अर्जुन ५ वर्ष इन्द्रलोकमें निवास करनेके पश्चात् गन्धमादन पर आकर युधिष्ठिर आदि भाइयोंसे मिले। (१७६ वाँ अध्याय) वे लोग कुवेरके स्थानपर ४ वर्ष रहे। (१७७ वाँ अध्याय) पाण्डव लोग लौटकर फिर बदरिकाश्रममें ठहरे। वहाँ उन्होंने कुवेरकी पोखरको देखा। अनन्तर वे लोग सुखसे चलते २ एक महीनेमें किरातराज सुबाहुके राज्यमें पहुँच कर अपने नौकर और दासियोंसे मिले और वहाँसे घटोत्कचको विदा करके, जो उनको अपने कन्धेपर ले चलता था, रथोंपर चढ़कर आगे चले और एक वनमें १ वर्ष निवास करके काम्यक वनमें आये।

(१८७ वाँ अध्याय) सूर्य्यके पुत्र वैवस्वत मनुने बदरिकाश्रममें जाकर ऊर्द्ध बाहु होकर १० सहस्र वर्षतक घोर तप किया। एक दिन भीगे वस्त्र मनुके पास जाकर एक मत्स्य बोला कि हे भगवन्! मैं बहुत छोटा मत्स्य हूँ, इससे मुझे बड़े मत्स्योंसे डर लगता है। तुम हमारी रक्षा करो। मैं भी इस उपकारका बदला तुमको दूँगा। तब मनुने निर्मल पानीसे भरे हुए पात्रमें उसको छोड़ दिया। वह मत्स्य भोजनादिक पाकर उसी पात्रमें बढ़ने लगा। कुछ कालमें वह मत्स्य बहुत बड़ा होगया। तब वह बोला कि हे भगवन्! अब आप मेरे लिये कोई दूसरा स्थान बताइये। मनुने उस मत्स्यको एक बड़ी भारी बावड़ीमें डाल दिया। वह बावड़ी ८ कोश लम्बी चौड़ी थी, परन्तु कुछ दिनोंके पश्चात् वह मत्स्य इतना बढ़ा कि उसमें चल फिर नहीं सकता था। तब मनुने उसको गङ्गामें डाल दिया। वह गंगामें भी बढ़कर चलाफिर नहीं सकता था। तब मनुने उसको गङ्गासे उठाकर समुद्रमें छोड़ दिया। उस समय वह मत्स्य हँसकर मनुसे बोला कि हे भगवन्! थोड़ेही दिनोंमें जगत्के सब चर और अचरका प्रलय होगा, इसलिये आप एक नाव बनाइये और उसमें दृढ़ रस्सी बाँधिये। जब प्रलयका समय आवेगा, तब आप सप्त ऋषियोंके सहित उसी नावमें चढ़ियेगा और उसी नावमें सब जगत्के वस्तुओंकी बीजोंको रक्षा पूर्वक क्रमसे रखलीजियेगा। आप उस नावमें बैठकर हमारा मार्ग देखते रहियेगा। अनन्तर वे दोनों इच्छानुसार चले गये। कुछ समयके पश्चात् प्रलयके समय मनुने मत्स्यका ध्यान किया। तब वह मत्स्य एक सींग धारण करके मनुके पास पहुँचा। मनुने नावकी रस्सीको मत्स्यके शिरमें बाँध दिया। उस समय आकाश और सब दिशा जल मय देखाती थीं। जगत्के डूबजानेपर केवल सप्तऋषि, मनु और वह मछली देखाई देती थी। वह मत्स्य नावको खींचते खींचते हिमालयके सबसे ऊँचे शिखरपर पहुँचा और उसके कहनेके अनुसार ऋषियोंने नावको हिमाचलके शिखरसे बाँध दिया अनन्तर मत्स्यने ऋषियोंसे कहा कि हमाराही नाम प्रजापति और ब्रह्मा है। हमने मत्स्य रूप धारण करके आप लोगोंको इस समयसे छुड़ाया है। मत्स्यके अन्तर्द्धान होजानेपर वैवस्वत मनुने सृष्टि बनानेकी इच्छा की। (यह कथा मत्स्यपुराणके प्रथम अध्यायमें लिखी है)।

(शान्ति पर्व ३३४ वाँ अध्याय) पहले समय स्वायम्भू मन्वन्तरके सत्ययुगमें विश्वात्मा नारायण ४ मूर्त्ति धारण करके धर्मके पुत्र हुए—नर, नारायण, हरि तथा कृष्ण (वसुदेवका पुत्र नहीं)। उनमेंसे नर और नारायणने बदरिकाश्रमको अवलम्बन करके माया मय शरीरसे निवास करते हुए तपस्या की थी। (३४४ वाँ अध्याय) नारदने नर नारायणके आश्रममें देव परिणामसे सहस्र वर्ष तक वास करके अनेक प्रकारसे नारायण मन्त्रको विधिपूर्वक जप किया और वह नर नारायणकी सब प्रकारसे पूजा करते हुए उनके आश्रममें निवास करने लगे। (३४६ वाँ अध्याय) उन्होंने वहाँ निवास करके भगवान्का आख्यान सुनकर निज स्थानमें गमन किया। नरनारायण उस आश्रममें उत्तम तपस्या करने लगे।

वामनपुराण—(पूर्वार्द्ध ६ ठा अध्याय) धर्मकी अहिंसा भार्य्यामें हरि; कृष्ण (वासुदेव नहीं), नर और नारायण ये ४ पुत्र हुए।

वाराहपुराण—(४८ वाँ अध्याय) काशीका विशाल नामक राजा शत्रुओंसे पराजित हो बदरिकाश्रममें जाकर गन्धमादन पर्वतकी कन्दरामें तप करने लगा। नर, नारायण प्रसन्न होकर राजासे बोले कि हे विशाल ! आजसे इस स्थानका नाम विशाला करके लोकमें प्रसिद्ध होगा।

उत्तरार्द्ध-१३५ वाँ अध्याय) हिमालय पर्वतके बदरी नामक स्थानमें स्नान व्रत और भगवान्‌के दर्शन करनेसे प्राणीको फिर माताके गर्भमें निवास नहीं होता उसी बदरीमें अग्निसत्यपद नाम तीर्थ है, जिसमें पर्वतके मध्यसे उष्णोदककी धारा मूसलकी बराबर गिरती है। बदरीमें पंचशिख नामक तीर्थ है, जिसमें पर्वतके शिखरसे पांच धारा गिरती हैं। जो प्राणी वहाँ निरशन व्रत करके प्राणत्याग करते हैं, वे विष्णुलोकमें वसते हैं।

देवीभागवत-(८ वाँ स्कन्द पहला अध्याय) नारदजी पृथ्वी पर्य्यटन करते हुए नारायणाश्रममें पहुँचे और वहाँ टिक कर नारायणसे प्रश्न करने लगे।

ब्रह्मवैवर्तपुराण-(ब्रह्मखण्ड-२९ वाँ अध्याय) नारदने बदरीवनमें नारायणाश्रममें जाकर नारायण ऋषिसे प्रश्न किया। (३० वाँ अध्याय) नारायणने कथा आरम्भ की।

आदिब्रह्मपुराण-(१८ वाँ अध्याय) अलकनन्दा नामक गङ्गा दक्षिणकी ओर भारत-खण्डमें जाकर समुद्रमें मिलती है।

(९८ वाँ अध्याय) कृष्णजी बोले कि हे उद्धव ! तू गन्धमादन पर्वतपर नर नारायणके स्थान पवित्र बदरिकाश्रममें तपकी सिद्धिके लिये चला जा। (श्रीमद्भागवत-११ वें स्कन्ध, २९ वें अध्याय; विष्णुपुराण-५ वें अंश, ३७ वें अध्याय, और शिवपुराण-७ वें खण्ड १० वें अध्यायमेंभी कृष्णकी आज्ञासे उद्धवके बदरिकाश्रममें जानेकी कथा लिखी हुई है)।

श्रीमद्भागवत—(पहला स्कन्द तीसरा अध्याय) धर्मकी स्त्रीके नर और नारायण विख्यात ऋषि हुए। उन्होंने संसारके जीवोंको दिखानेके लिये बदरी केदारमें जाकर तप किया। (४ था स्कन्द, पहला अध्याय) नर और नारायणने भूमिके भार उतारनेके लिये अवतार धारण किया। नरके अंशसे अर्जुन हुए और नारायणने कृष्ण रूप धारण किया।

(१२ वाँ अध्याय) राजा ध्रुव ३६००० वर्ष राज्य करनेके उपरान्त अपने पुत्रको राजतिलक देकर बदरिकाश्रमको चले गये और वहाँ बहुत कालतक भगवान्‌के स्वरूपका ध्यान करके विमानपर चढ़ ध्रुवलोकमें गये।

(५ वाँ स्कन्द-१७ वाँ अध्याय) विष्णुके चरणसे उत्पन्न हुई गङ्गा ब्रह्माके सदनमें गिरती है और वहाँ पर ४ धाराओंमें विभाग होकर चारोंओरको बहती हुई समुद्रमें मिली है;-सीता, अलकनन्दा चक्षु और भद्रा। इनमें अलकनन्दा नामक धारा पर्वतोंको तोड़ती फोड़ती हेमकूटमें होती हुई भारतवर्षमें व्याप्त होकर दक्षिणकी ओर लवण समुद्रमें जा मिली है।

गरुड़पुराण-(पूर्वार्द्ध ८१ वाँ अध्याय) नरनारायणका स्थान बदरिकाश्रम भुक्तिमुक्ति देनेवाला है।

पद्मपुराण-(सृष्टिखण्ड, ११ वाँ अध्याय) बदरिकाश्रममें गङ्गाजीके तटपर श्राद्ध करनेसे गयामें पिण्डदान करनेके समान पितरोंकी मुक्ति हो जाती है। (उत्तरखण्ड, दूसरा

अध्याय) सवा लाख पर्वतोंके बीचमें बदरिकाश्रम स्थित है। वहाँ श्वेतवर्ण नरजी और श्यामवर्ण नारायणजी रहते हैं। सूर्यके उत्तरायण रहनेके समय वहाँ बड़ी पूजा होती है और ६ मास सूर्यके दक्षिणायन रहने पर बर्फ बहुत पड़नेके कारण वहाँ पूजा नहीं होती। मनुष्य बदरिकाश्रमके अलकनन्दा गङ्गामें स्नान करनेसे बड़े बड़े पापोंसे विमुक्त हो जाते हैं।

कूर्मपुराण—(उपरिभाग ३६ वाँ अध्याय) हिमवान् पर्वत नाना धातुओंसे अलंकृत सिद्ध चारण और गन्धर्वगणोंसे सेवित ८० योजन लम्बा है। गङ्गा नदी और हिमवान् पर्वत सर्वत्र पवित्र हैं। हिमालय पर नारायणका अति प्रिय स्थान बदरिकाश्रम है। वहाँ जानेसे प्राणीका सम्पूर्ण पाप विनाश हो जाता है और वहाँ श्राद्धादि कर्म करनेसे अक्षय फल प्राप्त होता है।

स्कन्दपुराण—(केदारखण्ड, प्रथम भाग, ५७ वाँ अध्याय) कण्वाश्रमसे नन्दगिरि (अर्थात् नन्दप्रयाग) तक पुण्यक्षेत्र बदरिकाश्रम है, जिसके सेवन करनेसे भुक्ति और मुक्ति दोनों मिलती हैं। महर्षि कण्वके आश्रममें नारायणको नमस्कार करनेसे दुरात्मा मनुष्य भी दुःख रहित पदको प्राप्त करता है और नन्दप्रयागमें स्नान करके नारायणकी पूजा करनेसे मनुष्यको सब कुछ प्राप्त होता है। कलियुगमें जो पुरुष बदरिकाश्रममें जाते हैं वे धन्य हैं। वहाँ ब्रह्मादिक देवता निवास करते हैं। वह क्षेत्र अनेक तीर्थोंसे सुशोभित है। बदरिकाश्रममें निवास करनेवाला विष्णु रूप होजाता है। वह क्षेत्र ४ प्रकारका है;—स्थूल, सूक्ष्म, अति सूक्ष्म और शुद्ध। वह १२ योजन लम्बा और ३ योजन चौड़ा पापी लोगोंको अगम है। गन्धमादन पर्वतपर बदरिकाश्रममें कुबेर आदिक शिलाओं और नाना तीर्थोंसे सुशोभित नरनारायणका पवित्र आश्रम है। उसी स्थानमें अग्नि तीर्थसे उत्पन्न तप्त जलकी धारा देखनेमें आती है। जो मनुष्य अज्ञान वश बदरीनाथजीका नैवेद्य परित्याग करता है, वह चांडालसे भी अधम है। यदि चाण्डाल भी नैवेद्यको छू देवे तौ भी उसको खानेमें कोई दोष नहीं है। जो मनुष्य बदरिकाश्रममें पितरोंको कण मात्र भी जल देता है, जानना चाहिये कि वह पितरोंकी मुक्ति होनेका सम्पूर्ण कार्य कर चुका। काशी, कांची, मथुरा, गया, प्रयाग, अयोध्या, अवन्ती, कुरुक्षेत्र इत्यादि तीर्थ जिन पापोंको नहीं छुड़ा सकते और जिस गतिको नहीं दे सकते उसको बदरिकाश्रम देता है। वहाँ पापोंका विनाश करनेवाली साक्षात् गङ्गाजी विद्यमान हैं और विष्णु, ब्रह्मा, शिवजी आदि देवता निवास करते हैं। जब तक शरीर शिथिल नहीं हो तबही तक बदरिकाश्रममें जाना चाहिये।

(५८ वाँ अध्याय) गङ्गाके दक्षिण भागमें नर नामक पर्वतपर हजारों तीर्थ और सैकड़ों लिङ्ग विद्यमान हैं, जिनमेंसे कितने अगम्य और कितने गम्य हैं। उस स्थानपर तप्त और शीतल जलके बहुतेरे पवित्र कुण्ड देखनेमें आते हैं। उत्तरके पर्वतपर दिव्यमहर्षि, सिद्ध, नाग, इत्यादि रहते हैं। वैखानस मुनिके स्थानके पास पर्वतपर योगीश्वर नामक भैरव हैं; उनको नमस्कार करके सूक्ष्म क्षेत्रमें जाना चाहिये। कुबेरशिलाको नमस्कार करनेसे मनुष्य दरिद्री नहीं होता। नरनारायण पर्वतको मुनि लोग बन्दना करते हैं। नरनारायणके आश्रममें शरीर छोड़नेसे प्राणी जन्म मरणसे रहित होजाता है। ऋषिगङ्गामें स्नान करके उसके जल पीनेसे मनुष्य परम धामको जाता है। जो मनुष्य कूर्मधाराके पवित्र जलमें आचमन और पंचाशिलाओंको नमस्कार और परिक्रमा करके पूजन करता है वह इस लोकमें धन्य है।

बदरिकाश्रममें केदारेश्वरजीका पूजन करता है वह शिवलोकमें पूजित होता है। बदरीनाथ जीकी परिक्रमा करनेसे सम्पूर्ण पृथ्वीदान करनेका फल मिलता है। उस क्षेत्रमें विष्णुलोक की देनेवाली नारदशिला है; वहाँ जो कर्म किया जाता है उसका कोटिगुण फल मिलता है। जो मनुष्य नारदकुण्डमें स्नान करता है, वह जन्म मरणसे रहित होजाता है। सब कामनाओंकी देनेवाली वाराहीशिला और गङ्गाजीमें वाराहकुण्ड है, जिसमें स्नान करनेसे अनन्त फल लाभ होता है। सब पापोंके नाश करनेवाली नारसिंही शिला तथा भोग और मोक्षको देनेवाला नृसिंहकुण्ड है। लोकमें दुर्लभ मार्कण्डेयशिला है, जिसका स्पर्श करनेसे मनुष्य सब पापसे छूट जाता है। जिस स्थानपर गरुड़जीने तप करके हरिके वाहन बने, उस स्थानपर गरुड़शिला है, जिसके दर्शन, स्पर्श और पूजन करनेसे मनुष्य नारायणका रूप होजाता है। इन ५ शिलाओंके मध्यमें श्रीबदरीनाथजीका आसन और वह्नितीर्थ है। उसी स्थानपर अग्निने हरिकी आराधना करके सर्व वस्तुओंको जलानेकी शक्ति प्राप्त की थी। पितर लोग ब्रह्मकपालमें अपने वंशजोंकी चाह करते हैं, इसलिये वहाँ पिण्डदान करना उचित है। ज्ञानसे वा अज्ञानसे भक्तिसे अथवा विना भक्तिसे जो मनुष्य उस स्थानपर पिण्डदान और जलमें तर्पण करता है दुर्गतिमें पड़े हुए उसके पापी पितर भी तरजाते हैं। ब्रह्मकपालपर पितर कर्म करनेवालोंको गयामें जानेसे और अन्य तीर्थोंमें तर्पण करनेसे क्या प्रयोजन है। उस स्थानमें जो जो कर्म किये जाते हैं, उनका कोटिगुणा फल मिलता है, इसलिये वहाँ पिण्डदान और तर्पण अवश्य करना चाहिये। वहाँ पिण्डदान करनेसे मातृवंश, पितृवंश, शाले, सम्बन्धी, मित्र और दूसरे प्रियजन, वृक्ष, पशु, पक्षी आदि किसी योनिमें प्राप्त होंय विष्णुके परम पदको पाते हैं। गङ्गाजीमें शिलारूपसे नृसिंहजी निवास करते हैं। वहाँ भुक्ति मुक्तिको देनेवाला नारायण कुण्ड है। बदरीनाथके धामसे पश्चिम आधे कोश पर उर्वशी कुण्ड है; उसी स्थानपर राजा पुरूरवाने ५ वर्ष उर्वशीके साथ रमण करके पुत्रोंको उत्पन्न किया था। बदरिकाश्रममें साढ़े तीन किरोड़ तीर्थ हैं।

बदरीनाथसे २ कोसपर स्वर्णधारा तीर्थ है, जिसमें स्नान करके ३ रात्रि उपवास करनेसे कुबेरजीका दर्शन होता है। वैखानसतीर्थमें एक वर्ष स्नान और फलाहार करनेसे मनुष्य मृत्युको जीत लेता है। गंगाके शेषतीर्थमें स्नान करनेवाला अच्छे भोगोंको भोग कर परलोकमें परमगति पाता है। बदरीनाथके वाम भागमें इन्द्रधारा तीर्थ है। मनुष्य वहाँ स्नान करनेसे इन्द्रके समान होजाता है। सर्व वेदमय वेदधारा तीर्थ है, जिसमें स्नान करनेसे ब्रह्महत्यादि पाप छूट जाता है। सब पापोंके नाश करनेवाला वसुधारा तीर्थ है, जिसके जलका बिन्दु पापियोंके मस्तक पर नहीं पड़ता। स्नान करके धर्मशिला पर बैठकर अष्टाक्षर मन्त्रसे ८ लाख जप करनेसे विष्णु सारूप मिलता है। वहाँ सोम तीर्थ है, जहां चन्द्रमाने तप करके सुन्दर रूप पाया। सत्यपद तीर्थमें स्नान करनेसे विष्णु सायुज्य और चक्रतीर्थमें स्नान करनेस विष्णुलोक मिलता है। रुद्रतीर्थमें स्नान करनेसे रुद्रलोक और ब्रह्मतीर्थमें स्नान करनेसे ब्रह्मलोकमें निवास होता है।

(५९ वाँ अध्याय) महर्षि नारद विष्णुमनाके पुत्र विष्णुरातिनामसे प्रसिद्ध हुए थे। उनको गान विद्याका व्यसन हुआ। वह गवैयोंके साथ रहने लगा; तब उसके पिताने मूर्ख समझ कर उसको घरसे निकाल दिया। विष्णुरति सबका संग छोड़कर कैलास पर्वत पर

बदरीवनमें जाकर नारायणके समीप गान करने लगा। वह गङ्गाजीमें स्नान करके नित्य विष्णुके समीप उनका गुण गान करता था। महाविष्णु प्रकट होकर बोले कि हे विष्णुरति! तुम इच्छित वर मांगो। विष्णुरति बोला कि तुम्हारेमें मेरी भक्ति होवे; गान विद्यामें मैं कुशल होऊं और संसार मुझको स्पर्श न करे। भगवान् बोले कि सब होगा; किन्तु शिवजीकी आराधना करनेपर तुम रागविद्यामें कुशल होगे। पूर्व कालमें तुम्हारा नाम नारद था, दक्षके शापसे तुम संसारमें प्राप्त हुए हो; तुमने नार अर्थात् गंगाका जल मुझपर चढ़ाया इससे अब भी तुम नारद नामसे प्रसिद्ध होगे; यह नारदकुण्ड मुक्तिका देनेवाला होगा। ऐसा कह विष्णु अन्तर्द्धान होगये। विष्णुरतिने नारदत्व पाया और पीछे वह शिवजीकी आराधना करके गान विद्यामें परम कुशल होगया।

(६२ वाँ अध्याय) गंगाद्वारसे ३० योजन पूर्व भोग और मोक्षका देनेवाला महाक्षेत्र (अर्थात् बदरिकाश्रम) है। वहाँ पापीको छुड़ानेवाले अनन्ततीर्थ और तीनों लोकोंको पवित्र करनेवाली गंगा हैं। मनुष्य एक बार बदरीनाथके दर्शन करनेसे संसारमें फिर नहीं जन्म लेता। बदरीनाथका नैवेद्य भोजन करनेसे अभक्ष भक्षणका दोष छूट जाता है।

प्रथम केदारनाथकी पूजा करके तब बदरिकाश्रममें जाकर बदरीनाथका दर्शन करना चाहिये। बिना केदारनाथके दर्शन किये बदरीनाथकी यात्रा निष्फल होजाती है। ऋषि-गंगासे उत्तर सूक्ष्म क्षेत्र है। उसमें जाकर एक रात्रि क्षेत्रोपवास करना चाहिये। प्रातःकाल गंगाजी और नारदकुण्ड आदि तीर्थों तथा वह्नितीर्थमें स्नान करके केदारभवनमें जाना उचित है। वहाँ यथाशक्ति नैवेद्य चढ़ावे और दर्शन; प्रदक्षिणा तथा दान करे। उस क्षेत्रमें जो कर्म किया जाता है उसका फल कोटिगुणा होता है। बदरिकाश्रममें जानेवाले मनुष्योंका संसारमें फिर जन्म नहीं होता; देवता लोग भी उनकी पूजा करते हैं।

(दूसरा भाग, पहला अध्याय) नन्द पर्वतसे काष्ठगिरि तक केदारक्षेत्र है। रत्नस्त-म्भसे माया क्षेत्र तक हिमालयके पासमें पुण्यदायक स्थान है। जो मनुष्य इसमें वास करते हैं, मुक्ति उनके हाथमें रहती है।

पांचवां अध्याय।

(गढवाल जिलेमें) नन्दप्रयाग, कर्णप्रयाग, मीलचौरी, (कमाऊँ जिलेमें) रानीखेत, अलमोढ़ा, नैनीताल, भीमताल, (तराईजिलेमें) काठगोदाम, काशीपुर और हलद्वानी।

नन्दप्रयाग।

उलटे फिरनेका मार्ग—मैं ३ रात्रि बदरिकाश्रममें रहकर ज्येष्ठ शुक्ल ४ के प्रातःकाल वहाँसे पीछेकी ओर फिरा और १६½ मील विष्णुप्रयाग तक पूर्व कथित मार्गसे आया। विष्णु प्रयागसे चलनेपर ¾ मील आगे जोशीमठकी सड़क बायें तरफ छूट गई। मैं नीचेकी सीधी सड़कसे चला। विष्णु प्रयागसे १¾ मील आगे ४ छप्परकी २ दूकानें और कई झरने और

जगह जगह खेतोंका मैदान है। चट्टीके पहले जगह जगहपर ४ झरने मिलते हैं और $\frac{1}{8}$ मील आगे कई झरने हैं। विष्णुप्रयागसे १$\frac{3}{4}$ मीलपर जोशी मठवाली सड़क मिल जाती है विष्णु-प्रयागसे वहाँ तक कड़ी चढ़ाई है। बदरीनाथको जिस रास्तेसे लोग जाते हैं, चमोली तक ४४$\frac{1}{8}$ मील (जोशीमठ छोड़कर) उसी सड़कसे लौट आते हैं। केदारनाथ होकर बदरिकाश्रम जानेवाले यात्रियोंको लौटनेपर चमोलीसे अलकनन्दाके बायेंके नये मार्गसे चलना होता है।

मैं चमोलीसे बरहे अर्थात् रस्सेका झूला लांघकर अलकनन्दा नदीके बायें किनारे चलने लगा। कर्णप्रयागकी तरफके नीचेकी सड़क बह गई थी, अब ऊपर नई सड़क बनी है। चमोलीसे इधर जाड़ा बहुत घट जाता है, मक्खी अधिक हैं, जगह जगह आम और केलाके वृक्ष और अलकनन्दाके किनारे बालू और मैदान देख पड़ते हैं। चमोलीसे $\frac{1}{2}$ मील आगे छोटा झरना और १$\frac{3}{8}$ मील आगे पुलके नीचे एक साधारण झरना है। वहाँसे अलक-नन्दाके उसपार एक सड़क देख पड़ती है, जो पश्चिमकी ओर अगस्त्यचट्टी तक गई है। बकरी भेड़वाले व्यापारी जिन्स लेकर उस रास्तेसे अगस्त्यचट्टी होकर आगे जाते हैं। चमो-लीसे २ मील आगे कुबेलचट्टी है।

कुबेलचट्टी—यहाँ लम्बे चौड़े २ पक्के और १ छप्परवाला मकान, कुबेल नामक नदी और चट्टीके आस पास ढालू मैदान और कई पनचक्की हैं। कुबेलचट्टीसे आगे १$\frac{1}{8}$ मीलपर झरना; २ मीलपर छप्परवाले ३ मकान और एक झरना, उससे थोड़े आगे छप्परका एक दूकान और एक झरना ३ मील आगे एक छप्परकी दूकान, बड़ा झरना, नीचे उजाड़ बस्ती और एक पक्का मकान; ३$\frac{3}{8}$ मील आगे एक झरना; ४$\frac{1}{2}$ मील आगे एक झरना; ४$\frac{3}{8}$ मील आगे एक झरना और ५ मील आगे नन्दप्रयाग है। चमोलीसे सड़कके पास छोटे छोटे वृक्षोंका जंगल और पर्वतके ऊपर जगह जगह चीड़ आदिके बड़े बड़े वृक्षोंका वन देख पड़ता है।

नन्दप्रयाग—इससे नीचे अलकनन्दाके पानीके पास पहले पक्का बाजार, नन्दजी, लक्ष्मीनारायण और देवीके मन्दिर, बाग और पुल था, जो सन् १८९४ में गोहना झीलके टूटनेपर सबके सब बह गये, वहाँ अब बालूका मैदान है। उस समय वहाँ ११३ फीट ऊँचा अलकनन्दाका पानी हुआ था।

अब अलकनन्दाके ऊपर कण्डासुगाँवके पास नन्दप्रयागके एक मञ्जिले दो मञ्जिले तीस पैंतीस पक्के मकान बने हैं। इनमें बहुतेरे बनरहे हैं। वहाँ कपड़ा, बरतन, मसाला, जिन्स और कस्तूरी, चमर, शिलाजित, निर्विषी, जहरमोहरा आदि पर्वती चीजें मिलती हैं। दूकानदारके यहाँ नोट बिक जाता है। नन्दप्रयागमें एक डाकखाना और कई झरने हैं।

नन्दप्रयाग गढ़वाल जिलेके पंचप्रयागोंमेंसे एक है। नन्दप्रयाग बस्तीसे $\frac{1}{2}$ मील नीचे ननवानी नदी, जिसको नन्दा भी कहते हैं; पूर्वके त्रिपुरलीसे आकर अलकनन्दामें मिली है। नन्दाके बायें अलकनन्दाके संगम तक बालूका मैदान है। नन्दा नदीपर ११५ फीट लम्बा लोहेका लटकाऊ पुल बना है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्दपुराण—(केदारखण्ड, प्रथम भाग, ५७ वाँ अध्याय) ण्वाश्रमसे लेकर नन्दगिरि (अर्थात् नन्दप्रयाग) तक पुण्यक्षेत्र (बदरिकाश्रम) है जो

मनुष्य नन्दप्रयागमें स्नान करके नारायणजीकी पूजा करता है उसको सब पदार्थ मिल जाता है और मुक्ति उसके हाथमें होजाती है।

(५८ वाँ अध्याय) पूर्वकालमें उस स्थान पर नन्द नामक धर्मात्मा राजाने विधि पूर्वक यज्ञ करके बहुत अन्न और दक्षिणा ब्राह्मणोंको दिया। ब्रह्मादिक देवताओंने मूर्त्तिमान होकर अपने अपने भागोंको ग्रहण किया और प्रसन्न होकर उनके नामसे उस क्षेत्रका नाम नन्दप्रयाग रक्खा। उस स्थान पर नन्दा और अलकनन्दाके सङ्गममें स्नान करनेसे मनुष्य शुद्ध होजाता है। वहाँ विष्णु भगवान् शिवजी और वशिष्ठजीके साथ सर्वदा निवास करते हैं। नन्दप्रयागसे १ योजन पर वशिष्ठेश्वर शिवलिङ्ग है।

लिंगासूचट्टी—नन्दप्रयागसे ½ मील आगे नन्दानदी पर लोहेका पुल, ३ मील आगे सुरला चट्टीपर एक मोदीका एक पक्का मकान और एक झरना और नीचे पन्द्रह बीस घरकी बस्ती और अलकनन्दाके किनारे ½ मील लम्बा चौड़ा खेत और मैदान है, उसके आस पास १¼ मील चौड़के बड़े बड़े दरख्तोंका घना जङ्गल है। नन्दप्रयागसे ३½ मील आगे एक झरना, ३¾ मील आगे एक मोदी और एक झरना; ४½ मील आगे बड़े झरनेपर पुल; ४¾ मील आगे एक मोदीके फूसके २ मकान, १ झरना और १ नई कोठरीमें गौरीशंकरकी मूर्त्तियाँ, ५ मील आगे एक छोटी नदी, पनचक्की, दो तीन झरने और एक मोदीके फूसके २ मकान; ५¾ मील आगे केलेके झाड़ोंके साथ एक बस्ती, ६ मील आगे एक छोटा झरना; और ६½ मील आगे लिङ्गासूचट्टी है चमोलीसे इधर राह सुगम है।

लिङ्गासूचट्टीपर मोदियोंके बड़े २ आठ नव पक्के मकान, एक कोठरीमें नृसिंहजी और एकमें चण्डीकी मूर्त्ति और चट्टीके पास लिंगासू नामक पहाड़ी बड़ी बस्ती और खुला हुआ एक बड़ा झरना है। चट्टीसे अलकनन्दा दूर है। बीचमें खेतोंका बड़ा मैदान है। लिङ्गासूसे थोड़े आगे एक छोटी नदी पर काठका पुल और पनचक्की है।

लिङ्गासूचट्टीसे ¾ १, १½, और २ मीलपर एक एक झरना; २½ मील आगे अलकनन्दा पर झूला, ३½ मील आगे लकड़ियोंकी बल्ली और फूससे बना हुआ एक मोदीका मकान और झरना; ४ मील आगे इस पार एक छोटा झरना और उस पार खेतोंका मैदान, और तीन चार बस्ती, ४½ मील आगे एक बडा और एक छोटा झरना, ५ मील आगे एक झरना और ६ मील आगे कर्णप्रयाग है। चमोलीसे वहाँ तक रास्ता सुगम उतराईका है।

कर्णप्रयाग।

अलकनन्दा पूर्वोत्तरसे वहाँ आकर वहाँसे पश्चिम रुद्रप्रयागको गई है। पिण्डारक नदी, जिसको कर्णगङ्गा भी कहते हैं, दक्षिण नन्दा कोटिसे आकर कर्णप्रयाग बाजारसे ½ मील उत्तर अलकनन्दासे मिलगई है पिण्डारक नदीका पानी हरित और साफ है। नदीके लोहेका पुल टूट गया है। पांच छः मोटे २ सहतीर रख कर पुल बना है। कर्णप्रयागमें पूर्व्व समयमें कुन्तीके पुत्र राजा कर्णने सूर्य्यका बड़ा यज्ञ किया था।

कर्णगङ्गाके दहिने किनारेपर कर्णका मन्दिर, सङ्गमपर कर्णशिला नामक एक छोटा चट्टान; कर्णगङ्गापर लटकाऊ पुल, और बायें किनारेपर कर्णप्रयागका बाजार, अस्पताल, थाना आदि थे; जो सन् १८९४ के गोहना झीलके टूटनेपर, जब अलकनन्दाका पानी वहाँ १३० फीट ऊँचा हुआ था, सबके सब बह गये। अब कर्णके मन्दिरका चबूतरा बाकी है, जिसके पास महादेवका एक नया मन्दिर बना है और पुरानी बाजारसे थोड़ा दक्षिण पर्वतके जंघेपर कर्णप्रयाग बसा है। वहाँ बीस पचीस पक्के मकान, एक पक्की धर्मशाला, अस्पताल, पुलिसकी चौकी, पोष्ट आफिस और २ झरने हैं और पूरी मिठाई आदि सब चीजें मिलती हैं। इधर आटा क्रम क्रमः सस्ता होता जाता है। कर्णप्रयागमें ३ आने सेर आटा बिकता है। कर्णप्रयाग गढ़वाल जिलेके प्रसिद्ध पंच प्रयागोंमेंसे एक है, जो केदारनाथ और बदरीनाथके यात्रियोंको सबसे पीछे मिलता है।

कर्णप्रयागसे यात्रियोंके लिये देश जानेके दो रास्ते हैं; एक वहाँसे पश्चिम रुद्रप्रयाग और रुद्रप्रयागसे दक्षिण श्रीनगर, देवप्रयाग और हृषीकेश होकर हरिद्वारको और दूसरा दक्षिण आदिबदरी, मिलचौरी, होकर काठगोदामको पञ्जाबी लोग और हरिद्वारके आस पासके यात्री हरिद्वार जाकर और पूर्व–दक्षिणके यात्री काठगोदाम जाकर रेलगाड़ीपर चढ़ते हैं। कर्णप्रयागसे हरिद्वार ११२ $\frac{3}{4}$ मील और काठगोदाम १०४$\frac{1}{4}$ मील है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्दपुराण—(केदारखण्ड, प्रथम भाग; ८१ वाँ अध्याय) महाराज कर्णने कैलास पर्वतपर नन्द पर्वतके निकट गङ्गा (अर्थात् अलकनन्दा) और पिण्डारकके संगमके समीप शिवक्षेत्रमें सूर्यका बड़ा भारी यज्ञ किया और वह शिवजीकी आराधना करके देवीजीके भवनमें स्थित हुआ। सूर्य भगवान्ने कर्णको अभेद कवच, अक्षय तूणीर और अजेयत्व दिया और उस क्षेत्रका नाम कर्णप्रयाग रक्खा। तबसे ब्रह्मवादी मुनि लोग वहाँ स्थित हुए; उनके नामोंसे बहुत कुण्ड प्रसिद्ध हुए, जिनमें स्नान करनेसे सूर्यलोक मिलता है। वहाँ सूर्यकुण्ड है, जिसमें स्नान करनेवालोंको चारों वर्ग मिलते हैं। कर्णप्रयागमें उमा नाम्नी देवी और उमेश्वर नामक महादेव स्थित हैं। जब कर्णने शिवजीकी आराधना की तब शिवजी उस स्थानपर कर्णेश्वर नामसे प्रसिद्ध हो गये, जिनकी पूजा करनेसे १०० यज्ञ करनेका फल मिलता है। वहाँ रक्तवर्ण विनायकशिला है, जिसका स्पर्श और परिक्रमा करनेसे विघ्नोंका नाश होता है। जो मनुष्य कर्णप्रयागमें मरता है वह एक कल्प तक शिवपुरमें निवास करता है।

रुद्रप्रयागकी सड़क—कर्णप्रयागसे ५ मील चटवा पीपलचट्टी, १० मील बगड़ासू, १३ मील शिवानन्दीचट्टी और २१ मील रुद्रप्रयाग है। सब चट्टियोंपर दूकानें और झरने हैं। हरिद्वार जानेवाले यात्रियोंको रुद्रप्रयागसे ऊर्द्ध लिखित मार्गसे हृषीकेश होकर और काठगोदाम जानेवालोंको नीचे लिखे हुए मार्गसे जाना चाहिये।

सेमलचट्टी–काठगोदाम जानेवाले यात्रियोंको कर्णप्रयागसे अलकनन्दा नदी छूट जाती है, पिण्डारक नदीके किनारे चलना होता है। काठगोदामके मीलके पत्थरोंका नम्बर कर्णप्रयागके आरम्भ होता है। कर्णप्रयागसे चलनेपर पहले सेमलचट्टी मिलती है। कर्णप्रयागसे

आगे $\frac{१}{२}$ मील, $\frac{३}{४}$ मील और १ मीलपर एक एक झरना, २ मील आगे एक गुफा और एक खुला झरना; २$\frac{१}{२}$ मील आगे दो जगह दो झरने और ३$\frac{३}{४}$ मील आगे सेमल चट्टी है।

सेमलचट्टीपर छः सात पक्के मकान, एक सरकारी पक्की धर्मशाला, झरना, पिण्डारक नदीपर झूला और चट्टी तक $\frac{१}{२}$ मील खेतका मैदान है। वहाँ आदिबदरी नामक नदी आकर पिण्डारक नदीमें मिली है। वहाँसे आदिबदरी नदीके बायें और सन्मुख चलना होता है।

सेमलचट्टीसे $\frac{३}{४}$ मील आगे नदीपर ११५ फीट लम्बा लोहाका लटकाऊ पुल है।उसको पार होकर आदिबदरी नदीके दहिने किनारे चलना होता है। पुल पार एक झरना है। संगमसे आगे पिण्डारक नदीके बायें होकर एक सड़क नारायणबगड़को गई है। सेमलचट्टीसे१$\frac{१}{४}$ मील आगे एक झरना, १$\frac{३}{४}$ मील आगे २ झरने, २$\frac{१}{४}$ मील आगे सिरौलीचट्टीपर मोदीके छप्परका मकान और दो झरने; ३ मील आगे छोटा झरना; ३$\frac{१}{२}$ मील आगे छोटा झरना, ३$\frac{३}{४}$ मील आगे लकड़ी फूससे बना हुआ बटौलीचट्टीपर एक मोदीका मकान, दो झरने, दो पीपलके पेड़ जहाँ तक बड़े बड़े वृक्षोंके जङ्गलकी विचित्र हरियाली देखनेमें आती है; आगे २ झरने; ४$\frac{३}{४}$ मील आगे छोटा झरना, ५$\frac{१}{२}$ मील आगे २ झरने; ५$\frac{३}{४}$ मील आगे छोटे छोटे २झरने, ६$\frac{१}{४}$ मील आगे एक कोठरी; जहाँसे पश्चिम एक सड़क पौड़िको गई है; उस पार एक छोटी नदी इस नदीसे मिली है; ६$\frac{३}{४}$ मील आगे एक पीपलका पेड़ और २ झरने; और ८ मील आगे आदिबदरी हैं।

आदिबदरी—यह बदरी पंचबदरीमेंसे नहीं हैं। पंचबदरीमेंके आदिबदरी कुम्भारचट्टीसे ६ मील ऊजेम गाँवमें हैं। कर्णप्रयागसे वहाँतक सुगम चढ़ाव उतारकी सड़क और जगह जगह चौरस भूमि है।

आदिबदरी चट्टी पर मोदियोंके दश बारह मकान, जिनमें एक बहुतही बड़ा है; एक सरकारी पक्की धर्मशाला; पोष्ट आफिस, खुला हुआ एक बड़ा झरना और नीचे एक नदी और खेतका मैदान है।

चट्टीके पास १४ देवताओंके शिखरदार छोटे छोटे चौदह मन्दिर हैं। वहाँके सब देवताओंमें आदिबदरी प्रधान हैं। इनका मन्दिर वहाँके सब मन्दिरोंसे बड़ा है। आदिबदरी की सुन्दर छोटी मूर्त्ति मुकुट, वस्त्रोंसे सुशोभित है। १४ मन्दिरोंमेंसे ६ तो केवल चार पांच हाथ ऊँचे हैं। मन्दिरोंमें नीचे लिखे हुए देवता हैं,—(१) आदिबदरी, (२) पार्वती, (३) अन्नपूर्णा, (४) महिषमार्दिनी देवी, (५) गणेशजी, (६) बुढ़ाकेदार, (७) गरुड़, (८) सत्यनारायण; (९) लक्ष्मनिारायण, (१०) चक्रपाणि, (११) परशुराम, (१२) पारब्रह्म वा परब्रह्म, (१३) गोकुलस्वामी और (१४) हनूमानजी। मन्दिरोंके पांच छे ब्राह्मण रहते हैं।

आदिबदरीसे $\frac{१}{४}$ मील आगे १ बड़ा और २ छोटे झरने, १$\frac{१}{४}$ मील आगे छोटी छोटी २ नदियोंका संगम, १$\frac{१}{२}$ मील, १$\frac{३}{४}$ मील और २ मील पर एक एक झरने; २$\frac{३}{४}$ मील आगे ३

झरने और १ पक्का घर, ३ १/४ मील और ३ १/२ मील पर एक एक झरना और ४ ३/४ मील आगे जोकापानीचट्टी है।

जोकापानीचट्टी—वहाँ लकड़ीके शाखों और फूसके छप्परसे बने हुए चार पांच मकान और एक झरना है। आदिबदरीवाली नदी उस चट्टीसे पहले छूट जाती है और १/२ मील पहले ३/४ मील की कड़ी चढ़ाई मिलती है।

जोकापानी चट्टीसे १/२ मील आगे एक झरना और वहाँसे १ मील तक कड़ी चढ़ाई; ३/४ मील, २ मील, २ १/४ मील, २ १/२ मील, २ ३/४ मील पर एक एक झरना; ३ मील आगे काला-माटीचट्टी पर लकड़ीकी शाखों और फूसके छप्परोंसे बने हुए छोटे छोटे ५ मकान और एक झरना; ३ १/२ मील आगे एक झरना; ३ ३/४ मील आगे सिंहकोटी चट्टी पर लकड़ीकी शाखों और फूसके छप्परोंसे बने हुए ३ मकान और २ झरने, ४ मील; ४ १/४ मील और ५ मील पर एक एक झरना और ५ १/४ मील पर गोहड़चट्टी है। जोकापानीचट्टीसे सिंहकोटी चट्टी तक मार्गके पास बड़े बड़े वृक्षोंका सघन बन है।

गोहड़चट्टी—वहाँ एक नदी पर काठका पुल, दोनों किनारों पर २ मोदियोंके चार पांच पक्के मकान, उस पार एक झरना, दोनों तरफ ऊपर जगह जगह पक्के मकानोंकी चार पांच बस्तियां और नदीके किनारों पर खेतका ढालू मैदान है।

गोहड़चट्टीसे नदी पार होकर १/४ मील तक नदीके बायें किनारे चलना होता है आगे नदी दहिने छूट जाती है; बड़ा मैदान मिलता है। ३/४ मील आगे लोहवामें दहिने एक अङ्गरेजी बङ्गला और दो तीन पक्के मकान हैं, जिनके पास चाहकी खेती होती है। बङ्गलेके चारों तरफ ढालू बड़ा मैदान है। गोहड़चट्टीसे १ १/२ मील आगे धोबीघाटचट्टी है।

रामगङ्गा नदी—यह नदी ऊपर लिखेहुए लोहवाके पहाड़से निकली है धोबीघाटके पास दोनों तरफसे दो धारें आकर इसमें मिली हैं, तो भी वहाँ गर्मीकी ऋतुओंमें जगह जगह आदमी रामगङ्गाको फांद जाते हैं। यह नदी मुरादाबाद और बरेली होकर ३०० मील बहनेके उपरान्त फर्रुखाबादके नीचे गङ्गामें मिल गई है।

धोबीघाटचट्टी—वहाँ सड़कके दोनों किनारों पर पन्द्रह सोलह पक्के मकान, पोष्ट आफिस, पुलिसकी चौकी और रामगङ्गा नदी है।

धोबीघाट चट्टीसे रामगङ्गाके बायें किनारे चलना होता है। ३/४ मील आगे उस पार बहुत छोटे छोटे २ मन्दिर, इसपार दो पनचक्की और एक झरना; १ १/४ मील आगे एक बस्ती और १ बङ्गला; १ ३/४ मील आगे १ बड़ी बस्ती; २ १/२ मील आगे बड़ा झरना; २ ३/४ मील आगे ऊपर १ गुफा, ३ १/४ मील आगे मोदीका एक छोटा मकान; ३ ३/४ मील आगे एक झरना ४ १/४ मील आगे छोटे छोटे कई झरने ४ ३/४ मील आगे एक झरना; और ५ ३/४ मील आगे मीलचौरी चट्टी है।

धोबीघाट चट्टीसे मीलचौरी तक रामगङ्गाके दोनों तरफ जगह जगह खेतोंका बड़ा मैदान और बस्तियां हैं। आदिबदरीसे वहाँ तक सुगम उतराईका मार्ग और जगह जगह

सड़क समतल है। कर्णप्रयागसे मीलचौरी तक सड़क चौड़ी और विना ठोकरकी है। उस सड़क पर जिन्स लादे हुए घोडे चलते हैं। मोदियोंके मकान मन्दाकिनी और अलकनन्दाके किनारोंके मकानोंके समान बड़े बड़े नहीं हैं। छोटी छोटी चट्टियों पर भाजी आदि बहुत चीजें नहीं मिलतीं। हवा पानी अच्छा नहीं है। बाई, पेट मरोड़, आदि कई रोग बहुत लोगोंको होते हैं। कर्णप्रयागसे इधर हरेके पेड़ और फल बहुत हैं और पदुम काठ और तेजबलकी लाठी बहुत बिकती हैं।

मीलचौरी।

मील चौरीमें रामगंगा नदीपर आगे पीछे काठके २ पुल हैं। नदीके बायें किनारेपर मोदियोंके ४ मकान और झम्पान और कूलीका ठेकेदार और दहिने किनारेपर आठ दश पक्के मकान, पुलिसकी चौकी और चिट्ठीका बक्स है।

हरिद्वार और हृषीकेशसे आये हुए झम्पान और कण्डीवाले कूली मील चौरीसे अपने घरको बिदा होते हैं। वहाँ नये झम्पान और बोझे वाले कुली ठेकेदारके मारफत मुकरर होते हैं। मैंने काठगोदाम जानेके लिये १५ रुपये नकद और प्रतिदिन दो सेर आटा देनेके करार पर एक झम्पान भाड़ापर किया।

मीलचौरीसे आगे गढ़वाल जिला छूटकर कमाऊँ जिला आजाता है, जिसके हाकिम अल्मोड़ेमें रहते हैं। मीलके पत्थरोंका नम्बर अल्मोड़ेसे आरम्भ हुआ है। अल्मोड़ेसे मील चौरी ४३ १/८ मील ऊपर है।

मीलचौरीसे ३/८ मील आगे लोहागढ़ी नामक शिखरपर एक कोठरीमें भैरवनाथकी मूर्त्ति, १ १/२ मील आगे २ झरने, २ मील आगे सिमालखेतचट्टीपर लकड़ीकी शाखों और फूसके छप्परोंसे बने हुए छोटे छोटे २ मकान और १ झरना, २ १/२ मील और २ १/२ मील आगे एक एक झरना, ३ १/२ मील आगे खुला हुआ झरना; ३ ३/८ मील आगे नारायणचट्टीपर लकड़ीकी शाखों और फूसके छप्परसे बना हुआ १ मकान और थोड़ी दूरपर एक वस्ती, ४ १/२ मील आगे खुला हुआ एक झरना, जहाँसे दहिने पहाड़के ऊपर केदारनाथ नामक एक शिवका मन्दिर देख पड़ता है, ५ १/२ मील आगे एक बड़ी वस्ती; ६ मील आगे वृपभूचट्टीपर लकड़ीकी शाखों और फूसके छप्परोंसे बने हुए ३ मकान, १ झरना, एक कोठरीमें कोई देवता, चट्टीके पास एक वस्ती और थोड़े आगे एक दूसरी बस्ती और एक झरना, ६ ३/८ मील आगे चबूतरेके साथ पीपलका एक बड़ा वृक्ष; ७ १/८ मील आगे मोदीके २ घर और ८ मील आगे चौखुटिया है, जिसको गनाई भी कहते हैं।

मीलचौरीसे लोहागढ़ तक कड़ी चढ़ाई और सिमालखेतचट्टीसे आगेकी घाटीमें खेतका बड़ा मैदान है।

गनाई वा चौखुटिया—मीलचौरीसे छुटी हुई रामगङ्गा चौखुटियाके पास फिर मिल-जाती है और वहाँसे दक्षिण मुरादाबाद गई है। चौखुटियाके पास रामगंगापर ११५ फीट लम्बा लोहाका पुल बना है। नदीके दहिने किनारे डाकखाना बायें किनारे पर पन्द्रह बीस

पक्के मकानोंका बाजार और बाजारसे १/२ मील दूर सफाखाना है। चौखुटियामें आटा २ १/४ आने सेर बिकता था। बाजारके लोग रामगङ्गाका पानी पीते हैं। सफाखानाके पास एक छोटा झरना है।

चौखुटियासे आगे २ सड़क गई हैं, एक दक्षिणकी ओर चिलिकिया अर्थात् रामनगर होकर मुरादाबादको और दूसरी दक्षिण-पूर्व काठगोदामको। अब अधिक यात्री काठगोदाम जाकर रेलगाडीमें बैठते हैं।

जो लोग मुरादाबादके स्टेशन पर रेलमें सवार होना चाहते हैं, उनको नीचे लिखे हुए रास्तेसे जाना चाहिये। चौखुटियासे ४ कोस चौपट्टा, ८ कोसपर बुढाकेदार, ११ कोस पर भिकीसैन, १७ कोसपर गर्वानी, २३ कोसपर मोहन चौकी, २७ कोसपर उमादेवीका मन्दिर; २८ कोसपर गिरिजाचट्टी, और ३५ कोसपर रामनगर है, जिसको चिलकिया भी कहते हैं। रामनगरसे पहले पहाड़ छूटकरके देश शुरू होता है, बैलगाड़ी और घोड़े मिलने लगते हैं। रामनगरसे तराई जिलेका प्रधान कसबा काशीपुर १२ कोस और मुरादाबाद ३० कोस है। चट्टियोंपर छोटी छोटी दुकानें रहती हैं। भिकीसेनमें धर्मशाला और अस्पताल और गिरिजाचट्टीपर धर्मशाला और डाकबँगला है।

काठगोदामके मार्गमें चौखुटियासे ३/८ मील आगे १ दूकान और हौजका पानी; २ १/८ मील आगे छोटा झरना; २ १/२ मील आगे २ झरने, ३ ३/८ मील आगे छोटा झरना और ४ १/८ मील आगे महाकालचट्टी है।

महाकालचट्टी--वहाँ पक्के और लकड़ीके बल्लियों और फूसके बने हुए छ सात मकान एक झरना; सड़कके पास एक छोटी नदीपर ९५ फीट लम्बा लोहेका पुल और दहिने नीचे एक कोठरीमें महाकालेश्वर नामक २ शिवलिङ्ग हैं।

महाकालचट्टीसे १/२ मील आगे खुला हुआ झरना; ३/८ मील आगे शाहपुरचट्टीपर लकड़ी फूससे बना हुआ, मोदीका एक मकान और नदीका पानी १ ३/८ मील आगे बायें तरफ बस्ती; २ ३/४ मील आगे घराटचट्टीपर पेड़के नीचे एक चबूतरेके गड़हेमें १ शिवलिङ्ग, २ पक्की धर्मशाले, एक मोदी, एक नदी, १ झरना और १ पनचक्की; ३ मील आगे १ मकान और लेटरबकश, ३ ३/४ मील आगे छोटा झरना, ४ १/८ मील आगे डाकबँगलेकी सड़क ४ ३/८ मील अमीरचट्टीपर लकड़ी फूससे बना हुआ मोदीका एक मकान और काठका पुल; ५ मील आगे छोटा झरना और ६ १/८ मील आगे द्वारहाट है।

सिमालखेतचट्टीसे अमीरचट्टी तक पहाड़की घाटीमें खेतीका बड़ा मैदान और जगह जगह बस्तियां हैं; कई बस्तियोंमें केले लगे हैं; मार्ग प्रायः समथल और जगह जगह सुगम चढ़ाव उतार है। १ मील कड़ी चढ़ाईके पीछे द्वारहाट मिलता है।

द्वारहाट-वहाँ सड़कके किनारोंपर पन्द्रह बीस पक्के मकान हैं, जिनमें कपड़ा, बरतन और सब जिन्स बिकती हैं और यात्री टिकते हैं। वहाँ सफाखाना, डाकखाना झरने और डाकबँगला हैं। वहाँसे १ सड़क सोमेश्वरको गई है। इश्तिहारकी तख्तीपर सोमेश्वर १२ मील और रानीखेत १२ ३/४ मील लिखा है। बाजारसे बाहर पहाड़ियोंपर पक्के मकानोंकी

छोटी छोटी कई बस्तियां और नीचे एक जगह ३, एक जगह २ और कई जगह एक एक शिखरदार पहाड़ी मन्दिर देख पड़ते हैं। आगे एक छोटी नदीपर काठका पुल है, वहाँसे एक सड़क डाकबँगलेको गई है। द्वारहाटके पास मैदान है।

रानीखेतकी सड़क—द्वारहाटसे ३/४ मील आगे पुलिस-चौकीका दो मञ्जिला मकान है। उससे आगे दो सड़क गई हैं, दहिनेकी सड़कसे रानीखेत छावनी १२ मील और आगेकी सड़कसे अल्मोड़ा २४ १/४ मील है। रानीखेतवाली सड़क दूसरी सड़कसे यात्रियोंके लिये सुगम है। दोनों सड़क खैरनामें जाकर मिल गई हैं। पुलिसकी चौकीसे खैरना आगेवाली सड़कसे ३२ मील और रानीखेत होकर २७ मील है।

तिमुहानी सड़कसे १/२ मील, १ मील और १ १/२ मीलपर एक एक झरना; २ मील आगे एक नया पक्का मकान और दोनों तरफ २ झरने; २ १/४ मील आगे १ झरना, २ ३/४ मील आगे एक नदीपर ५५ फीट लम्बा काठका पुल, ३ मील आगे भनरगोंकी दूकान पर एक मोदीके २ मकान और झरना, ३ ३/४ मील आगे पर्वतके नीचे एक पानीका हौज, ४ १/४ मील आगे बगवाली पोखरचट्टी पर मुसलमानोंकी बस्ती और इन्हीकी २ दूकानें, डाकखानेमें हिन्दूकी एक दूकान छाया हुआ कुवाँ हौज, १२ कोठरीवाली एक पक्की धर्मशाला, एक कोठरीमें शिवलिङ्ग और जगह मैदान और ५ १/४ मील आगे बांसुरी सेरा चट्टी है।

बांसुरीसेराचट्टी—चट्टीके पास गगास नदी पर ८५ फीट लम्बा लोहेका पुल है। चट्टी पर मोदियोंके पक्के ३ मकान, यात्रियोंके टिकनेके लिये लकड़ी और फूसकी २ पलानी; गोरिला देवताका एक बड़ा चौपार मन्दिर, जिसमें एक मूर्त्ति और बहुत कोठरी हैं एक झरना; और नदीका पानी है।

बांसुरीसेराचट्टीसे १/४ मील आगेसे २ सड़क हैं। वहाँसे बायेंकी सड़क पर अल्मोड़ा १८ ३/४ मील है। दहिनेकी सड़क पर चट्टीसे ३/४ मील आगे एक झरना, १ १/२ मील आगे मलयनदी चट्टीपर २ मोदी, टिकनेके लिये २ पक्के मकान, एक झरना, २ नदियोंका संगम, दोनों नदी पर २ पुल, ३ १/४ मील आगे छाया हुआ कूँआ हौज, ३ १/२ मील आगे रेवतीगाँव चट्टीपर छप्परकी १ दूकान और रेवतीगाँव, ४ ३/४ मील आगे बैलगाड़ीकी सड़क, जो पीछे रानीखेतको और आगे अल्मोड़ाको गई है और ५ १/४ मील आगे मजखली चट्टी है। मलय नदीसे आगे २ ३/४ मील तक कड़ी चढ़ाई है।

मजखलीचट्टी—मजखलीचट्टीपर एक मोदीका एक पक्का मकान और टिकनेके लिये एक बड़ी पलानी और पेडोंतर जगह है। उसके आस पास दूरतक समथलमें सड़क है, जिसपर नित्य बहुतेरी बैल गाड़ियाँ और बहुतेरे टट्टू टिकते हैं। चट्टीसे थोड़ेही दूरपर एक झरना है।

मजखली धर्मशाला—मेरे झम्पानका एक कुली बीमार होगया, इस लिये मैं झम्पानको छोड़कर मजखली चट्टीसे पैदल चला। १/२ मील आगे मजखलीकी धर्मशाला मिली। वहाँ एकही छप्परके नीचे चारों तरफ मुखवाले एक धर्मशालेमें १२ कोठरियाँ, मोदीकी २ पलानी और जगह मैदान है। थोड़ाही आगे ऊपर डाक बंगला और नीचे झरनाका हौज है। वहाँसे पीछेकी तरफ रानीखेत ८ १/४ मील और आगेकी ओर बायें वाली सड़कसे अल्मोड़ा १४ १/२

मील है। इस सड़क द्वारा सिकरम काठगोदामसे रानी खेत होकर अलमोड़ा जाते हैं। वहाँसे रानीखेत और अलमोड़ा यात्रियोंके लिये सब जगहोंसे अधिक निकट है बायें वाली सड़कसे अलमोड़ा होकर काकरीघाटचट्टी २७३/४ मील और चढ़ाई उतराईकी सीधी सड़कसे काकरी घाटचट्टी केवल १४३/४ मील है। अलमोड़े वाली सड़कपर चढ़ाई उतराई नहीं है। उसपर बैलगाड़ी चलती है।

रानीखेत।

यह द्वारहाटसे १३ मील, मजखली-धर्मशालासे ८१/४ मील तिर्मुहानी सड़कसे ११ मील और खैरनासे १५ मीलपर है। बदरीनाथसे लौटे हुए यात्रीको द्वारहाटसे या मजखलीसे और काठगोदामसे, जानेवालोंको खैरनासे रानीखेत जाना चाहिये रानीखेतसे मजखली होकर अलमोड़ा २२३/४ मील और चढ़ाई उतराईकी सड़कसे काठगोदाम ३९ मील है।

रानीखेत पश्चिमोत्तर देशके कमाऊँ जिलेमें एक मशहूर फौजी छावनी है। गोरे और हिन्दुस्तानी फौज वहाँ रहती हैं और गर्मीकी ऋतुओंमें युरोपियन, सिविलियन और दूसरे सरीफ लोग निवास करते हैं। वहाँका जल वायु बहुत उत्तम है। सन् १८८० ई० के सितम्बरकी खास मनुष्य-गणनाके समय रानीखेतमें ६६३८ मनुष्य थे; अर्थात् ३२४३ हिन्दू, २०७२ युरोपियन, १२९३ मुसलमान, ७ युरेसियन, ७ देशी कृस्तान और १६ दूसरे।

अलमोड़ा।

अलमोड़ा मजखली धर्मशालासे १४१/२ मील, काकरीघाटचट्टीसे १३१/४ मील और भिमौलीसे २५ मीलपर है। बदरीनाथसे लौटे हुए यात्रीको मजखलीसे और काठगोदामसे जानेवालोंको भिमौली अथवा काकरीघाटचट्टीसे अलमोड़ा जाना चाहिये। काठगोदामसे भीम ताल भीमौली; खैरना और काकरीघाटचट्टी होकर चढ़ाई उतराईकी सड़कसे अलमोड़ा ४३३/४ मील है, परन्तु भीमौलीसे सीधी सड़क जानेसे काठगोदामसे अलमोड़ा ३७ मीलपर मिलेगा।

अलमोड़ा पश्चिमोत्तर देशके कमाऊं जिलेका सदर स्थान और जिलेमें प्रधान और पुराना कसबा समुद्रकी सतहसे ५५०० फीट ऊपर है। वहाँ गोरखोंकी २ पल्टने रहती हैं। कमजोर फेफड़ोंके आदमियोंके रहनेके लिये वह प्रसिद्ध स्थान और सौदागरीकी मण्डी है। वहाँ सरकारी इमारतोंके अलावे एक कोढ़ीखाना है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणनाके समय छावनीके सहित अलमोड़ेमें ७३९० मनुष्य थे, अर्थात् ६३२३ हिन्दू, ८६६ मुसलमान और २०१ कृस्तान। इनमेंसे म्युनिस्पलिटीके भीतर केवल ४८१३ मनुष्य थे।

कमाऊँ जिला-यह पश्चिमोत्तर देशमें कमाऊं विभागका एक जिला है। जिलेका क्षेत्रफल ६००० वर्गमील और इसका सदर स्थान अलमोड़ा है। इसजिलेमें ३ सबडिवीजन हैं,-अलमोड़ा या खास कमाऊं चम्पावत और भावर कमाऊं जिलेमें हिमालय पहाड़ियोंका सिलसिला है। पहाड़ियां और तराईके बीचमें १० मीलसे १५ मील तक चौड़ा भावर अर्थात्

विना पानीका जङ्गल फैला हुआ है । हिमालयके सिलसिले पूर्वसे पश्चिमको गये हैं । नीतिपासका शिखर समुद्रके जलसे १६५७० फीट, नानापासका १८००० फीट और जुहार पासका १७२७० फीट ऊँचा है । जिलेके पश्चिम गढ़वालकी सीमापर त्रिशूल पहाड़, जिसकी चोटियां त्रिशूलकी शकलकी हैं, स्थित हैं,—इनमेंसे पूर्ववाली चोटी समुद्रके जलसे २२३४२ फीट, मध्यकी चोटी २३०९२ फीट और पश्चिमकी चोटी २३३८२ फीट ऊँची है । त्रिशूल पहाड़के आस पास लगभग १४० मील लम्बाई और ४० मील चौड़ाईमें नन्दादेवी, नन्दाकोट इत्यादि ३० चोटियोंसे अधिक १८००० फीटसे अधिक ऊँची हैं । जिलेमें छोटी नदियां बहुत हैं कालीनदीके हिस्सेको सारदा और गागरा कहते हैं, जिनमें चउली, गुंका, गोरीगङ्गा, पूर्वी रामगङ्गा और सर्यूमिली है कई नदियाँ अलकनन्दामें मिल गई हैं पश्चिमी रामगङ्गा गढ़वाल जिलेमें लोहवाके निकट निकली है । हिमालयके सिलसिले पर नैनीताल, भीमताल, नवकुचिया और मालवाताल प्रधान झील हैं । जिलेमें पत्थर, लोहा, ताम्बा इत्यादिकी खाने हैं; परन्तु पूरेतौरसे उनमें काम नहीं होता है । जङ्गली जानवरोंमें तेंदुये, भालू, हिमालयके बैल; अनेक प्रकारकी हरिन इत्यादि होते हैं । भाबरमें और शिवालिक पहाड़ियोंके जङ्गलोंमें हाथी रहते हैं ।

इस जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य गणनाके समय ५६६९४६ मनुष्य थे; अर्थात् २९६१६३ पुरुष और २७०६६४ स्त्रियां और सन् १८८१ में ४९३६४१ थे; अर्थात् ४७९९४८ हिन्दू, ११२६१ मुसलमान, २३९३ कृस्तान, ३२ बौद्ध, और ७ पारसी । जातियोंके खानेमें २१६२४७ राजपूत, १२०१३७ ब्राह्मण, १०४९३६ डोम थे । ५१५१ गांव पहाड़ियोंके बगलों पर हैं, जिनमेंसे लगभग ४६६२ गांवोंमें २०० से कम ४३५ गांवोंमें २०० से ५०० तक, ४४ गांवोंमें ५०० से १००० तक और केवल १० गांवोंमें १००० से अधिक मनुष्य थे ।

बड़ीचोटियोंके उत्तरके देशमें भोटिये बसते हैं । इनकी शकल और भाषा तिब्बतके लोगोंसे बहुत मिलती है । कमाऊंके निवासी साधारण प्रकारसे सुन्दर हैं । सब बातोंको विचारनेसे इनकी चाल चलन अच्छी है । वहाँके पुरुष चालाक सच्चे और परिश्रमी होते हैं । स्त्रियां प्रायः सब सुन्दर होती हैं । वहाँके लोग पत्थरकी दीवार बना कर स्लेटसे छाकरके मकान बनालेते हैं ।

इसजिलेमें केवल अल्मोड़ा देशी कसबा है । चांद राजाओंकी उजड़ी हुई राजधानी चम्पावत अब एक गावके समान है । रानीखेत और नैनीतालमें युरोपियन स्टेशन और बाजार हैं । मिलनजुहार भोटियोंके रहनेकी प्रधान जगह एक बड़ा गाँव है । रामनगर बड़ा बाजार है । कमाऊंमें खेती करनेके योग्य भूमि कम है । खेतोंके लिये पहाड़ियोंके बगलोंपर काट करके सीढ़ियोंके समान भूमि बनाई जाती है । गेहूँ, तम्बाकू, जव, सन, जनेरा, ऊख, कपास, तेलके बीजें सब कुछ जगह जगह उत्पन्न होते हैं । कमाऊंमें फल बहुत होते हैं, वहां की नारंगी बहुत उत्तम हैं वहाँ चायकी खेती बहुत होती है ।

भोटिये लोग तिब्बत और मैदानके साथ कमाऊंकी सौदागरी करते हैं । टट्टू, भेड़ निमक, ऊन, वेशकीमती पत्थर, माटा ऊनी कपड़ा, चीनी, रेशम इत्यादि दूसरी जगहोंसे

कमाऊँमें आते हैं और गल्ले, रुईका असबाब, तम्बाकू, चीनी, मसाला, रंग, चाय, मकानकी लकड़ी, मोटा कपड़ा इत्यादि दूसरे देशोंमें भेजे जाते हैं । उत्तरके रहनेवाले लोग ऊनी कपड़े पहनते हैं । कमाऊँसे चाय, अदरक, हलदी, लालमिरचा, आलू, मसाला, मधु, भीम, थोड़ा लोहा ताम्बा, लकड़ी भावरकी पैदावार इत्यादि चीजें मैदानमें भेजी जाती हैं। बड़ी नदियों के ऊपर पुरानी चालके रस्सेके झुलाओंके स्थान पर लोहेके लटकाऊ पुल बने हैं। गाड़ीकी सड़क हलद्वानीसे नैनीताल तक और रामनगरसे रानीखेत और अल्मोड़े तक गई है । सन् १८८२—८३ में बनवाई हुई सड़कोंकी लम्बाई १४०२ मील थी । अकतूबरसे अपरैल तक ७ मास इसदेशके जल वायु खुसनुमा रहते हैं । कमाऊँ विभागमें ३ जिले हैं,—कमाऊँ, तराई और गढ़वाल ।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि सन् ईसवीकी दसवीं सदीमें चान्द घरानेका पहला राजा सोमचन्द्रने प्रयागके पास झूसीसे आकर कमाऊँ जिलेके कालीकमाऊँ अर्थात् चम्पावतको अपने राज्यका प्रधान स्थान बनाया । राजा कल्यानचन्द्रने चम्पावतको छोड़कर अल्मोड़ाको अपनी राजधानी बनाया । उसके पुत्र रुद्रचन्द्रने सन् १५८७ में लाहौरमें जाकर बादशाह अकबरको नम्रता दिखलाई । मुसलमान बादशाह पहाड़में कभी नहीं जा सके, किन्तु सन् १७४४ में अलीमुहम्मदखानने कमाऊँपर चढ़ाई करके अल्मोड़ाको लूटा और उसे लेलिया । मुसलमान लोग ७ महीनोंके पश्चात् अपने मैदानको लौट गये । सन् १७४५ में रोहिला मुसलमानोंने फिर पहाड़ी देशपर चढ़ाई की; किन्तु वे परास्त होकर लौट गये । कुछ काल बीतनेपर गोरखोंकी सेना कालीनदी पार होकर गङ्गोली और कालीकमाऊँ होती हुई अल्मोड़े में आई । कमाऊँका राजा मैदानसे भाग गया । उसका सम्पूर्ण राज्य गोरखोंने लेलिया । चौदह वर्ष तक नेपाली हुकूमत रही । सन् १८१५ में अङ्गरेजी सरकारने कमाऊँ और गढ़वाल जिलेको गोरखोंसे छीन लिया ।

मजखली धर्मशालेसे आगे चीड आदि बड़े बड़े वृक्षोंसे भरा हुआ हरित जंगल है । चट्टियोंके अतिरिक्त किसी जगह आग सुलगाने अथवा तम्बाकू पीनेका हुकुम नहीं है । धर्मशालेसे २$\frac{1}{4}$ मलि आगे एक झरना, २$\frac{1}{4}$ मील आगे १ हौज और २$\frac{3}{4}$ मील आगे तिर्मुहानी सड़क है । उससे दहिने पीछेकी तरफ रानीखेत ११ मील और बायें तरफ अल्मोड़ा १८ मील है । दोनों तरफ बैलगाड़ीकी सड़क है । मजखलीसे ३ मील आगे झरनापर पुल, ४$\frac{1}{4}$ मील आगे बहता हुआ पानी, ४$\frac{1}{2}$ मील आगे बहुत छोटे २ झरने, ४$\frac{3}{4}$ मील आगे दहिने एक दूसरी सड़क ५ मील आगे २ छोटे छोटे झरने, ८ मील आगे तारका खम्भा और ९ मील आगे सीतला चट्टी है । धर्मशालेसे वहाँ तक सुगम चढ़ाई उतराईकी सड़क और जगह जगह समथल भूमि और एक जगह १ मील कड़ी चढ़ाई है ।

सीतलाचट्टी—सीतलाचट्टीके पास चीड़के बड़े बड़े वृक्षोंका बाग, १ पक्का और २ लकड़ी फूससे बने हुए मकान और १ झरना है । मैं वहाँसे काठगोदाम जानेके लिये ३$\frac{1}{2}$ रुपये पर एक टट्टू किराया करके उसपर सवार हो आगे चला ।

सीतलाचट्टीसे २ मील आगे १ झरना; २$\frac{3}{4}$ मील आगे छोटा झरना २$\frac{3}{4}$ मील आगे नीचे १ अच्छी बस्ती और ४ मील आगे बायें तरफ कोशलानदी है । वह नदी अल्मोड़ा होकर आई है । उसके बायें किनारे अल्मोड़ाकी सड़क है । चट्टीसे ५$\frac{1}{2}$ मील आगे कोशला

नदीपर लोहेका पुल, जिसको पार होकर आगे चलना होता है। और ५$\frac{3}{8}$ मील आगे कांकरीघाटचट्टी है। सीतलाचट्टीसे १$\frac{3}{8}$ मील सुगम चढ़ाईके बाद कांकरियाघाट तक कड़ी उतराई है।

कांकरीघाट चट्टी–वहाँ मैदानमें २ पक्के और ४ पलानीवाले मकान, १ गुफा, कोशला नदीका पानी और अल्मोड़ेको सड़कपर एक मोदीका मकान और १ झरना है।

जो आदमी बांसुरीसेराचट्टी अथवा मजखलीको धर्मशालेसे अल्मोड़ा जायगा; वह इसी जगह यात्रीवाली सड़कपर घुमाव रास्तेसे ऊपर होगा। यहाँ चौमोहानी सड़क है;-पहली पीछेवाली सड़क, दूसरी १३$\frac{1}{8}$ मीलकी अल्मोड़े तककी सड़क, तीसरी १२ मीलकी खैरना तक गाड़ी वाली सड़क और चौथी ६$\frac{1}{8}$ मील चढ़ाई उतराई वाली खैरना तककी सड़क।

कांकरीचट्टीसे १$\frac{1}{8}$ मील आगे पहाड़ियाचट्टीपर एक मोदीके पलानीसे छाये हुए २ मकान, ४ मील आगे चमड़ियाचट्टीपर एक मोदीकी ३ पलानी, एक नदी और २ झरने, ४$\frac{1}{8}$ मील आगे बड़ा झरना, ५$\frac{1}{8}$ मील आगे छोटा झरना और ६$\frac{1}{8}$ मील आगे खैरनाचट्टी है। कांकरीघाटसे वहाँ तक सुगम चढ़ाव उतारका मार्ग है।

खैरनाचट्टी––खैरनामें पन्द्रह बीस पक्के मकान, डाकखाना, पुलिसकी चौकी, बाजार और कोशलानदी है। कोशला नदीपर लोहेका कैंचीदार बड़ा पुल है। पुल होकर लोग रानीखेत जाते हैं। द्वारहाटके पास रानीखेतकी सड़क छूटी थी वह वहाँ मिल गई। वहाँसे एक गाड़ीकी सड़क पूर्व कथित कांकरीघाटचट्टी होकर अल्मोड़ेको गई है। बैलगाड़ी काठगुदामसे नैनीताल, खैरना, रानीखेत और अल्मोड़ेको जाती है। खैरनासे रानीखेत २७ मील ऊपरकी ओर है। गाड़ीवाली सड़कसे काठगुदाम ३४ मील नीचे है, परन्तु चढ़ाई उतराई वाली सड़कसे वह केवल २४ मील पर है। कोशला नदी खैरनासे छूट जाती है। उस नदीमें एक तरहके सफेद और काले पत्थर बहुत हैं। आगेकी तरफसे १ नदी आकर वहाँ कोशलामें मिल गई है। काठगुदाम जानेवाले लोग उसी नदीके सन्मुख उसके दहिने किनारे होकर आगे चलते हैं। खैरनासे आगे गाड़ीवाली सड़क पर चलना होता है। आगेकी ओरसे तार आकर रानीखेत और अल्मोड़ेको गया है।

चौमोहानी सड़क–खैरनासे $\frac{1}{2}$ मील आगे १ मोदी और १ पलानी १$\frac{3}{8}$ मील आगे गरमपानी चट्टी पर ३ मोदी, पांच छः पलानी और झरना; २$\frac{1}{2}$ मील आगे रामगढ़ चट्टी पर १ मोदी २ पलानी और नदी पर १२० फीट लम्बा कैंचीदार पुल, ३ मील आगे ऊपर डाकबङ्गला और नीचे १ दूकान, १ झरना और १ झरना हौज और ३$\frac{1}{2}$ मील आगे चौमोहानी सड़क है। उससे आगे दहिनी ओर १ सड़क नैनीतालको गई है। उस सड़कसे गाड़ी नहीं जाती है। नैनीताल वहाँसे १२ मील है। चौमोहानी सड़कके पास १ मोदी है; ऊपर चढ़ने पर थोड़ा घूमकर गाड़ीवाली सड़क फिर मिलजाती है। पीछेकी तरफ १ सड़क रामगढ़को गई है।

चौमोहानी सड़कसे $\frac{3}{8}$ मील आगे एक चट्टी पर १ झरनाहौज, २ मोदी, ६ पलानी और २ झरने, २ मील आगे १ झरना, २$\frac{1}{2}$ मील आगे छोटा झरना, ३ मील आगे पानी झरता हुआ पर्वत और ३$\frac{1}{2}$ मील आगे कैंचीचट्टी पर १ मोदी, २ पलानी; खैरना वाली नदी

और १ झरना है। वहाँ यात्री लोग गाड़ी वाली सड़क छोड़कर चढ़ाई उतराईकी सड़कसे ½ मील रास्तेका बचाव करलेते हैं; आगे फिर गाड़ीवाली सड़क मिल जाती है। चौमोहानीसे ४½ मील आगे पानी झरता हुआ पर्वत, ५ मील और ५½ मील आगे बड़ा झरना और छोटा पुल; ६ मील आगे निगलाटचट्टी पर १ मोदी; ३ पलानी, १ झरना और मैदान जगह, ७½ मील आगे छोटा झरना और ८½ मील आगे भिमौलीचट्टी है। खैरनासे भिमौलीचट्टी तक गाड़ीकी सड़क है। खैरनावाली नदी वहाँसे छूट जाती है।

भिमौलीचट्टी—भिमौलीचट्टी पर १२ कोठरी वाली १ धर्मशाला, ३ मोदी, टट्टुओंके टिकनेके लिये कई पलानी, पड़ोंके नीचे बड़ा मैदान, १ टूटी हुई छोटी धर्मशाला, साधुकी समाधि, बहुत छोटा शिव मन्दिर और दो तीन झरने हैं।

भिमौलीमें ५ सड़कोंका मेल है। पहली सड़क पीछे खैरनाको; दूसरी बाईं ओर पीछे की तरफ २५ मील अल्मोड़ेको; तीसरी २२ मीलकी गाड़ीकी सड़क नैनीतालके नीचे होकर काठगोदामको, चौथी चढ़ाव उतारकी ७ मीलकी सड़क नैनीतालको और ५ वीं चढ़ाव उतारकी सड़क भीमताल होकर काठगोदामको गई है।

नैनीताल।

भिमौलीचट्टीसे ७ मील और काठगोदामसे भीमताल छोड़कर सीधी सड़कसे १२ मील कमाऊँ जिलेमें नैनीताल एक स्वास्थ्य कर स्थान है। भिमौलीचट्टीसे जानेमें करीब २ मील की चढ़ाई पड़ती है। काठगोदामके रेलवे स्टेशनसे २ मील रानीबाग तक देश समतल और रानीबागसे आगे सड़क चढ़ावकी है। काठगोदामसे ९ मील तक टाँगापर और अन्तके ३ मील डण्डीमें या टट्टूपर नैनीताल जाना होता है।

नैनीतालमें पश्चिमोत्तर देशके गवर्नमेंटके रहनेके लिये कोठी बनी हुई है और एक छोटा फौजी स्टेशन है। गर्मीकी ऋतुओंमें पश्चिमोत्तर देशके लेफ्टिनेन्ट गवर्नर और दूसरे बहुतेरे यूरोपियन वहाँ रहते हैं।

नैनीतालकी झील करीब १ मील लम्बी और ५०० गज चौड़ी १२० एकड़के क्षेत्रफलमें फैली है। इसकी सबसे अधिक गहराई ९३ फीट है और इसके सलाबका सतह ६४१० फीट समुद्रके जलसे ऊपर है। कसबा झीलके किनारोंपर पहाड़ियोंके बगलमें बसा हुआ है। झीलके पश्चिमोत्तर प्रधान आबादी है। नैनीतालके पश्चिमोत्तरकी चिनाजी चोटी समुद्रके जलसे ८५६८ फीट और देवपत्थर चोटी ७५८९ फीट ऊँची है। कमाऊँ विभागका बड़ा हाकिम कमिश्नर साहब नैनीतालमें रहता है।

नैनीतालकी मनुष्य-संख्या गर्मीके दिनोंमें बहुत बढ़ जाती है। सन् १८८१ की फरवरीमें मनुष्य-गणनाके समय केवल ६५७६ मनुष्य थे; अर्थात् ५६३९ हिन्दू, ८११ मुसलमान और १२६ क्रुस्तान, किन्तु सन् १८८० के सितम्बरमें खास मनुष्य-गणनाके समय १००५४ मनुष्य थे; अर्थात् ६८६२ हिन्दू, १७४८ मुसलमान, १३२८ यूरोपियन, ५७ देशी क्रुस्तान, ५४ यूरेसियन और ५ दूसरे।

भीमौलीचट्टीसे आगे ¾ मीलपर एक झरना, १¼ मीलपर परसौलीचट्टीपर एक मोदी, १ बड़ी पलानी और १ झरना, १½ मीलपर आगे बंगलाकी सड़क, ३ मील आगेसे मैदान, ४ मील आगे चार पांच पक्के मकान, १ सुन्दर झरना, पहाड़ीके ऊपर बंगले और पुलिसकी

चौकी, आगे खेतके मैदानमें बड़ा झरना, जिसका पानी आगे जाकर भीमतालमें गिरता है और ४½ मील आगे भीमताल है।

भीमताल।

भीमताल करीब १ मील लम्बा और औसतमें ¾ मील चौड़ा है। उसकी सबसे अधिक गहराई ८७ फीट है। तालाबके पूर्व किनारेपर भीमेश्वर शिवका मन्दिर, ३ बँगले, १ सफाखाना और बारह चौदह पक्के मकान हैं। तालाबमें पानी रोकनेकी दीवार और पानी निकलनेके रास्ते बने हैं। तालाबके पश्चिमोत्तर १ दूकान और १ बड़ी पलानी; दक्षिण-पश्चिम १ मोदी, १ पलानी और चारों तरफ सड़क है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—स्कन्दपुराण—(केदारखण्ड, प्रथमभाग, ८१ वाँ अध्याय) एक भीमतीर्थ है, जहाँ पूर्वकालमें भीमने महादेवजीका तप किया था, वहीं भीमेश्वर महादेव स्थित हैं।

नवकुञ्चियाताल—भीमतालसे दो मील पूर्व नवकुञ्चियाताल है। उसमें नव कोने होनेसे उसका नवकुञ्चिया नाम पड़ा है। उसकी लम्बाई लगभग १००० गज, चौड़ाई ७५० गज और सबसे अधिक गहराई १३२ फीट है। उसके अतिरिक्त उस देशमें छोटी बड़ी कई झीलें हैं।

भीमतालसे ३ मील आगे छोटा झरना, २¾ मील आगे और ३½ मील आगे एक एक झरना; ४ मील आगे नवचण्डी चट्टी पर नवचण्डी देवीका छोटा मन्दिर, १६ कोठरी वाली १ धर्मशाला और ३ दूकानें और ५ मील आगे रानीबाग है। भीमतालसे ४ मील तक कड़ी उतराई है।

रानीबाग—रानीबागमें पन्द्रह बीस पक्के मकान, डाँकबँगला और नदी पर लोहेका लटकाऊ पुल है। वहाँ १ नदी नैनीतालकी ओरसे, दूसरी भीमतालसे और तीसरी गोगङ्गा नामक नदी दहिनेसे, आकर मिली है। नदी में एक सरकारी पनचक्की है। बैलगाड़ीकी सड़क जो भिमौलीमें छूटी थी वह वहाँ मिल गई। रानीबागसे पहाड़ छूट जाता है, आगे बराबर जमीन पर चलना होता है।

काठगोदाम।

रानीबागसे २ मील काठगोदामका स्टेशन बाजार है। वहाँ जरूरी कामके दूकानदार और १ छोटी नहर है और एक्के और टमटम वाले बहुत रहते हैं। वहाँसे सड़क द्वारा आगेकी ओर बरेली ६३ मील और पीछे नैनीताल १२मील है। गाड़ीवाली सड़कसे नैनीताल कई मील अधिक है।

काठगोदामसे उत्तर और कुछ पूर्व एक सड़क भोठ; नीति और तपोवन होकर जोशीमठको गई है, जिस द्वारा भोटिये लोग बदरीनाथके देशमें व्यापार करते हैं। और गोरखे लोग काठगोदाममें आकर रेलपर चढ़ते हैं और वहाँ रेल गाड़ीसे उतर कर अपने देशको जाते हैं।

बदरीनाथसे रानीखेत, अल्मोड़ा और नैनीताल छोड़कर काठगोदामका रेलवे स्टेशन १६८ मील है। दश ग्यारह दिनमें यात्री लोग बदरीनाथसे काठगोदाम पहुँच जाते हैं।

काशीपुर ।

काठगोदामसे लगभग २५ मील पश्चिम कुछ दक्षिण और मुरादाबाद शहरसे ३१ मील पूर्वोत्तर देशके कमाऊँ विभागके तराई जिलेमें प्रधान कसबा और तहसीलका सदर स्थान काशीपुर है । काशीपुरसे लगभग १७ मील पश्चिमोत्तर पर्वतके नीचे कमाऊँ जिलेमें चिलिकिया है, जिसको रामनगर भी कहते हैं ।

सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय काशीपुरमें १४७१७ मनुष्य थे, अर्थात् ८३७१ हिन्दू, ६३२५ मुसलमान, ८ जैन, ७ सिक्ख और ६ कृस्तान ।

काशीपुरमें एक पवित्र सरोवर; कई एक देवमन्दिर और एक खैराती अस्पताल है। काशीपुरसे गल्ले दूसरी जगहोंमें भेजे जाते हैं और वहाँ मोटा कपड़ा तैयार होता है । काशीपुरमें एक जमीन्दार राजा है ।

तराईजिला—पश्चिमोत्तर प्रदेशके कमाऊँ विभागमें तराई एक जिला है। जिलेका क्षेत्रफल ९३८ वर्ग मील है । इसके उत्तर कमाऊँ जिला; पूर्व नैपाल राज्य और पीलीभीत जिला, दक्षिण बरैली और मुरादाबाद जिले और रामपुरका राज्य और पश्चिम बिजनौर जिला है । जिलेका प्रधान कसबा काशीपुर है; किन्तु गरमीकी ऋतुओंका सदर स्थान नैनी ताल है । उस जिलेमें लगभग ५०० वर्ग मील भूमि खेतीके योग्य है, जिसमेंसे ३०० वर्ग मीलमें खेती होती है ।

तराईजिला पहाड़ियोंके कदमके साथ साथ लगभग १२ मीलकी चौड़ाईमें ९० मील पूर्वसे पश्चिम तक चला गया है । उस जिलेमें बहुत छोटी छोटी नदियाँ हैं और जंगलोंमें हाथी, बाघ, भालू, तेंदुए, भेड़िया इत्यादि बन जन्तु रहते हैं । तराईका जल वायु खराब है। सन् १८६१ में तराई एक जिला कायम हुआ ।

उस जिलेमें सन् १८९१ की मनुष्य–गणनाके समय २१०८२७ मनुष्य थे; अर्थात् ११५७९७ पुरुष ९५०३० स्त्रियाँ और सन् १८८१ में २०६९९३ मनुष्य थे; अर्थात् १३१९६६ हिन्दू, ७४९८२ मुसलमान ३४ जैन और ११ कृस्तान । जातियोंके खानेमें १८३२० चमार ९०२० कुर्मी, ८७२२ कहार, ७९७१ बनियाँ, ६८९७ ब्राह्मण, ६५६४ माली, ४५०८ लोधी, ४२९५ राजपूत, ३५७२ गड़रिया, २५४० कायस्थ शेषमें दूसरी जातियाँ थीं । जिलेमें काशीपुरके अलावे यशपुर एक बड़ी वस्ती है जिसमें ७०५५ मनुष्य थे ।

हलद्वानी ।

काठगोदामसे ४ मील दक्षिण पश्चिमोत्तर देशके तराई जिलेमें हलद्वानी एक कसबा है । काठगोदामसे हलद्वानीकी ओर चढ़ावका मार्ग है, इसलिये रेल महसूल चारही मीलका ८ आना लगता है । प्रायः सब यात्री दो तीन आने भाड़ा देकर एक्केपर काठगोदामसे हलद्वानी आते हैं । पहाड़ी व्यापारी या साधारण लोग हलद्वानीसे बैलगाड़ी, टट्टू और कन्धोंपर विविध प्रकारकी जिन्स और नमक पहाड़में ले जाते हैं। हलद्वानीमें अधिक मकान दो मंजिले पत्थरके बने हुए हैं और टीन तथा पत्थरके बने हुए हैं और टीन तथा पत्थरके तख्तोंसे छाये गये हैं वहाँ सन् १८९४ ई० की बनी हुई बद्रीगौड़की दो मञ्जिली धर्मशाला है । धर्मशालाके

पास एक अठपहली दिग्गी और एक गुम्बज दार मन्दिर है; मन्दिरके चारोंओर तसमें लगा हुआ मेहरावदार दालान बना है ।

काठगोदामसे लखनऊ भोजपुरा जंक्शन और बरेली होकर २१२ मील और भोजपुरा जंक्शन, पीलीभीत और सीतापुर होकर २४१ मील है । अधिक लोग सीतापुर होकर लखनऊ जाते हैं क्योंकि "रुहेलखण्ड कमाऊँ रेलवे" का महसूल प्रतिमील दोही पाई लगता है । लखनऊसे पूर्व-दक्षिण ८३ मील अयोध्या, २०२ मील बनारस; २०९ मील मुगलसराय जंक्शन और २९६ मील विहियाका रेलवे स्टेशन है मैं विहियामें रेलगाड़ीसे उतरकर उससे १२ मील उत्तर गङ्गाके दूसरे पार अपने जन्म स्थान चरजपुरा चला आया ।

साधुचरण प्रसाद.

॥ भारत-भ्रमण पंचमखण्ड समाप्त ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस-बम्बई.